राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

(द्वितीय भाग)

परम गुरु हुज़ूर महाराज

— प्रकाशक —

राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़

राधास्वामी संवत् १३२

सन् १९५१ ई०

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

निवेदन

राधास्वामी मत के दूसरे पूज्य आचार्य परम गुरु हुज़ूर महाराज थे। आपने अब से पचास वर्ष नौ महीना पहले यानी ८ दिसम्बर सन् १८९८ ई० को गुप्त होने की मौज फ़रमाई।

प्रथम आचार्य परम पुरुष पूरन धनी स्वामीजी महाराज की अनन्य भक्ति जो आपने की और उनके चरण कमलों का अपार प्रेम जो आपके हृदय में लहराया उसे आपने निहायत रसीले और मनोहर शब्दों में प्रकट किया था। यह अनमोल शब्द प्रेमबानी के रूप में प्रकाशित किए गए।

सतसंगी भाइयों के हृदय में इन शब्दों के लिए विशेष आदर व प्रेम है। इस कारण राधास्वामी सतसंग सभा ने कुछ समय पहले प्रेमबानी के प्रकाशित करने का प्रबंध किया था और इस संबंध में प्रेमबानी का प्रथम भाग पिछले अगस्त में प्रकाशित होगया था। अब प्रेमबानी का द्वितीय भाग प्रकाशित किया जाता है। आशा है प्रेमीजन इससे लाभ उठाएँगे।

दयालबाग़
१९ सितम्बर १९४९ ई०

प्रकाशक

परम गुरु हुज़ूर महाराज

राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

सूचीपत्र

शब्द		पृष्ठ
गुरू मोहिं दीना भेद अपारी	...	८
गुरू सँग चलना घर की बाट	...	३८४
गुरू सँग प्रीति करो मेरे बीर	...	३८५
च		
चढ़ सहसकँवल पद परस हरी	...	२६६
चरन गह जग से हुई न्यारी	...	३५२
चरन गुरु क्यों नहि धारे प्रीत	...	३५३
चरन गुरु तन मन क्यों नहिं देत	...	३७१
चरन गुरु दिन दिन बढ़ती प्रीत	...	३४४
चरन गुरु पकड़े अब मजबूत	...	६५
चरन गुरु मनुआँ काहे न दीन	...	३७२
चरन गुरु मनुआँ हो जावो दीन	...	३७५
चरन गुरु सेवा धार रहा	...	१६
चरन गुरु हिये अनुराग सम्हार	...	१५
चरन गुरु हिये में रही बसाय	...	३७४
चरन गुरु हिरदे आन बसाय	...	७
चरन गुरु हिरदे धार रहा	...	६
चलो घर गुरु सग बाँध कमर	...	३६६
चलो चढ़ो री सुरत सुन सुन्न की धुन	...	२८६
चेत कर क्यों न चलो गुरु साथ	...	३५४
छ		
छबीले छबि लगे तोरी प्यारी	...	४०५
छोड़ चल सजनी माया धाम	...	३८५
ज		
जगत तोहि क्यों लागा प्यारा	...	३५२
जगत भय लज्या तज देव मीत	...	३८१
जगत में घेरा डाला काल	...	३१
जगत सँग मनुआँ सदा मलीन	...	३७२
जाग री मेरी प्यारी सुरतिया	...	३३८
जाँच कर त्यागो भोग असार	...	३८२
जो सच्चा परमारथी तिसको यही	...	६१
ड		
डगर मेरी रोक रहा मन जार	...	३५०
त		
तन मन धन से भक्ति करो री	...	४०४
त्याग चल सजनी माया देस	...	३४८

शब्द		पृष्ठ
द		
दयाला मोहिं लीजे तारी	...	४०६
दरस गुरु निस दिन करना सही	...	३७५
दरस गुरु भाग से मिलिया	...	४११
दरस गुरु मनुआँ क्यों न खिले	...	३७०
दरस गुरु हियरे उठत उमंग	...	३४५
दरस गुरु हिरदे धारा नेम	...	२२
दीन दिल आई सुरत गुरु पास	...	३६३
दीन दिल हिये अनुराग सम्हार	...	५७
द्वार घट झाँको बिरह जगाय	...	३९०
ध		
धार नर देह किया क्या आय	...	३७६
ध्यान गुरु हिये में धरना जरूर	..	३७६
ध्यान धर गुरु चरनन चित लाय	...	३९५
न		
नाम रँग घट में लागा री	...	४०३
निज घर अपने चाल री मेरी प्यारी	...	३४०
प		
पकड़ गुरु चरन चलो भौ पार	...	३४९
परख कर छोड़ो माया धार	...	३८३
परम गुरु राधास्वामी दातारे	...	४०
पियारे मेरे सतगुरु दाता	...	४०७
प्रीति गुरु चरनन काहे न लाय	...	३६९
प्रीति गुरु छाय रही तन मे	...	४
प्रीति नवीन हिये अब जागी	...	३८
प्रीति सँग गहो गुरू सरना	..	३८८
प्रीति सँग गुरु सेवा धारो	...	३८६
प्रेम प्रकाशा सूरत जागी	...	१३
प्रेम बिन चले न घर की चाल	...	३८८
प्रेम सँग आरत करत रहूँ	...	६२
ब		
बचन गुरु मनुआँ लो आज मान	...	३७८
बचन सतगुरु सुने भारी	...	४१२
बचन सुन बढ़ा हिये अनुराग	...	४७
बढ़त सतसंग अब दिन दिन	...	४१५
बाल समान चरन गुरु आई	...	५६

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

द्वितीय भाग

॥ आरत बानी-भाग तीसरा ॥

॥ शब्द १ ॥

हे राधास्वामी सतगुरू दयारा ।
गत तुम्हरी अति अगम अपारा ।
मोहिं निरबल को लीन उबारा ॥ १ ॥

माया भाव हटाया सकला[1] ।
दरशन को मन तड़पत बिकला[2] ।
खैंच चरन में दिया सहारा ॥ २ ॥

गुरु संगत में लीन मिलाई ।
सुरत शब्द दिया भेद सुहाई[3] ।
साध संग मोहिं लीन सुधारा ॥ ३ ॥

१—सभी । २—व्याकुल । ३—सुहावना ।

राधास्वामी मोहि अति दीन लखा री।
दिन दिन मेरी दया बिचारी।
मेहर दया से लीन सँवारा ॥ ४ ॥
सतसँग करत हुआ मन चूरा[1]।
करम भरम सब कीने दूरा।
काल बिघन सब दीन निकारा ॥ ५ ॥
सेवा करत प्रीति नई जागी।
सुरत निरत गुरु चरनन पागी[2]।
गुरु स्वरूप लागा अति प्यारा ॥ ६ ॥
गुरु छबि देख हुई मतवारी।
तन मन धन चरनन पर वारी।
दरशन पर जाऊँ बलिहारा ॥ ७ ॥
गुरु की दया कहूँ कस गाई।
बालक सम मोहि गोद बिठाई।
औगुन मेरे कुछ न बिचारा ॥ ८ ॥
गुरु परतीत हिये में छाई।
दिन दिन होती प्रीति सवाई[3]।
राधास्वामी सरन अब मिला अधारा ॥ ९ ॥

१—दीन अधीन। २—लीन। ३—अधिक।

जग ब्योहार लगा अब फीका ।
तज जग भोग प्रेम रस चीखा ।
झूठ लगा सब काल पसारा ॥ १० ॥
सुरत शब्द अभ्यास कराई ।
गुरु बल सूरत अधर[1] चढ़ाई ।
निरखी[2] घट में अजब बहारा ॥ ११ ॥
राधास्वामी मेहर कहूँ मैं कैसे ।
सहजहि मोहिं उबारा जैसे ।
छिन छिन करती शुकर पुकारा ॥ १२ ॥
छिन छिन हियरे उमँग बढ़ावत ।
कर सिंगार करूँ गुरु आरत[3] ।
नइ नइ सामाँ कर बिस्तारा ॥ १३ ॥
भूषन बस्तर अजब बनाये ।
कर सनमान[4] गुरू पहिनाये ।
अचरज सोभा निरख निहारा ॥ १४ ॥
अनेक पदारथ किये तइयारा ।
गुरु आगे धरे साज[5] सँवारा ।
सोभा बाढ़ी गुरु दरबारा ॥ १५ ॥

१—अंतर में । २—देखी । ३—थाल में जलता हुआ दीपक रखकर इष्टदेव के सन्मुख घुमाने की क्रिया को 'आरती' या 'आरत' कहते हैं । सतसंग में सतगुरु से दृष्टि जोड़ कर ध्यान करने के साधन के लिए और चित्त को सब तरफ़ से हटा कर सतगुरु के चरणों में लगाने के लिए या उनकी भक्ति करने के लिए भी 'आरती' शब्द का प्रयोग करते हैं । 'आरती' के समय पढ़े जाने वाले शब्द को भी 'आरती' कहते हैं । । ४—सन्मान, आदर । ५—सजाकर ।

बिजन अनेक थाल भर लाई ।
सतगुरू सन्मुख भोग धराई ।
मान लिया गुरू कर अति प्यारा ॥ १६ ॥

हंस हंसिनी जुड़ मिल आये ।
देख समाँ[1] चित में हरखाये ।
सब मिल गावें गुरू गुन सारा ॥ १७ ॥

आरत धूम मची अब भारी ।
सतगुरू चरनन आरत धारी ।
गगन मंडल में बजा नगारा ॥ १८ ॥

राधास्वामी दया सेव[2] बन आई ।
भाग आपना कहा[3] सराही[4] ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपारा ॥ १९ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रीति गुरू छाय रही तन में ।
ध्यान गुरू लाय रही मन में ॥१॥

गाय रही राधास्वामी गुन छिन[5] में ।
सुमिर रही राधास्वामी पल खिन[6] में ॥२॥

परख[7] रही मेहर गुरू जिये[8] में ।
सुनत रही राधास्वामी धुन हिये में ॥३॥

१—अवसर । २—सेवा । ३—क्या । ४—प्रशंसा करूँ । ५—क्षण, लम्हाँ ।
६—क्षण । ७—पहचान । ८—हृदय ।

दया की गुरु ने कीनी दात[1] ।

शब्द रस लेत सुरत दिन रात ॥४॥

सरस[2] धुन घट में बाज रही ।

त्याग दई मन से मान मई[3] ॥५॥

सुरत मन चालत निज घर बाट[4] ।

अहँग[5] मम छोड़ दिया निज घाट ॥६॥

सुनत रही घंटा संख पुकार ।

झाँक रही सूरत जोत अकार[6] ॥७॥

बंक धस निरखा त्रिकुटी धाम ।

समझ लई महिमा मैं गुरु नाम ॥८॥

दसम दर पहुँची पाट[7] खुलाय ।

अमी रस छिन छिन पियत अघाय[8] ॥९॥

महासुन पार गई गुरु लार[9] ।

सुनत रही गुप्त शब्द धुन चार ॥१०॥

भँवर गढ़ कीना जाय निवास ।

करत धुन मुरली संग बिलास ॥११॥

अमरपुर जाय सुनी धुन बीन ।

मगन हुई सतगुरु लीला चीन[10] ॥१२॥

अलखपुर पहुँची लगन बढ़ाय ।

पुरुष का दरशन अद्भुत पाय ॥१३॥

१—बख़्शिश । २—रसीली । ३—मान मई—अहंकार । ४—रास्ता । ५—अहंकार । ६—स्वरूप । ७—द्वार । ८—तृप्त होकर । ९—साथ । १०—पहचान कर ।

अगमपुर निरखा जाय समाज।
करत जहाँ अगम पुरुष कुल[1] राज ॥१४॥
परे तिस राधास्वामी धाम निहार।
उमँग कर आई आरत[2] धार ॥१५॥
चरन में दिये वार तन मन।
हुए राधास्वामी गुरु परसन ॥१६॥
मेहर से लीना अंग लगाय।
कहूँ क्या आनँद बरना न जाय ॥१७॥

॥ शब्द ३ ॥

चरन गुरु हिरदे धार रहा।
दया राधास्वामी माँग रहा ॥ १ ॥
नित्त गुरु दरशन करता आय।
हिये में छिन छिन प्रीति बढ़ाय ॥ २ ॥
उमँग कर परशादी लेता।
चरन गुरु हिरदे में सेता[3] ॥ ३ ॥
प्रेम सँग गुरु बानी गाता।
नाम राधास्वामी नित ध्याता ॥ ४ ॥
सरन राधास्वामी दृढ़[4] करता।
हिये में दृढ़ निश्चय धरता ॥ ५ ॥

१—सब पर। २—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। ३—ध्याता। ४—मज़बूत।

गावता गुरु गुन उमँग उमंग ।
प्रीति से करता सतगुरु संग ॥ ६ ॥
आरती गाई तन मन वार ।
मेहर राधास्वामी पाई सार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

चरन गुरु हिरदे आन बसाय ।
सरन में निस दिन उमँगत धाय ॥ १ ॥
गुरू से हरदम करता प्यार ।
बचन उन धरता हिये मँझार[1] ॥ २ ॥
आरती[2] गावत उमँग उमंग ।
गुरू का करता निस दिन संग ॥ ३ ॥
मगन होय नये नये बस्तर लाय ।
गुरू को देता आप पहिनाय ॥ ४ ॥
गुरू की सोभा निरख निहार ।
हिये में नित्त बढ़ाता प्यार ॥ ५ ॥
गुरू सँग खेलत दिन और रात ।
निरख छबि गुरु के बल बल जात ॥ ६ ॥
उमँग कर लेता गुरु परशाद ।
चरन राधास्वामी रखता याद ॥ ७ ॥

१—मे । २—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

॥ शब्द ५ ॥

गुरू मोहिं दीना भेद अपारी ।
शब्द धुन सुन हुआ आनँद भारी ॥ १ ॥
सुरत की लागी घट में ताड़ी[1] ।
धुनन की होत जहाँ झनकारी ॥ २ ॥
चरन में निस दिन प्रेम बढ़ा री ।
मेहर गुरु कीनी मनुआँ हारी ॥ ३ ॥
थकित[2] होय बैठी माया नारी ।
सुरत रही पियत अमी रस सारी ॥ ४ ॥
छोड़ नभ चढ़ गई गगन अटारी ।
चंद्र लख सेत सूर निरखा री ॥ ५ ॥
अमरपुर दर्शन पुरुष निहारी ।
सुनत रही मधुर बीन धुन सारी ॥ ६ ॥
अलख और अगम प्यार कीना री ।
हुई मैं राधास्वामी चरन दुलारी ॥ ७ ॥
संत मोपै मेहर करी अति भारी ।
दई मोहिं परशादी कर प्यारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

आरती[3] लाया सेवक पूर ।
चरन गुरु प्रेम रहा भरपूर ॥ १ ॥

१—ध्यान । २—हार कर । ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

हिये का लीना थाल सजाय ।
प्रीति की लीनी जोत जगाय ॥ २ ॥
आरती गावत सहित उमंग ।
सुरत मन भींज रहे गुरु रंग ॥ ३ ॥
बजत रहा घट अनहद बाजा ।
संख और घंटा धुन साजा ॥ ४ ॥
सुनत रहा गरज मेघ[१] मिरदंग ।
सुन्न में बाजी धुन सारंग ॥ ५ ॥
मधुर धुन मुरली बाज रही ।
अमरपुर बीना गाज रही[२] ॥ ६ ॥
मेहर गुरु दीना यह साजा[३] ।
सरन राधास्वामी पाय राजा[४] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मगन मन गुरु सन्मुख आया ।
आरती[५] प्रेम सहित लाया ॥ १ ॥
पदारथ नये नये हित[६] से लाय ।
धरे गुरु सन्मुख थाल भराय ॥ २ ॥
सजा गुरु भक्ती की थाली ।
प्रीति गुरु जोत लई बाली[७] ॥ ३ ॥

१—बादल । २—गाज रही—जोर से बज रही है । ३—सामान । ४—सुशोभित हुआ । ५—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ६—प्रेम । ७—जला ।

आरती हंसन सँग गाता ।
उमँग अब नई नई दिखलाता ॥ ४ ॥
धूम[1] आरत की हुई भारी ।
स्वामी ने मेहर करी न्यारी[2] ॥ ५ ॥
शब्द धुन घट में डाला शोर ।
घटा अब काल करम का ज़ोर ॥ ६ ॥
मेहर सतगुरु परशादी पाय ।
चरन राधास्वामी परसे[3] आय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सरन गुरु हुआ मोहि आधार ।
चरन में आई धर कर प्यार ॥ १ ॥
करूँ नित दर्शन दृष्टि सम्हार ।
पिऊँ मैं चरन अमी रस सार ॥ २ ॥
करूँ गुरु आरत नित्त नवीन[4] ।
रहूँ गुरु चरनन दीन अधीन ॥ ३ ॥
हंस जुड़ मिल आरत गाते ।
निरख गुरु छबि हिये मगनाते[5] ॥ ४ ॥
बजत घट बाजे घंटा संख ।
सुरत धस[6] चढ़ती नाली बंक ॥ ५ ॥

१—धूमधाम । २—अद्भुत । ३—छुए । ४—नई । ५—प्रसन्न होते । ६—घुस कर ।

गगन में धुन मिरदंग सुनाय।
दसम दर[1] चन्द्र रूप दरसाय ॥ ६ ॥
भँवर में सेत सूर परकास।
करूँ धुन मुरली संग बिलास ॥ ७ ॥
अमरपुर होय अलख लखिया[2]।
परे चढ़ दरस अगम तकिया[2] ॥ ८ ॥
वहाँ से राधास्वामी धाम गई।
उमँग कर राधास्वामी चरन पई[3] ॥ ९ ॥

॥ शब्द ९ ॥

हुआ मन गुरु चरनन आधीन।
लखी गुरु मूरत घट में चीन[4] ॥ १ ॥
भरोसा गुरु चरनन में लाय।
प्रेम गुरु छिन छिन रहूँ जगाय ॥ २ ॥
टेक गुरु धारी कर बिस्वास।
मगन होय करता चरन निवास ॥ ३ ॥
जपत रहूँ निस दिन राधास्वामी नाम।
धार रहूँ हिये में भक्ति अकाम[5] ॥ ४ ॥
करें गुरु सब बिधि मेरा काज।
देयँ मोहि बख़्शिश भक्ती राज ॥ ५ ॥

१—द्वार। २—देखा। ३—गिरी। ४—पहचान कर। ५—निष्काम, वासना रहित।

उमँग मन गुरु सेवा में लाग ।
बढ़ावत छिन छिन अपना भाग ॥ ६ ॥
मेरे मन चिन्ता यही समाय ।
लेउँ मैं किस बिधि गुरू रिझाय ॥ ७ ॥
दीन अँग माँगूँ गुरु की मेहर ।
हटाऊँ मन की सब ही लहर ॥ ८ ॥
चरन में चित नित जोड़ रहूँ ।
शब्द धुन सुन नभ फोड़ चढ़ूँ ॥ ९ ॥
निरख फिर घट में जोत उजार ।
गगन गुरु धारूँ हिये में प्यार ॥ १० ॥
सुन्न चढ़ लखा भँवर अस्थान ।
लगा धुन मुरली से अब ध्यान ॥ ११ ॥
अमरपुर किये सतगुरु दर्शन ।
वार रही[१] तन मन गुरु चरनन ॥ १२ ॥
अलख गुरु लीना चरन मिलाय ।
अगम गुरु मेहर करी अधिकाय ॥ १३ ॥
दया राधास्वामी की गहिरी ।
सुरत जाय उन चरनन ठहरी ॥ १४ ॥
परम पद संतन का यह धाम ।
उठत जहाँ छिन २ धुन निज नाम ॥ १५ ॥

१—वार रही—निछावर कर रही ।

॥ शब्द १० ॥

प्रेम प्रकाशा सूरत जागी।
शब्द गुरू के चरनन लागी ॥ १ ॥
सील छिमा चित आय समाई।
काम क्रोध अब गये नसाई[1] ॥ २ ॥
सतसँग में मन चित्त खिलाना।
दरस अमी रस नित्त पिलाना ॥ ३ ॥
मन हुआ लीन गुरू चरनन में।
सुरत लगी अब जाय धुनन में ॥ ४ ॥
घट भीतर अब देख उजारी[2]।
तन मन की गई सुद्ध बिसारी ॥ ५ ॥
जोत निरख फिर देखा सूर[3]।
सारँग सुनत हुआ मन चूर[4] ॥ ६ ॥
मुरली धुन चढ़ गुफा बजाई।
अमर लोक सत शब्द सुनाई ॥ ७ ॥
अलख अगम चढ़ पहुँची छिन में।
रली[5] जाय राधास्वामी चरनन में ॥ ८ ॥
वहाँ आरती प्रेम सिंगारी।
राधास्वामी दया करी कर प्यारी ॥९॥

१—गये नसाई—नष्ट हो गए। २—प्रकाश। ३—सूर्य त्रिकुटी का। ४—बलहीन। ५—मिल गई।

॥ शब्द ११ ॥

भाग जगे गुरु चरनन आई ।
राधास्वामी संगत सेवा पाई ॥ १ ॥
दई जनाय गुरू हितकारी ।
परमारथ की महिमा भारी ॥ २ ॥
दिन दिन प्रीति नवीन जगाता ।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाता ॥३॥
सतसँगियन सँग प्रीति बढ़ाता ।
गुरु प्रसन्नता नित्त कमाता ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का पाया भेद ।
जनम जनम के मिट गये खेद[१] ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम हिये बिच धारा ।
करम भरम का कूड़ा झाड़ा[२] ॥ ६ ॥
गुरु परतीत पकाऊँ दिन दिन ।
राधास्वामी प्रेम जगाऊँ छिन छिन ॥ ७ ॥
जगत भाव सबही तज डारूँ ।
उमँग सहित गुरु आरत[३] धारूँ ॥ ८ ॥
बिनय सुनो गुरु दया बिचारी ।
सतसंगत में रहूँ सदा री ॥ ९ ॥

१—शोक, कष्ट । २—हटा दिया । ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

निस दिन दरस गुरू का पाऊँ ।
चरनामृत परशादी खाऊँ ॥ १० ॥
नित गुन गाऊँ चरन धियाऊँ ।
राधास्वामी राधास्वामी सदा मनाऊँ ॥ ११ ॥

॥ शब्द १२ ॥

चरन गुरु हिये अनुराग[1] सम्हार ।
सुरत प्यारी आई गुरु दरबार ॥ १ ॥
जगत का भय और भाव[2] निकार ।
बचन गुरु सुनती चित्त सम्हार ॥ २ ॥
दरस कर होत मगन[3] हर बार ।
ताक[4] गुरु नैन बढ़ावत प्यार ॥ ३ ॥
गुरु से ले अचरज उपदेश ।
तजत अब छिन छिन माया देश ॥ ४ ॥
अधर घर प्रीति लगी सारी ।
लगी कृत[5] फीकी संसारी ॥ ५ ॥
शब्द धुन सुनत हुआ मन चूर ।
प्रेम गुरु रहा हृदे[6] में पूर[7] ॥ ६ ॥
जगत के दुख सुख बिसरत जायँ ।
चरन गुरु धारत हिरदे माहिं ॥ ७ ॥

१—प्रेम । २—श्रद्धा, प्रेम । ३—प्रसन्न । ४—देखकर । ५—काररवाई । ६—हृदय । ७—भरा हुआ ।

कहूँ क्या महिमा गुरु सतसंग ।
उलट कर फेरे[1] मन के अंग ॥ ८ ॥
पड़ा था भोगन में बीमार ।
हुआ मन चरनन रस आधार ॥ ९ ॥
भरमता जग में इच्छा लार[2] ।
उलट कर धारा गुरु रँग सार ॥ १० ॥
पिरेमी जन लागें प्यारे ।
संग उन गुरु सेवा धारे ॥ ११ ॥
समझ में आई सतसँग रीत ।
जगी गुरु चरनन नई परतीत ॥ १२ ॥
निरख गुरु संगत की लीला ।
भरम तज हुए मन चित सीला[3] ॥ १३ ॥
गुरू का सतसँग नित चाहूँ ।
प्रीति नई हिये में उमगाऊँ ॥ १४ ॥
मेहर मोपै कीजे दीन दयार ।
रहूँ नित राधास्वामी चरनन लार[2] ॥१५॥

॥ शब्द १३ ॥

चरन गुरु सेवा धार रहा ।
बिघन मन सहज निकार रहा ॥ १ ॥

१—बदल दिए । २ —साथ । ३—प्रेम पूर्ण ।

पड़ा था सतसँग से मैं दूर ।
भाग से पाया दरस हज़ूर ॥ २ ॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय ।
कुटँब सब लीना चरन लगाय ॥ ३ ॥
पिरेमी जन के दर्शन पाय ।
मगन[1] होय करता सेवा धाय ॥ ४ ॥
देख नित गुरु सतसंग बिलास ।
उमँग मन चाहत चरन निवास ॥ ५ ॥
चित्त में धारूँ गुरु उपदेस ।
सुनत रहूँ महिमा सतगुरु देस ॥ ६ ॥
नित्त गुरु बानी पढ़त रहूँ ।
नाम राधास्वामी जपत रहूँ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत पियारी उमँगत आई ।
राधास्वामी चरनन सीस[2] नवाई[3] ॥ १ ॥
सतसँग की अभिलाख बढ़ाई ।
राधास्वामी नाम जपत सुख पाई ॥ २ ॥
नित गुरु दरशन धावत[4] करती ।
रूप सोहावन हिये में धरती ॥ ३ ॥

१—प्रसन्न । २—सिर । ३—झुकाया । ४—दौड़ दौड़ कर ।

आरत[1] गावत होत अनंदा ।
करम भरम का काटा फंदा ॥ ४ ॥
सतसँगियन से करती मेल ।
मन इंद्री सँग तजती केल[2] ॥ ५ ॥
उमँग बढ़ावत प्रेम जगावत ।
आरत बानी नित नित गावत ॥ ६ ॥
नित गुन गावत जागे भाग ।
राधास्वामी चरन सुरत रही लाग ॥ ७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सतगुरु चरन प्रीति भई पोढ़ा[3] ।
लाय रही अब सूरत डोरा[4] ॥ १ ॥
नित्त बिलास नवीन निरखती ।
मेहर दया घट माहिं परखती ॥ २ ॥
मन और सूरत अधर सरकते[5] ।
शब्द अमी रस पाय फड़कते ॥ ३ ॥
गुरु दयाल की दया निहारत ।
छिन छिन जग भय भाव बिसारत ॥ ४ ॥
घंटा संख सुनत मगनानी ।
त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप दिखानी ॥ ५ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । २—क्रीड़ा, खेल । ३—पक्की । ४—लाय रही डोरा—संबंध जोड़े हुए है । ५—जाते ।

सुन में जाय किये अश्नान ।
हंसन रूप देख हरखान ॥ ६ ॥
गुफा परे जाय सुनी बीन धुन ।
अलख अगम दरशन किया पुन पुन[1] ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम गई पुन धाई[2] ।
मेहर हुई सुत चरन समाई ॥ ८ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सतगुरु चरन अनुराग ।
पिरेमन हिये धर आई ॥ १ ॥
जग भय लज्या त्याग ।
सुरत गुरु चरनन धाई ॥ २ ॥
जगा मेरा अचरज भाग ।
मेहर गुरु करी है बनाई ॥ ३ ॥
जगत भोग और राग[3] ।
तजत मन सोच न लाई ॥ ४ ॥
सूरत छिन छिन जाग ।
शब्द सँग अधर चढ़ाई ॥ ५ ॥
सुन घट धुन और राग[4] ।
सुरत मन अति हरखाई ॥ ६ ॥

१—बार बार । २—दौड़ती हुई । ३—मोह । ४—बाजा ।

निरखत नभ काला नाग ।
गुरू बल मार गिराई ॥ ७ ॥
छूट गई संगत मन काग[1] ।
हंस सँग मेल मिलाई ॥ ८ ॥
अब मिट गए कल मल[2] दाग़ ।
मेहर गुरु कीन सफ़ाई ॥ ९ ॥
गुरु दीना शब्द सोहाग ।
अधर पद रहूँ लौ[3] लाई ॥ १० ॥
राधास्वामी आरत धार ।
प्रेम से निस दिन गाई ॥ ११ ॥

॥ शब्द १७ ॥

अचरज लीला देख मगन मन ।
उमँग उमँग करती गुरु दरशन ॥ १ ॥
हरख हरख गावत गुरु बानी ।
परख परख गुरु मेहर निशानी ॥ २ ॥
नित नित सुनती अनहद तूर[4] ।
खटपट मन की करती दूर ॥ ३ ॥
झटपट सुरत अधर को जाती ।
लटपट धुन सुन माहिं समाती ॥ ४ ॥

१—कौआ । २—कल मल—काल का मैल । ३—लगन । ४—बाजा ।

चमन[1] चमन फुलवार दिखानी।
बाग़ बाग़ हिये माँहि खिलानी ॥ ५ ॥
सुरत शब्द सँग करती मेला।
त्रिकुटी धाम करत नित केला ॥ ६ ॥
गुरू के रंग रँगी सुत प्यारी।
आगे चढ़ सत शब्द सम्हारी ॥ ७ ॥
अलख अगम के चढ़ गई पार।
राधास्वामी चरन किया दीदार[2] ॥ ८ ॥
राधास्वामी मेहर पाई मैं आज।
सहज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ९ ॥

॥ शब्द १८ ॥

आज हंसन का जुड़ा समाज।
पिरेमी लाया आरत[3] साज ॥ १ ॥
बिरह की थाली कर धारी।
जुगत की जोत जगी न्यारी ॥ २ ॥
भाव[4] के बिजन[5] लिए सजाय।
प्रीति के बस्तर गुरू पहिनाय ॥ ३ ॥
उमँग उठी हिरदे में भारी।
प्रेम सँग आरत गुरू धारी ॥ ४ ॥

१—बाग़। २—दर्शन। ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। ४—श्रद्धा। ५—व्यंजन, तरह तरह के भोजन।

बना आरत का अद्भुत साज ।
दया गुरु शब्द रहा घट गाज[१] ॥ ५ ॥
होत अस घट में धुन बन बन ।
धन्य राधास्वामी गुरु धन धन ॥ ६ ॥
सुनी फिर और धुन घन घन[२] ।
मगन होय त्रिकुटी धाया मन ॥ ७ ॥
बोल रही जहाँ निज धुन मिरदंग ।
सुन्न चढ़ जागी[३] धुन सारंग ॥ ८ ॥
भँवर में मुरली रही पुकार ।
अमरपुर सुनी बीन धुन सार ॥ ९ ॥
अलखपुर सुनी गुप्त धुन जाय ।
अगमपुर दरस अगम पुर्ष पाय ॥ १० ॥
उमँग कर पहुँची राधास्वामी धाम ।
परम गुरु अकह अपार अनाम ॥ ११ ॥
दरस कर सूरत पाई शांत ।
भीड़ तज[४] होगई अब एकांत ॥ १२ ॥

॥ शब्द १९ ॥

दरस गुरु हिरदे धारा नेम[५] ।
जगाती निस दिन घट में प्रेम ॥ १ ॥

१—रहा गाज—ज़ोर से हो रहा है । २—घन घन—घंटे की । ३- प्रकट हो गई । ४—छोड़ कर । ५—नियम, क़ायदा ।

भोग ले नित सन्मुख आती।
उमँग कर परशादी खाती ॥ २ ॥
देख गुरु द्वारे नया बिलास।
हाज़री देती निस[1] और बास[2] ॥ ३ ॥
पिरेमी आवें नित गुरु पास।
देख उन मन में होत हुलास ॥ ४ ॥
बढ़त नित सतसँग की महिमा।
तरत[3] सब जिव लग गुरु चरना ॥ ५ ॥
शब्द ने घट घट डाली धूम।
सुरत लगी चढ़ने इत[4] से घूम ॥ ६ ॥
देखती घट में बिमल बहार।
डारती तन मन गुरु पर वार ॥ ७ ॥
रहें सब राधास्वामी के गुन गाय।
सुरत से राधास्वामी नाम जपाय॥ ८ ॥
अमल[5] रस परमारथ पीते।
गुरू बल मन इंद्री जीते ॥ ९ ॥
मेहर राधास्वामी करी बनाय।
दिया सब हंसन पार लगाय ॥ १० ॥

१—रात। २—बासर, दिन। ३—पार होते हैं। ४—इधर। ५—निर्मल।

॥ शब्द २० ॥

सरन गुरु सतसँग जिन लीनी ।
हुए मन सुरत चरन लीनी ॥ १ ॥
कहें सब महिमा सतसँग गाय ।
भेद निज वहाँ का कोइ नहिं पाय ॥ २ ॥
संत की महिमा जहाँ होई ।
भेद निज घर का कहें सोई ॥ ३॥
शब्द का मारग जो गावें ।
सुरत का रस्ता बतलावें ॥ ४ ॥
प्रेम गुरु देवें हिये दृढ़ाय ।
सरन गुरु महिमा कहें सुनाय ॥ ५ ॥
सोई सतसँग सच्चा जानो ।
जीव का कारज वहाँ मानो ॥ ६ ॥
मेहर से सतसँग अस मिलिया ।
सुरत मन गुरु चरनन रलिया[1] ॥ ७ ॥
सराहूँ भाग अपना दम दम ।
नाम गुरु जपत रहूँ हरदम ॥ ८ ॥
कहूँ क्या मन मोहिं धोखा दीन ।
भोग रस इंद्री छिन छिन लीन ॥ ९ ॥

१—लीन हो गए ।

भूल कर अति दुख मैं पाया ।
किए पर अपने पछताया ॥ १० ॥
इसी से रहता नित मुरझाय ।
पुकारूँ गुरु चरनन में जाय ॥ ११ ॥
मेहर मोपै कीजे गुरू दयाल ।
काट दो माया का जंजाल ॥ १२ ॥
शब्द रस पीवे मन होय लीन ।
चरन में गुरु के दीन अधीन ॥ १३ ॥
रहूँ नित आरत[1] गुरु की गाय ।
सरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ १४ ॥
दया से कीजे कारज पूर ।
रहूँ नित चरन कँवल की धूर ॥ १५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

सुरत प्यारी गुरू मिल आई जाग[2] ।
बढ़त अब दिन दिन घट अनुराग[3] ॥ १ ॥
प्रेम का राधास्वामी दीना साज[4] ।
छोड़ दिया जग का भय और लाज ॥ २ ॥
सुरत और शब्द मिला उपदेश ।
धार रही सूरत हंसा भेस[5] ॥ ३ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । २—आई जाग—जग गई । ३—प्रेम ।
४—सामान । ५—वेश, रूप ।

कुमत[1] अब घट से दीनी टार।
सुमत का लीना सहज बिचार ॥ ४ ॥
करत रहूँ नित अभ्यास सम्हार।
निरख रही गुरु की मेहर अपार ॥ ५ ॥
अगम गत राधास्वामी की जानी।
जगत जिव क्योंकर पहिचानी ॥ ६ ॥
शब्द की कीनी घट पहिचान।
सुरत मन धुन सँग सहज मिलान ॥ ७ ॥
नाम की महिमा जानी सार।
जपत रहूँ राधास्वामी नाम अगार[2] ॥८॥
संत मत बिन नहिं जीव उबार।
नहीं कोई पावे निज घरबार ॥ ९ ॥
अटक रहे सब जिव करमन में।
भटक रहे अगिनत[3] भरमन में ॥ १० ॥
लीक[4] में बँध रहे अज्ञानी।
टेक पिछलों की मन ठानी ॥ ११ ॥
बिना सतगुरु और बिन सतसंग।
छुटे नहिं कबही माया रंग ॥ १२ ॥
भाग मेरा धुर का जागा आय।
मिला मैं राधास्वामी संगत जाय ॥ १३ ॥

१—दुर्बुद्धि। २—सब से पहले का। ३—अनगिनत, अनेक। ४—टेक।

पाय निज भेद हुई शांती ।
 दूर हुई मन की सब भ्रांती[1] ॥ १४ ॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता ।
 बचन गुरु हिये अंतर धरता ॥ १५ ॥
ध्यान गुरु रूप हिये में लाय ।
 सुरत मन छिन छिन चरन समाय ॥ १६ ॥
मगन रहूँ हरदम मन के माहिं ।
 गुरू की दृढ़ कर पकड़ी बाँह ॥ १७ ॥
मेहर राधास्वामी चाहूँ नित्त ।
 चरन में जोड़ूँ हित से चित्त ॥ १८ ॥
भरोसा राधास्वामी मन में राख ।
 कहूँ मैं जीवन से अस भाख[2] ॥ १९ ॥
सरन में राधास्वामी आवो धाय ।
 भाग परमारथ लेव जगाय ॥ २० ॥
मेहर मोपै राधास्वामी कीन अपार ।
 शुकर उन करता रहूँ हर बार ॥ २१ ॥
मेहर और इतनी करो बनाय ।
 देव मन सूरत अधर चढ़ाय ॥ २२ ॥
झाँक तिल खिड़की जाऊँ पार ।
 सुनूँ धुन घंटा नभ के द्वार ॥ २३ ॥

१—भ्रम । २— पुकार कर ।

वहाँ से त्रिकुटी पहुँचूँ धाय ।
गरज सँग ओअँग नाद[1] सुनाय ॥ २४ ॥
सुन्न चढ़ हंसन सँग कर प्यार ।
बजाऊँ किंगरी सारँग सार ॥ २५ ॥
महासुन धाऊँ सतगुरु संग ।
भँवर चढ़ गाऊँ धुन सोहंग ॥ २६ ॥
अमरपुर सुनूँ बीन धुन सार ।
पुरुष का दरशन करूँ निहार ॥ २७ ॥
अलख और अगम का दरशन पाय ।
चरन राधास्वामी परसूँ जाय ॥ २८ ॥
करूँ नित आरत प्रेम सम्हार ।
चरन राधास्वामी मोर अधार ॥ २९ ॥

॥ शब्द २२ ॥

सुरत गत[2] निरमल बुंद सरूप ।
सिंध[3] तज आई भौ[4] के कूप[5] ॥ १ ॥
दयाल घर करती नित्त निवास ।
जगत में आय किया तन बास ॥ २ ॥
भरम रही इंद्रिन सँग नौ[6] वार[7] ।
दुक्ख सुख भोगत मन के लार[8] ॥ ३ ॥

१—शब्द । २—दशा । ३—समुद्र, भंडार । ४—भौसागर । ५—कुआँ ।
६—नौ इंद्रियाँ । ७—इसी तरफ़ । ८—साथ ।

देख जग जीवन हालत ज़ार[१]।
दया कर राधास्वामी परम उदार ॥ ४ ॥
जगत में आये धर औतार।
हंस जीवन को लिया उबार ॥ ५ ॥
भक्ति गुरु रीती समझाई।
काल मत भेद भिन्न गाई ॥ ६ ॥
सुरत और शब्द किया उपदेश।
सुनाई महिमा संतन देश ॥ ७ ॥
बचन उन जिन हित से माना।
दिया उन प्रेम भक्ति दाना ॥ ८ ॥
काल के फंदे दिये खुलाय।
जाल माया का दिया कटाय ॥ ९ ॥
पुरुष का दामन[२] दिया पकड़ाय।
शब्द से पौड़ी[३] शब्द चढ़ाय ॥ १० ॥
सुरत मन अस अस अधर चढ़ाय।
मेहर कर दिया निज घर पहुँचाय ॥ ११ ॥
प्रेम की मुझ को देकर दात[४]।
कराई भक्ती दिन और रात ॥ १२ ॥
सिखाई नई नई भक्ती रीत।
धरी मेरे हिरदे दृढ़ परतीत ॥ १३ ॥

१—ख़राब। २—पल्ला। ३—सीढ़ी। ४—बख़्शिश।

धूम गुरु भक्ती हुई भारी।
जगत जिव कोटिन लिए तारी ॥ १४ ॥
बढ़ावत दिन दिन अचरज भाग।
बसाया हिये में बिरह अनुराग ॥ १५ ॥
सुरत मन चढ़त अधर की गैल[1]।
मगन होय करते घट में सैल[2] ॥ १६ ॥
फोड़ नभ त्रिकुटी को धावत।
निरख गुरु मूरत हरखावत ॥ १७ ॥
मानसर किये अश्नान सम्हार।
भँवर चढ़ खोली खिड़की पार ॥ १८ ॥
चौक लख दरस पुरुष का कीन।
सुनी वहाँ मधुर मधुर धुन बीन ॥ १९ ॥
अलख और अगम दया धारी।
अनामी धाम लखा सारी ॥ २० ॥
यहीं से उतरी सूरत धार।
उलट फिर आई चरन सम्हार ॥ २१ ॥
अनेक बिधि[3] जग जीवन का काज।
सँवारा देकर भक्ती साज ॥ २२ ॥
किया यह राधास्वामी आपहि काम।
मेहर से दिया चरनन बिसराम ॥ २३ ॥

१—रास्ता। २—सैर। ३—तरह।

गाऊँ क्स राधास्वामी गत[1] भारी ।
कहत रही रचना थक सारी ॥ २४ ॥
करूँ उन आरत हित धर चित्त ।
चरन में राधास्वामी खेलूँ नित्त ॥ २५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

जगत में घेरा डाला काल ।
बिछाया माया ने जंजाल ॥ १ ॥
जीव सब फँस रहे भोगन में ।
बिकल हुए सोग[2] और रोगन में ॥ २ ॥
करम और धरम का कीन पसार ।
पूज रहे देवी देवा झाड़[3] ॥ ३ ॥
संत मत भेद नहीं पाया ।
काल मत सब जिव भरमाया ॥ ४ ॥
भेख और पंडित रहे अजान ।
जगत में माया संग भुलान ॥ ५ ॥
कोई दिन मैं भी रहा भरमाय ।
देव किरतम[4] की पूजा लाय ॥ ६ ॥
सुनी जब संत मते की बात ।
हरखिया मन और फड़का[5] गात[6] ॥ ७ ॥

१—महिमा । २—शोक । ३—सभी । ४—कृत्रिम, बनावटी । ५—प्रसन्न हुआ । ६—शरीर ।

धाय कर सतसँग में आया ।
मगन हुआ गुरु दरशन पाया ॥ ८ ॥
बचन सुन मन निश्चल हूआ ।
ध्यान धर चित निरमल हूआ ॥ ९ ॥
सुरत और शब्द जुगत को पाय ।
प्रेम अँग नित अभ्यास कराय ॥ १० ॥
शब्द रस घट में पियत रहूँ ।
दरस गुरु निरखत जियत रहूँ ॥ ११ ॥
संत मत सबसे बढ़ जाना ।
और मत मग[1] में अटकाना ॥ १२ ॥
मेरे मन हुआ अस बिस्वास ।
संत बिन कोइ नहिं पुजवे आस ॥ १३ ॥
कहूँ मैं सब से यही पुकार ।
चरन राधास्वामी धारो प्यार ॥ १४ ॥
संत मत धारो हिये परतीत ।
चरन में गुरु के लावो प्रीत ॥ १५ ॥
सुरत और शब्द कमावो कार[2] ।
होय तब तुम्हरा जीव उबार ॥ १६ ॥
नहीं तो पड़े रहो नौ[3] वार[4] ।
काल की फिर फिर खावो मार ॥ १७ ॥

१—रास्ते । २—काररवाई । ३—नौ इंद्रियों के । ४—इसी तरफ़ ।

सराहूँ छिन छिन अपना भाग ।
गुरू मोहि दीना अचल सुहाग ॥ १८ ॥
नीच मन जग में रहा भरमाय ।
गुरू मोहि लिया अपनी सरनाय ॥ १९ ॥
गुरू की गत मत मैं नहि जान ।
दरस दे खैंच लिये मन प्रान ॥ २० ॥
जगत का नहि भावे अब ढंग ।
लगा अब फीका माया रंग ॥ २१ ॥
पिरेमी जन सँग लागा नेह[1] ।
टूट गया जग जिव संग सनेह ॥ २२ ॥
गुरू संगत में नित खेलूँ ।
पिरेमी जन सँग मन मेलूँ ॥ २३ ॥
दरस गुरू छिन छिन बढ़ता चाव[2] ।
चरन में निस दिन बढ़ता भाव ॥ २४ ॥
गुरू बल नभ में पहुँचूँ आज ।
गगन चढ़ सुनूँ नाम की गाज[3] ॥ २५ ॥
सुन्न चढ़ भँवरगुफा को धाय ।
लोक सत अलख अगम दरसाय ॥ २६ ॥
चरन राधास्वामी सेव रहूँ ।
उमँग अँग दृढ़ कर सरन गहूँ[4] ॥ २७ ॥

१—प्रेम । २—शौक़ । ३—गरज । ४—पकड़ूँ ।

॥ शब्द २४ ॥

सुरत रँगीली सतगुरु प्यारी ।
लाई आरती धार ॥ १ ॥
भूषन[1] बस्तर अनेक लाय कर ।
कीन्हा गुरु सिंगार ॥ २ ॥
अचरज रूपी सोभा बाढ़ी ।
उमँगा हिये अति प्यार ॥ ३ ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आए ।
देखें बिमल[2] बहार ॥ ४ ॥
हरख हरख सब नाचें गावें ।
बाढ़ी उमँग अपार ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि अब कीनी ।
मगन[3] हुए नर नार[4] ॥ ६ ॥
सीत प्रसाद की बरखा कीनी ।
पावत सब मिल झाड़[5] ॥ ७ ॥
अनहद बाजे गाजन लागे ।
बरसत अमृत धार ॥ ८ ॥
भींजत मन सीझत स्रुत प्यारी ।
गावत गुरु गुन सार ॥ ९ ॥

१—ज़ेवर । २—निर्मल । ३—प्रसन्न । ४—नर नार—पुरुष स्त्री सभी । ५—एक एक करके ।

चढ़त अधर पहुँची दस द्वारे ।
मानसरोवर मैल उतार ॥ १० ॥
परे[1] जाय मुरली धुन पाई ।
सतपुर दरशन पुरुष निहार ॥ ११ ॥
अलख अगम की सुन सुन बतियाँ ।
होय गई अब सब से न्यार ॥ १२ ॥
राधास्वामी रूप निरख हिये[2] नैना ।
मगन हुई अब सूरत नार ॥ १३ ॥
हैरत[3] हैरत हैरत धामा[4] ।
अचरज अचरज सोभा धार ॥ १४ ॥
होय निचिंत चरन गह[5] बैठी ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥ १५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सुरत प्यारी चित धर अगम बिबेक[6] ।
प्रेम अँग राधास्वामी धारी टेक ॥ १ ॥
जगत का देख सकल ब्योहार ।
डार दई चित से समझ असार ॥ २ ॥
परख कर मन की चाल अनेक ।
कामना जग की डारी छेक[7] ॥ ३ ॥

१—आगे । २—अंतर के । ३—अचरज । ४—स्थान । ५—पकड़ कर ।
६—ज्ञान । ७—डारी छेक—दूर कर दी ।

निरख कर इंद्रियन चाल कुचाल[१]।
जुगत से छिन छिन राख सम्हाल ॥ ४ ॥
चरन गुरु छिन छिन चित्त लगाय।
रूप गुरु पल पल हिये बसाय ॥ ५ ॥
होत अस दिन दिन निरमल अंग।
चरन गुरु बाढ़त प्रेम सुरंग ॥ ६ ॥
दया गुरु काटे सकल कुरंग[२]।
गावती गुरु गुन उमँग उमंग ॥ ७ ॥
उमँग कर करती गुरु सिंगार।
हरखती अचरज रूप निहार ॥ ८ ॥
देख गुरु लीला अजब बहार।
चरन गुरु चित में बढ़ता प्यार ॥ ९ ॥
अजब गत[३] गुरु की कर पहिचान।
शब्द गुरु हिये में धरती ध्यान ॥ १० ॥
उलट मन इंद्री घट में लाग।
शब्द धुन सुनती सहित अनुराग ॥ ११ ॥
निरखती नभ चढ़ जोत अकार[४]।
गगन में गुरु मूरत उजियार ॥ १२ ॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय।
गुफा धुन मुरली सुनी बनाय ॥ १३ ॥

१—बुरी आदत। २—बुरे अंग। ३—सामर्थ्य। ४—स्वरूप।

अमरपुर दरस पुरुष का लीन ।
अधर चढ़ अलख अगम गत चीन[1] ॥ १४ ॥
परे तिस राधास्वामी धाम दिखाय ।
दरस कर लीना भाग जगाय ॥ १५ ॥
दीन अँग आरत चरनन लाय ।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय[2] ॥ १६ ॥
दया कर लीना अंग लगाय ।
दिया मेरा सब बिध[3] काज बनाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द २६ ॥

गुरु परशाद प्रीति अब जागी ।
उमँग उमँग सुर्त चरनन लागी ॥ १ ॥
मन हुआ मगन पाय गुरु दरशन ।
तन मन धन कीन्हा गुरु अरपन[4] ॥ २ ॥
गुरु का रूप अधिक मन भाता[5] ।
कर सिंगार हिये हुलसाता ॥ ३ ॥
निस दिन गुरु सँग करत बिलासा ।
लीला देखत बढ़त हुलासा ॥ ४ ॥
आरत नई बिध लीन सजाई ।
मन सूरत गुरु प्रेम रँगाई ॥ ५ ॥

१—पहचान कर । २—लीन रिझाय—प्रसन्न कर लिये । ३—तरह । ४—अर्पण, भेंट । ५—अच्छा लगता ।

सतसँगियन सँग गावत आरत ।
प्रीति प्रतीति हिये बिच धारत ॥ ६ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।
हुए प्रसन्न और किया निहाला[1] ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

प्रीति नवीन हिये अब जागी ।
गुरु चरनन में सूरत लागी ॥ १ ॥
सतसँग करत मगन हुआ मन में ।
फूला नाहिं समावत तन में ॥ २ ॥
संत मते की महिमा जानी ।
राधास्वामी गत[2] अति अगम बखानी ॥ ३ ॥
दया मेहर का लीना आसर[3] ।
राधास्वामी नाम जपूँ निस[4] बासर[5] ॥ ४ ॥
भजन करत हिये बढ़त उमंगा ।
सरन धार भौ पार उलंघा[6] ॥ ५ ॥
दरशन करत बढ़त नित प्यारा ।
बचन सुनत हिये होत उजारा ॥ ६ ॥
जग ब्योहार लगत अति रूखा[7] ।
मन इंद्री मानो तन में सूखा ॥ ७ ॥

१—सरशार । २—शक्ति । ३—सहारा । ४—रात । ५—दिन । ६—गया ।
७—निरस ।

भोगन की आसा तज दीनी ।
मन हुआ गुरु चरनन में लीनी ॥ ८ ॥
गुरु बिस्वास हिये में छाया ।
थक रहे काल करम और माया ॥ ९ ॥
भरम उड़ाय हुआ मन निरमल ।
गुरु चरनन में चित हुआ निश्चल ॥ १० ॥
राधास्वामी चरन बसे अब हिये में ।
प्रीति प्रतीति बढ़ी अब जिये में ॥ ११ ॥
आस भरोस धरा गुरु चरना ।
सुरत शब्द में निस दिन भरना[1] ॥ १२ ॥
घट में सुनता अनहद घोर[2] ।
काम क्रोध का घट गया ज़ोर ॥ १३ ॥
घंटा संख सुनी धुन नभ में ।
गुरु सरूप निरखा गगना में ॥ १४ ॥
सुन में निरखा चंद्र उजारा ।
सुनी भँवर धुन सोहँग सारा ॥ १५ ॥
सतपुर लखा पुरुष का रूप ।
तिस[3] परे अलख अगम कुल भूप ॥ १६ ॥
वहाँ से आगे सुरत चढ़ाई ।
निरखा राधास्वामी धाम सुहाई[4] ॥ १७ ॥

१—लगाना । २—शब्द । ३—उसके । ४—सुहावना ।

उमँग उठी हिये में अति भारी।
गुरु चरनन में आरत धारी॥१८॥
प्रेम प्रीति से सामाँ लाया।
माता सँग गुरु सन्मुख आया॥१९॥
परम गुरू राधास्वामी प्यारे।
सब रचना के प्रान अधारे॥२०॥
हुए परसन्न मेहर की भारी।
मो[1] से अधम[2] को लिया उबारी॥२१॥

॥ शब्द २८ ॥

परम गुरु राधास्वामी दातारे।
वही मेरे जिय के आधारे॥१॥
गाऊँ कस उन महिमा भारी।
करी मोपै मेहर दया न्यारी॥२॥
सुरत मन चरनन खैंच लगाय।
लिया मोहि किरपा कर अपनाय॥३॥
धरी मेरे हिये में दृढ़ परतीत।
दई चरनन में गहरी प्रीत॥४॥
शब्द की गति मति अगम अपार।
लखाई[3] घट में किरपा धार[4]॥५॥

१—मुझ। २—नीच। ३—दिखलाई। ४—कर के।

दिखा कर मन के सभी बिकार[1]।
दया कर देते सहज निकार ॥ ६ ॥
जगत के भोग सभी दिखलाय।
भाव उन चित से दिया हटाय ॥ ७ ॥
पकड़[2] मेरी ढीली कर तन मन।
कराये गुरु चरनन अरपन ॥ ८ ॥
दया मोपै अंतर जस कीनी।
परख[3] मोहिं वाकी वहीं दीनी ॥ ९ ॥
घात[4] माया ने की बहु भाँत।
निरख[5] दे वोहीं बख़्शी शांत ॥ १० ॥
कहूँ क्या अस अस मेहर कराय।
राह मेरी राधास्वामी दीन चलाय ॥ ११ ॥
शुकर उन क्योंकर गाऊँ मैं।
चरन उन छिन छिन ध्याऊँ मैं ॥ १२ ॥
ग़ौर कर देखा जग का हाल।
रहे फँस सब जिव माया जाल ॥ १३ ॥
करम का नित्त बढ़ाते भार[6]।
काल की खाते निस दिन मार ॥ १४ ॥
सोचते कुछ नहिं लाभ और हान।
रहे सब माया सँग भरमान ॥ १५ ॥

१—दोष। २—बंधन। ३—पहचान। ४—चोट। ५—समझ बूझ। ६—बोझ।

सुने नहिं चित दे सतगुरु बात ।
कहो कस[1] यह परमारथ पात ॥ १६ ॥
संग इन जीवन नहिं चाहूँ ।
सरन में राधास्वामी के धाऊँ ॥ १७ ॥
भाग मेरा जागा अजब निदान[2] ।
मिला मोहिं सतगुरु चरन ठिकान ॥ १८ ॥
जिऊँ मैं नित गुरु शब्द सम्हार ।
पिऊँ मैं चरन अमीरस सार ॥ १९ ॥
मगन रहूँ राधास्वामी के गुन गाय ।
चरन में छिन छिन सुरत समाय ॥ २० ॥
दयानिधि राधास्वामी गुरु प्यारे ।
मेहर कर लीना मोहिं तारे ॥ २१ ॥

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु चरन पकड़ दृढ़ प्यारे ।
क्यों जम हाट[3] बिकाय ॥ १ ॥
करम धरम में सब जिव अटके ।
गुरु सँग हेत[4] न कोई लाय ॥ २ ॥
भागहीन सब पड़े काल बस ।
गुरु दयाल की सरन न आय ॥ ३ ॥

१—कैसे । २—अंत में । ३—बाज़ार । ४—प्रेम ।

जिन पर मेहर करें राधास्वामी ।
उन हिरदे यह बचन समाय ॥ ४ ॥
गुरु चरनन की क्या कहूँ महिमा ।
बिरले प्रेमी ध्यावत ताय[1] ॥ ५ ॥
भाव भक्ति कोइ क्या दिखलावे ।
निज कर रहे चरन लिपटाय ॥ ६ ॥
सतगुरु रूप निरख हिये अंतर ।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ७ ॥
ऐसी सुरत पिरेमी जाकी ।
तिन गुरु मेहर मिली अधिकाय ॥ ८ ॥
जोगी ज्ञानी और बैरागी ।
यह सब झूठे ठौर[2] न पाय ॥ ९ ॥
बड़ा भाग उन प्रेमी जागा ।
जिनको लिया गुरु गोद बिठाय ॥ १० ॥
राधास्वामी चरन धार हिये अंतर ।
यह आरत अनुरागी[3] गाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द ३० ॥

खोजी सुनो सत्त[4] की बात ॥ टेक ॥
सतसँग करो चित्त दे गुरु का
और बचन उन हिये समात[5] ॥ १ ॥

१—उनको । २—स्थान । ३—प्रेमी । ४—सत्य । ५—धारण करो ।

भेद भाव जब गुरू सुनावें।

सुन सुन मन चरनन उमँगात ॥ २ ॥

जस लोभी को दाम[१] पियारा।

अस खोजी को गुरु की बात ॥ ३ ॥

सोवत जागत याद न बिसरत।

गुरु दरशन को मन अकुलात ॥ ४ ॥

दरद उठे छिन छिन हिये माहीं।

नित्त बढ़े परमारथ चाट[२] ॥ ५ ॥

ऐसी लगन[३] लाय जो खोजी।

सो सतगुरु से पावे दात ॥ ६ ॥

जब लग लगन न होवे साँची।

हिरसी कपटी जानो जात ॥ ७ ॥

माया चेरा[४] गुरु का नाहीं।

सो कस प्रेम की दौलत पात ॥ ८ ॥

काल करम के धक्के खावे।

जम खूँदे नित धर धर लात ॥ ९ ॥

जगत मोह तज साँचे मन से।

अब राधास्वामी का कर तू साथ ॥ १० ॥

१—धन। २—शौक़। ३—लौ, प्रेम। ४—दास।

॥ शब्द ३१ ॥

संत किया सतसंग जगत में ।
निज घर भेद सुनाये ॥ १ ॥
जिन २ धारा बचन प्रेम से ।
तिन पर दया कराये ॥ २ ॥
ले उपदेश उन जुगत कमाई ।
अंतर ध्यान धराये ॥ ३ ॥
गुरु का रूप बसा अब घट में ।
दरशन कर मगनाये[1] ॥ ४ ॥
बिन गुरु चरन बिकल मन रहता ।
दम दम तार लगाये[2] ॥ ५ ॥
जब गुरु परचा[3] देयँ मेहर से ।
फूलत तन न समाये ॥ ६ ॥
ऐसी लगन लगी जिन हिये में ।
सो गुरु चरन समाये ॥ ७ ॥
उमँग उमँग गुरु दरशन लागी ।
जग और देह बिसराये ॥ ८ ॥
नित्त बिलास करें अब घट में ।
धुन झनकार सुनाये ॥ ९ ॥

१—प्रसन्न हुए। २—तार लगाए—अंतर में संबंध जोड़ते हैं। ३—अंतरी अनुभव।

अस गुरु रूप ध्यान धरा जिन जिन ।
　　तिन घट पाट[1] खुलाये ॥ १० ॥
मीन मगन[2] रहे जस जल माहीं ।
　　अस सुन शब्द समाये ॥ ११ ॥
मन से छूट सुरत हुई निरमल ।
　　तब सत शब्द लगाये ॥ १२ ॥
सत्तपुरुष का दरशन पाकर ।
　　अलख अगम दरसाये ॥ १३ ॥
भर भर प्रेम आरती गावत ।
　　राधास्वामी सन्मुख आये ॥१४॥
पूरन मेहर करी राधास्वामी ।
　　पूरा काज बनाये ॥ १५ ॥
मगन होय स्रुत चरनन लागी ।
　　अब कुछ कहा न जाये ॥ १६ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

मैं पाया दरस गुरू का ।
　　मैं परसा[3] चरन गुरू का ॥ १ ॥
मैं ध्याऊँ रूप गुरू का ।
　　मैं गाऊँ नाम गुरू का ॥ २ ॥

१—द्वार । २—खुश । ३—स्पर्श किया ।

मैं सेऊँ[1] चरन गुरू का ।
मैं दासन दास गुरू का ॥ ३ ॥
मेरे हिये बसा शब्द गुरू का ।
मैं धारा रंग गुरू का ॥ ४ ॥
मैं जग तज हुआ गुरू का ।
मैं सचमुच हुआ गुरू का ॥ ५ ॥
मोपै हो गया करम[2] गुरू का ।
मोहि बख़्शा प्रेम गुरू का ॥ ६ ॥
मैं पकड़ा संग गुरू का ।
मैं धारा ढंग गुरू का ॥ ७ ॥
प्यारे राधास्वामी नाम गुरू का ।
सब के परे धाम गुरू का ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

बचन सुन बढ़ा हिये अनुराग ।
पिरेमी सुरत उठी अब जाग ॥ १ ॥
दरस गुरु पियत अमीरस सार ।
निरख छबि तन मन सुद्ध[3] बिसार[4] ॥ २ ॥
गाय रही गुरु महिमा छिन छिन ।
नाम गुरु जपत रही निस[5] दिन ॥ ३ ॥

१—सेवा करूँ । २—मेहर, दया । ३—याद । ४—भुलाकर । ५—रात ।

बढ़ावत नित चरनन में प्यार ।
रूप गुरु धारत हिये मँझार[1] ॥ ४ ॥
सुरत और शब्द का ले अभ्यास ।
निरख रही घट में नित्त बिलास ॥ ५ ॥
जगावत नित गुरु प्रीति नवीन[2] ।
मगन रहे गुरु सँग ज्यों जल मीन[3] ॥ ६ ॥
धावती सेवा को हर बार ।
देह की सुध बुध[4] रही बिसार ॥ ७ ॥
उमँग रही मन अंतर में छाय ।
प्रेम गुरु हियरे रहा बसाय ॥ ८ ॥
जगत का ख़याल नहीं मन लाय ।
कुटम्ब की याद न चित्त समाय ॥ ९ ॥
बासना भोगन की दई त्याग ।
बढ़ा गुरु आरत का अनुराग ॥ १० ॥
गाऊँ राधास्वामी आरत सार ।
जिऊँ मैं राधास्वामी नाम अधार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

संत मत भेद सुना जब ही ।
खिले[5] मेरे मन बुद्धी तब ही ॥ १ ॥

१—में । २—नई । ३—मछली । ४—सुध बुध—याद । ५—ख़ुश हुए ।

शब्द की महिमा गुरु गाई ।
भेद रचना का समझाई ॥ २ ॥
सुरत का बंधन तन मन संग ।
हुआ कस अब कस होय असंग[1] ॥ ३ ॥
जुगत सुन मन निश्चय धारा ।
गुरू को परखा सच यारा[2] ॥ ४ ॥
करत मन सतसँग हुआ सरशार ।
चरन में राधास्वामी जागा प्यार ॥ ५ ॥
हुआ कम मन से जग का भाव ।
जगा अब परमारथ का चाव[3] ॥ ६ ॥
भक्त जन दीखें सुखियारे ।
जगत जिव सबही दुखियारे ॥ ७ ॥
नित्त गुरु दरशन चाहत मन ।
करत गुरु सेवा फड़कत[4] तन ॥ ८ ॥
उमँग मन लई गुरु शिक्षा सार ।
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार ॥ ९ ॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयार ।
लिया मोहि जग से आज उबार ॥ १० ॥
भाव सँग आरत उन गाऊँ ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ ११ ॥

१—अलग । २—मित्र । ३—शौक़ ४—प्रसन्न होता है ।

॥ शब्द ३५ ॥

अनेक मत जग में फैल रहे।
टेक सब पिछली धार रहे ॥ १ ॥
ख़बर नहिं को है सच करतार।
कहाँ है जिव का निज घरबार ॥ २ ॥
कौन बिधि जग बंधन टूटै।
कौन बिधि दुख सुख से छूटै ॥ ३ ॥
अमर सुख कस[1] और कहाँ पावे।
कौन जुगती कर वहाँ जावे ॥ ४ ॥
तपत[2] रहा संसय में दिन रात।
किसी ने कही न साँची बात ॥ ५ ॥
भाग से गुरु संगत में आय।
तपन मेरी सबही गई बुझाय ॥ ६ ॥
भेद सच मालिक का पाया।
सुरत का निज घर बतलाया ॥ ७ ॥
शब्द का मारग दरसाया।
जतन[3] बिधिपूर्वक समझाया ॥ ८ ॥
प्रीति मेरे हिये में दई जगाय।
मोह जग काटन[4] जुगत बताय ॥ ९ ॥

१—कैसे। २—जलता। ३—उपाय। ४—काटने की।

दया का बल हिरदे में धार ।
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार ॥ १० ॥
गुरू बल मोह जगत का टार[1] ।
बढ़ाऊँ चरनन में नित प्यार ॥ ११ ॥
सरन में राधास्वामी आया धाय ।
करूँ उन आरत साज सजाय ॥ १२ ॥
मेहर का दीजे मोहि परशाद ।
रहूँ तुम चरनन में दिल शाद[2] ॥ १३ ॥
नाम राधास्वामी सुमिर रहूँ ।
चरन राधास्वामी पकड़ रहूँ ॥ १४ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

कुँवर प्यारा आरत लाया साज ।
हुए राधास्वामी परसन आज ॥ १ ॥
उमँग से करता गुरू सिंगार ।
हिये में धरता चरनन प्यार ॥ २ ॥
गावता आरत प्रीति सहित[3] ।
दया राधास्वामी छिन छिन चहित[4] ॥३॥
दरस गुरू करता दृष्टी जोड़ ।
बिसारत[5] जग का मोर और तोर[6] ॥ ४ ॥

१—हटाकर । २—ख़ुश, प्रसन्न । ३—साथ । ४—चाहता । ५—भुलाता ।
६—मोर और तोर—मेरा तेरा ।

सुरत मन सिमटावत हर दम ।
गगन चढ़ सुनता धुन घम घम ॥ ५ ॥
गावता गुरु महिमा हर बार ।
चरन राधास्वामी का आधार[1] ॥ ६ ॥
मेहर से दीना गुरु परशाद ।
कटी मेरी जन्म जन्म की ब्याध[2] ॥ ७ ॥
जगत का दीना भाव निकार ।
नाम राधास्वामी पाया सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

सुरत दृढ़ कर गुरु सरन गही[3] ।
आरती गावत आज नई ॥ १ ॥
चरन गुरु धारी गहिरी प्रीत ।
बसाई हिये में दृढ़ परतीत ॥ २ ॥
मगन होय खेलत गुरु के पास ।
करत नित चरनन संग बिलास ॥ ३ ॥
करत गुरु आरत उमँग उमंग ।
सखी सब गावें नाचें संग ॥ ४ ॥
समाँ यह अचरज रूप बँधाय ।
कौन कहे सोभा गुरु की गाय ॥ ५ ॥

१—सहारा । २—कष्ट । ३—ली ।

आरती अद्भुत अब साजी ।
हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी[1] ॥ ६ ॥
मेहर से दिया सतगुरु परशाद ।
रहूँ उन चरनन में दिलशाद[2] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

मगन हुई सुरत दरस गुरु पाय।
सरन गह रही चरन लिपटाय ॥ १ ॥
कहूँ क्या सुख गुरु सँग भारी ।
पियत रही सुरत अमी सारी ॥ २ ॥
बचन की बरखा होती नित्त ।
भींज रहे गुरु रँग मन और सुर्त ॥ ३ ॥
करत गुरु सेवा उमँग उमंग ।
हरख सँग फूल रहा अँग अंग ॥ ४ ॥
सुनत नित महिमा सतगुरु देस ।
त्याग दिया करम भरम का लेस[3] ॥५॥
शब्द का मारग पाया सार ।
नेम[4] से करूँ अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥
ध्यान गुरु रूप हिये में लाय ।
रहूँ मैं छिन छिन प्रेम जगाय ॥ ७ ॥

१—प्रसन्न । २—दिल से ख़ुश । ३—अंश । ४—नियम ।

नाम गुरू जपत रहूँ हर दम ।
चरन में राखूँ चित कर सम[1] ॥ ८ ॥
चरन गुरू हुई अब दृढ़ परतीत ।
दया से बढ़ती निस दिन प्रीत ॥ ९ ॥
प्रीति की ले कर में थाली ।
बिरह की जोत लई बाली[2] ॥ १० ॥
आरती राधास्वामी की गाऊँ ।
रूप राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ ११ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

आरती आगे राधास्वामी गाऊँ ।
हिये में प्रेम नवीन जगाऊँ ॥ १ ॥
उमँग उमँग कर सन्मुख आऊँ ।
चित चरनन में जोड़ धराऊँ ॥ २ ॥
भटक भटक बहु भटका जग में ।
मेहर हुई आया चरनन में ॥ ३ ॥
भेद दिया गुरू धुर पद सारा ।
सुरत शब्द मारग मैं धारा ॥ ४ ॥
अनेक बिधी[3] गुरू दई बताई ।
मन और सूरत चरन लगाई ॥ ५ ॥

१—शान्त । २—जला । ३—उपाय ।

उमँग सहित कीना अभ्यास ।
घट में पाया परम बिलास ॥ ६ ॥
बहु बिधि कर मैं निश्चय धारा ।
राधास्वामी मत है सब का सारा ॥ ७ ॥
जीव उबार इसी से होई ।
राधास्वामी बिन सब गये बिगोई[1] ॥ ८ ॥
जो जो राधास्वामी नाम सम्हारे ।
सहजहि जाय भौसागर पारे ॥ ९ ॥
जप तप संजम तीरथ कीना ।
ज्ञान जोग बिधि सब हम चीन्हा ॥ १० ॥
और अनेक जतन किये भाई ।
ख़ाली रहा कुछ हाथ न आई ॥ ११ ॥
जब राधास्वामी संगत में आया ।
निज पद का सत[2] मारग पाया ॥ १२ ॥
सरन लई राधास्वामी संता ।
निरभय हुआ मिटी सब चिन्ता ॥ १३ ॥
मगन रहूँ गुरु चरन धियाऊँ ।
सुरत शब्द में सहज लगाऊँ ॥ १४ ॥
गुन गाऊँ राधास्वामी प्यारे ।
दया करी मोहिं लिया उबारे ॥ १५ ॥

१—भुला । २—सच्चा ।

॥ शब्द ४० ॥

बाल समान चरन गुरु आई ।
 देख दरश अतिकर हरखाई ॥ १ ॥
खेलूँ गुरु सन्मुख धर प्यार ।
 सुनत रहूँ गुरु बानी सार ॥ २ ॥
आरत धारूँ उमँग प्रेम से ।
 जपत रहूँ गुरु नाम नेम[1] से ॥ ३ ॥
गुरु की लीला निरख निहार ।
 बिगसत[2] मन और बढ़त पियार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीना भक्ती साज[3] ।
 चरन सरन हिये धारी आज ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

आरती गाऊँ रंग भरी ।
 सुरत गुरु चरनन तान धरी[4] ॥ १ ॥
लगाये मन ने बहु अटकाव[5] ।
 करम ने दीने बहु भरमाव ॥ २ ॥
दीन लख गुरू दया धारी ।
 करम और भरम दिये टारी ॥ ३ ॥
हुआ मन बहु बिधि कर अब तंग ।
 चढ़ाया गुरु ने अपना रंग ॥ ४ ॥

१—नियम । २—प्रसन्न होता । ३—सामान । ४—तान धरी—खींच कर लगा दी । ५—विघ्न ।

भोग तज घट में लाग रही ।
शब्द धुन सुन सुन जाग रही ॥ ५ ॥
जगत का झूठ लगा ब्योहार ।
लगा अब फीका सब संसार ॥ ६ ॥
उमँग अब उठती बारम्बार ।
करूँ दृढ़ भक्ती गुरु दरबार ॥ ७ ॥
चरन में निज कर सुरत लगाय ।
अमी रस पीऊँ प्रेम जगाय ॥ ८ ॥
दया गुरु चढ़ूँ आज गगना ।
दरस गुरु दृष्टि जोड़ तकना[1] ॥ ९ ॥
सुन्न चढ़ महासुन्न धस पार ।
भँवर में सुनूँ सोहँग धुन सार ॥ १० ॥
सत्तपुर अलख अगम के पार ।
रहूँ राधास्वामी दरस निहार ॥ ११ ॥
आरती प्रेम सहित रहूँ गाय ।
दया प्यारे राधास्वामी करी बनाय ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

दीन दिल हिये अनुराग[2] सम्हार ।
दास करे आरत[3] साज सँवार ॥ १ ॥

१—देखना । २—प्रेम । ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

हिये का थाल सजाऊँ आज ।
बिरह की जोत जगाऊँ साज ॥ २ ॥
गाऊँ गुरु आरत उमँग सम्हार ।
दरस गुरु निरखूँ नैन निहार ॥ ३ ॥
दृष्टि घट उलटूँ नैन झुमाय[१] ।
सुरत की ताड़ी धुन सँग लाय ॥ ४ ॥
मेहर की दृष्टी गुरु की पाय ।
सुरत मन नभ में पहुँचे धाय ॥ ५ ॥
काल अँग मन से दिया निकार ।
भाव[२] भय जग का दीना टार ॥ ६ ॥
प्रेम की गुरु ने की बरखा ।
मिटी मन सूरत की तिरखा[३] ॥ ७ ॥
शब्द धुन बाज रही घनघोर ।
संख और घंटा डाला शोर ॥ ८ ॥
निरख रही सूरत जोत उजार ।
गुरू गुन गावत बारम्बार ॥ ९ ॥
हिये में बढ़ता अब अनुराग ।
सुरत रही शब्द गुरू से लाग ॥ १० ॥
गगन चढ़ सुनती धुन ओंकार ।
लाल रँग देखा सूर अकार[४] ॥ ११ ॥

१—घुमाकर । २—श्रद्धा, विश्वास । ३—तृषा, प्यास । ४—स्वरूप ।

दसम दर[1] खोला पाट[2] हटाय ।
बिमल हुई मानसरोवर न्हाय ॥ १२ ॥
महासुन गई गुरू सँग दौड़ ।
भँवर चढ़ मिटी रैन[3] हुआ भोर[4] ॥ १३ ॥
बीन धुन सुन कर गई सतलोक ।
अलख और अगम का पाया जोग[5] ॥ १४ ॥
परे तिस राधास्वामी धाम निहार ।
अभय[6] होय बैठी सरन सम्हार ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

सुरत मेरी गुरू चरनन अटकी ।
जगत से छिन छिन अब झटकी[7] ॥ १ ॥
बहुत दिन माया सँग भटकी ।
प्रीति गुरू अब हिये में खटकी[8] ॥ २ ॥
करम और धरम दिये पटकी[9] ।
पकड़ धुन सुरत गगन सटकी[10] ॥ ३ ॥
उलट मन कला खाय नट की ।
चाँदनी घट अंतर छिटकी ॥ ४ ॥
ख़बर लई जाय दसम पट[11] की ।
सुरत अक्षर धुन सँग लटकी[12] ॥ ५ ॥

१—द्वार । २—परदा । ३—रात । ४—प्रातःकाल । ५—मेल । ६—निडर । ७—अलहदा हुई । ८—जागी । ९—गिरा दिये । १०—गई । ११—द्वार । १२—जुड़ गई ।

संत बिन को कहे या बट[१] की ।
भँवर धुन सुन सूरत चटकी ॥ ६ ॥
परे चढ़ सुनी धुन्न सत[२] की ।
सुरत वहाँ मगन होय मटकी[३] ॥ ७ ॥
बेद क्या जाने सत मत की ।
ख़बर वह देता खटपट की ॥ ८ ॥
दया मोपै राधास्वामी झटपट[४] की ।
सुरत चरनन में चटपट[५] ली ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

मान तज चरनन आन पड़ी ।
सुरत करे आरत उमँग भरी ॥ १ ॥
दीन दिल लीना थाल सजाय ।
प्रेम गुरु चरनन जोत जगाय ॥ २ ॥
गुरू का सन्मुख कर दीदार[६] ।
हुआ मन मगन हिये धर प्यार ॥ ३ ॥
तान कर दृष्टी तिल में जोड़ ।
सुनत रही अनहद धुन घनघोर ॥ ४ ॥
बिरह हिये राधास्वामी चरन जगाय ।
सुरत मन उमँग अधर को धाय ॥ ५ ॥

१—रास्ता । २—सत्तलोक । ३—नाचने लगी । ४—तुरंत । ५—जल्दी । ६—दर्शन ।

अबल[1] मन राधास्वामी सरन सम्हार।
दया गुरु माँगत बारम्बार ॥ ६ ॥
मेहर बिन कस घट में चाले।
बिघन बहु माया ने डाले ॥ ७ ॥
काल ने लीना मारग घेर।
मोह जग डाला भारी फेर[2] ॥ ८ ॥
काम और क्रोध रहे भरमाय।
अनेक बिधि माया संग भुलाय ॥ ९ ॥
गुरू बिन कौन हटावे काल।
दया कर वेही काटें जाल ॥ १० ॥
सुरत मन घट में होय निसंक।
चढ़ें तब उमँग उमँग धुन संग ॥ ११ ॥
फोड़ तिल सुनें शब्द की गाज।
सहसदलकँवल में देख समाज ॥ १२ ॥
परे चढ़ निरखें गुरु लीला।
सुन्न चढ़ होवे चित सीला ॥ १३ ॥
भँवर धुन सुन कर हुई मगन।
सत्तपुर किया पुरुष दरशन ॥ १४ ॥
निरख कर अलख अगम का नूर[3]।
मिला राधास्वामी दरस हज़ूर ॥ १५ ॥

१—निर्बल। २—चक्कर। ३—प्रकाश

प्रेम का मिला अजब भंडार।
सुरत हुई हैरत[1] सँग सरशार ॥ १६ ॥
दया राधास्वामी निरख अपार।
गाय रही महिमा उनकी सार ॥ १७ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

प्रेम सँग आरत करत रहूँ।
चरन में हित से लिपट रहूँ ॥ १ ॥
गुरू का रूप बसा हिये में।
गुरू की प्रीति धसी[2] जिये में ॥ २ ॥
सुरत से सेऊँ[3] दिन राती।
चरन गुरु नित्त रहूँ राती[4] ॥ ३ ॥
भाग से जब दरशन मिलते।
सुरत मन फड़क फड़क खिलते ॥ ४ ॥
देह की सुध बुध सब बिसराय।
मगन रहूँ गुरु के सन्मुख आय ॥ ५ ॥
उमँग हिये माहिं नवीन जगाय।
करत गुरु सेवा भाग बढ़ाय ॥ ६ ॥
बिना गुरु और न मानूँ कोय।
मौज गुरु जो कुछ होय सो होय ॥ ७ ॥

१—अचरज। २—प्रवेश कर गई। ३—सेवा करूँ। ४—प्रेम में रँगी हुई।

गुरू से करता यही पुकार।
चढ़ाओ सूरत नौ[1] के पार ॥ ८ ॥
होय तब तन मन से न्यारी।
गगन चढ़ निरखूँ उजियारी ॥ ९ ॥
दसम दर खोल अधर को धाय।
भँवर चढ़ सतपुर पहुँचूँ जाय ॥ १० ॥
पुरुष का अचरज रूप निहार।
करूँ फिर अलख अगम से प्यार ॥ ११ ॥
वहाँ से निरख अनामी धाम।
चरन में राधास्वामी पाऊँ बिस्राम[2] ॥ १२ ॥
कोइ नहिं जाने यह मत सार।
बहे सब काल करम की धार ॥ १३ ॥
भाग बिन नहिं पावे मत संत।
दया बिन नहिं जावे घर अंत[3] ॥ १४ ॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग।
सरन गह[4] रहा उन चरनन लाग ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

गुरू के चरनन आन पड़ी।
सुरत माँगे सरना मेहर भरी ॥ १ ॥

१—नौ द्वारों यानी इंद्रियों। २—निवास। ३—अंतिम, सब से ऊँचा। ४—पकड़ कर।

काल मोहिं दीन्हे दुख बहु भाँत।
　करम सँग लागी भारी साँट[1] ॥ २ ॥
जाल बहु माया दीन बिछाय।
　अनेक बिधि मोको तंग रखाय ॥ ३ ॥
बिना राधास्वामी नहिं कोइ और।
　हटावे काल करम का ज़ोर ॥ ४ ॥
सरन गह चरनन में रहुँ लाग।
　जगावें राधास्वामी मेरा भाग ॥ ५ ॥
मगन होय सुनता गुरू बचना।
　चाह जग सहज सहज तजना ॥ ६ ॥
चरन में नित्त बढ़ाता प्यार।
　बिघन मन इंद्री दूर निकार ॥ ७ ॥
सुरत को नित घट में भरना[2]।
　रूप गुरू हिरदे में धरना ॥ ८ ॥
भरोसा राधास्वामी मन में लाय।
　चरन राधास्वामी छिन छिन ध्याय ॥ ९ ॥
दुक्ख सुख जग से नहिं डरना।
　दया ले बैरियन से लड़ना ॥ १० ॥
करें राधास्वामी मोर सहाय।
　करम फल सहजहि देहिं भोगाय ॥ ११ ॥

१—गाँठ। २—प्रवेश करना।

दया कर देवें घट में शांत ।
रहे नहिं मन में कोई भ्रांत[1] ॥ १२ ॥
लगावें मन सूरत को जोड़ ।
सुनावें घट में अनहद शोर ॥ १३ ॥
चढ़े तब सहसकँवल दरसे ।
गगन में गुरु मूरत परसे[2] ॥ १४ ॥
सुन्न में मानसरोवर न्हाय ।
भँवर चढ़ मुरली बीन बजाय ॥ १५ ॥
सत्तपुर अलख अगम के पार ।
मिला राधास्वामी का दीदार[3] ॥ १६ ॥
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ।
करी वहाँ आरत प्रेम जगाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

चरन गुरु पकड़े अब मज़बूत ।
छोड़ दई सब निस्फल[4] करतूत ॥ १ ॥
बहुत दिन माया संग लुभाय ।
जगत में जहाँ तहाँ रहा भरमाय ॥ २ ॥
भटक में हुआ मैं अति हैरान ।
न पाया सत[5] का कहीं निशान ॥ ३ ॥

१—भ्रम, संदेह । २—स्पर्श करे, देखे । ३—दर्शन । ४—व्यर्थ, फ़जूल । ५—सत्य ।

भाग[1] से संत मते का भेद ।
मिला और हट गये मन के खेद[2] ॥ ४ ॥
नित्त मैं करता रहूँ अभ्यास ।
हरख रहूँ घट में निरख बिलास ॥ ५ ॥
अजब गत राधास्वामी मत की जान ।
हुआ गुरु चरनन पर कुरबान ॥ ६ ॥
रहा मन धावत[3] से अब हार ।
पियत रहा घट में धुन रस सार ॥ ७ ॥
प्रेम गुरु हिरदे माँहि जगाय ।
शब्द सँग सूरत अधर चढ़ाय ॥ ८ ॥
लखूँ मैं घट में जोत उजार ।
गगन में सुनता धुन ओंकार ॥ ९ ॥
सुन्न में साराँग सुनी कर प्रीत ।
अधर मुरली सँग गाता गीत ॥ १० ॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय ।
पड़ा राधास्वामी चरनन धाय ॥ ११ ॥
मेहर राधास्वामी नित चाहूँ ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ १२ ॥

१—सौभाग्य, खुशकिस्मती । २—कष्ट । ३—दौड़ने भागने ।

॥ शब्द ४८ ॥

आज सजन घर बजत बधावा[1] ।
सतगुरु मिले परम सुख देवा[2] ॥ १ ॥
परस[3] चरन हिया कँवल खिलाना ।
दीन होय मन सरन समाना ॥ २ ॥
प्रेम भाव हिये माहिं बसाई ।
संशय भरम अब दूर पराई[4] ॥ ३ ॥
दरशन करत जगत सुध भूली ।
तज दई डार[5] गही दृढ़ मूली[6] ॥ ४ ॥
कृपा दृष्टि सतगुरु जब कीनी ।
गाजा[7] गगन सुरत हुई लीनी[8] ॥ ५ ॥
अमी धार लागी अब झिरने[9] ।
सुरत निरत[10] घट अंतर घिरने[11] ॥ ६ ॥
धुन झनकार सुनत सरसाई[12] ।
उमँग उमँग मन गगन समाई ॥ ७ ॥
सुरत छड़ी[13] अब चढ़त अगाड़ी ।
सुन में जाय लखी फुलवारी ॥ ८ ॥
ऋतु बसंत चहुँ दिस रही छाई ।
हंसन संग बिलास सुहाई ॥ ९ ॥

१—हर्ष के बाजे । २—देने वाले । ३—स्पर्श करके । ४—हो गए । ५—डाल, शाखा । ६—मूल, जड़ । ७—गरजने लगा । ८—मग्न । ९—गिरने । १०—सुरत का बाहर से ज्ञान लेने वाला अंग । ११—एकाग्र होने । १२—प्रसन्न हुई । १३—अर्थात् सबसे अलग होकर ।

महासुन्न घाटी चढ़ आई ।
भँवरगुफा सोहँग धुन पाई ॥ १० ॥
सतगुरु रूप लखा सतपुर में ।
धुन बीना जहाँ पड़ी श्रवन[1] में ॥ ११ ॥
कोटिन चंद्र सूर उजियारा ।
सतगुरु के इक रोम पसारा[2] ॥ १२ ॥
सतगुरु महिमा कही न जाई ।
कहत कहत मैं कहत लजाई[3] ॥ १३ ॥
राधास्वामी दया भाग मेरा जागा ।
तब सतगुरु के चरनन लागा ॥ १४ ॥
चरन अधार जिऊँ मैं निस दिन ।
राधास्वामी २ गाऊँ छिन छिन ॥ १५ ॥
सब जीवों को कहूँ पुकारी ।
सतगुरु खोजो होव सुखारी[4] ॥ १६ ॥
तन मन धन चरनन पर वारो ।
घट में गुरु का रूप निहारो ॥ १७ ॥
राधास्वामी चरन सरन गहो[5] भाई ।
प्रेम सहित करो आरत[6] आई ॥ १८ ॥
राधास्वामी दया करें जब तुम पर ।
करम काट पहुँचावें निज घर ॥ १९ ॥

१—कान । २—विस्तार मे । ३—शर्मिन्दा हूँ । ४—सुखी । ५—लो । ६—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

बचन दसवाँ

प्रेम बिलास–भाग पहला

नाम माला

॥ शब्द १ ॥

संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ।
आय जगत में जीव उबारे ॥ १ ॥
राधास्वामी दीना अगम सँदेसा ।
जनम मरन का गया अँदेसा[1] ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन सरन जिन धारी ।
राधास्वामी तिन को लीन उबारी ॥ ३ ॥
राधास्वामी भेद अगाध[2] सुनाया ।
सुरत शब्द मारग दरसाया ॥ ४ ॥
राधास्वामी घट में राह[3] लखाई ।
भेद मंज़िल का भिन भिन[4] गाई ॥ ५ ॥
दीन होय जो चरनन आई ।
राधास्वामी तिस को लिया अपनाई ॥ ६ ॥
प्रेम प्रीति नित हिये में बाढ़ी ।
राधास्वामी चरनन सूरत साजी[5] ॥ ७ ॥

१—अंदेशा, परेशानी । २—अपार । ३—रास्ता । ४—भिन भिन—अलग अलग । ५—सिंगार करके लग गई ।

सुरत शब्द की करत कमाई ।
राधास्वामी दई घट गैल[१] लखाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया फोड़ तिल चाली ।
आगे निरखी जोत उजाली ॥ ९ ॥
राधास्वामी संग गई गगनापुर ।
मगन हुई लख रूप शब्द गुरु ॥ १० ॥
वहाँ से भी फिर अधर चढ़ाई ।
राधास्वामी अक्षर रूप लखाई ॥ ११ ॥
महासुन्न गई राधास्वामी लार[२] ।
सुनी भँवर धुन मुरली सार ॥ १२ ॥
सत्तलोक गई राधास्वामी संग ।
सत्तपुरुष का धारा रंग ॥ १३ ॥
राधास्वामी दया अलख दर्श पाई ।
वहाँ से अगम लोक को धाई ॥ १४ ॥
राधास्वामी मेहर मिला धुर[३] धाम ।
पाया राधास्वामी अचरज नाम ॥ १५ ॥
राधास्वामी चरन किया बिसराम ।
राधास्वामी कीना पूरन काम ॥ १६ ॥
राधास्वामी दीना अचरज ठाँव[४] ।
राधास्वामी गुन मैं कस कस गाँव[५] ॥ १७ ॥

१—रास्ता । २—साथ । ३—मूल । ४—स्थान, लोक । ५—गाऊँ ।

कहूँ पुकार जगत जीवन से ।
राधास्वामी २ गाओ मन से ॥ १८ ॥
करम धरम और भरम हटाओ ।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाओ ॥१९॥
दया तुम्हार मोर[1] मन आई ।
तासे राधास्वामी सरन जनाई ॥ २० ॥
राधास्वामी बिना कोई नहिँ बाचे ।
दुख पावे चौरासी[2] नाचे[3] ॥ २१ ॥
राधास्वामी मत है ऊँच से ऊँचा ।
और मता कोइ वहाँ न पहुँचा ॥ २२ ॥
सब मत रहे रस्ते में थाके[4] ।
राधास्वामी भेद न कोई भाखे[5] ॥ २३ ॥
परमातम सब कहें बखाना ।
राधास्वामी भेद न उनहूँ जाना ॥ २४ ॥
ब्रह्म और पारब्रह्म कहें गाई ।
राधास्वामी भेद न इनहूँ पाई ॥ २५ ॥
राधास्वामी भेद सबन से न्यारा ।
संत सतगुरू कहें पुकारा ॥ २६ ॥
संत बचन को जो कोइ माने ।
राधास्वामी मत को सो सच जाने ॥ २७ ॥

१—मेरे । २—जन्म मरण में । ३—भरमता फिरे । ४—हार गए । ५—कहे ।

सच्चा बिरही खोजी कोई ।
राधास्वामी मत मानेगा सोई ॥ २८ ॥
सतसँग करे समझ तब आवे ।
राधास्वामी भाव[1] जब हिये बसावे ॥ २९ ॥
मूरख जीव जगत के अंधे ।
राधास्वामी शब्द बिना रहें गंदे ॥ ३० ॥
वे क्या जानें संत की गत[2] को ।
कस समझें राधास्वामी मत को ॥ ३१ ॥
खान पान में रहें भुलाने ।
राधास्वामी महिमा नेक[3] न जाने ॥ ३२ ॥
मरने का डर चित न समाय ।
राधास्वामी चरन भाव कस आय ॥ ३३ ॥
राधास्वामी हैं सच्चे करतार ।
यह नहि मानें बड़े गँवार[4] ॥ ३४ ॥
सत्त सिंध से सब जिव आये ।
राधास्वामी बिन जग में भरमाये ॥ ३५ ॥
जो चाहे सच्चा निरवार[5] ।
राधास्वामी चरनन लावे प्यार ॥ ३६ ॥
शब्द डोर गह सुरत चढ़ावे ।
राधास्वामी चरनन बासा पावे ॥ ३७ ॥

१—श्रद्धा । २—सामर्थ्य । ३—ज़रा भी । ४—मूर्ख । ५—छुटकारा ।

दीन होय गुरु सरनी आवे ।
राधास्वामी दया दृष्टि तब पावे ॥ ३८ ॥
शब्द बिना नहिं होय उधार ।
बिन राधास्वामी सहे जम[1] की मार ॥ ३९ ॥
यह सब बचन सत्त कर गाया ।
राधास्वामी सरन उबार[2] बताया ॥ ४० ॥
मूरख जीव न मानें बात ।
राधास्वामी सरन न चित्त समात[3] ॥ ४१ ॥
भाग हीन बहें काल की धार ।
राधास्वामी मत नहिं मानें सार ॥ ४२ ॥
निंद्या कर सिर पाप बढ़ावें ।
राधास्वामी बिन जम धक्के खावें ॥ ४३ ॥
जब लग[4] धुर की मेहर न होई ।
राधास्वामी मत माने नहिं कोई ॥ ४४ ॥
राधास्वामी से अब करूँ पुकार ।
मेहर करो जिव लेव उबार ॥ ४५ ॥

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी प्रीति जगाऊँ निस दिन ।
राधास्वामी रूप धियाऊँ छिन छिन ॥ १ ॥

१—काल । २—छुटकारा, उद्धार । ३—चित्त समात—ठीक मालूम होती । ४—तक ।

राधास्वामी गुन गाऊँ मैं हित[1] से ।
राधास्वामी शब्द सुनूँ मैं चित से ॥ २ ॥
राधास्वामी संग करूँ मैं मन से ।
राधास्वामी सेव करूँ मैं तन से ॥ ३ ॥
राधास्वामी बिन कोइ और न जानूँ ।
राधास्वामी सम[2] कोइ और न मानूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी बिन कोइ और न आसा ।
राधास्वामी चरन चहूँ नित बासा ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरन भरोसा भारा[3] ।
राधास्वामी सम कोइ और न प्यारा ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेरे नैन उजारा[4] ।
राधास्वामी बिन जग में अँधियारा ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेरे प्रान अधारा ।
राधास्वामी बिन कोइ नाहिं सहारा ॥ ८ ॥
राधास्वामी जग से लिया उबारी ।
राधास्वामी पर जाऊँ बलिहारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी कीना कारज पूर ।
राधास्वामी चरनन धारी धूर ॥ १० ॥
राधास्वामी पकड़ा मेरा हाथ ।
राधास्वामी का अब तजूँ न साथ ॥ ११ ॥

१—प्रेम । २—समान । ३—बड़ा । ४—प्रकाश ।

राधास्वामी दीना धुन का भेद ।
राधास्वामी मेटे करमन खेद[1] ॥ १२ ॥
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ।
राधास्वामी किया भौसागर पार ॥ १३ ॥
राधास्वामी काट दई कल[2] फाँसी ।
राधास्वामी मेट दई चौरासी ॥ १४ ॥
राधास्वामी परम पुरुष दातार ।
राधास्वामी धरा गुरू औतार ॥ १५ ॥
राधास्वामी कीना जीव उबार ।
राधास्वामी काटा माया जार[3] ॥ १६ ॥
राधास्वामी मेरा भाग जगाया ।
राधास्वामी मोहिं निज दास बनाया ॥१७॥
राधास्वामी कीनी भारी मेहर ।
राधास्वामी मेटा काल का क़हर[4] ॥ १८ ॥
राधास्वामी लिया बचा करमन से ।
राधास्वामी दिया हटा भरमन से ॥ १९ ॥
राधास्वामी महिमा कस कस गाऊँ ।
राधास्वामी २ सदा धियाऊँ ॥ २० ॥
राधास्वामी चरन अधार[5] जिऊँ मैं ।
राधास्वामी अमृत सार पिऊँ मैं ॥ २१ ॥

१—कष्ट । २—काल की । ३—जाल । ४—मुसीबत । ५—सहारे से ।

राधास्वामी घट का परदा खोल ।
मोहि सुनाये बचन अमोल ॥ २२ ॥
राधास्वामी घंटा संख सुनाय ।
त्रिकुटी लाल सूर[1] दरसाय ॥ २३ ॥
राधास्वामी दसवाँ द्वार खुलाया ।
चंद्र चाँदनी चौक दिखाया ॥ २४ ॥
भँवरगुफा गई राधास्वामी संग ।
मुरली धुन जहाँ सुनी निसंक[2] ॥ २५ ॥
राधास्वामी सत्तलोक पहुँचाया ।
राधास्वामी अलख अगम परसाया[3] ॥२६॥
राधास्वामी चरन परस[4] हरखाई ।
राधास्वामी मेहर से निज घर पाई ॥२७॥

॥ शब्द ३ ॥

राधास्वामी नाम सम्हार ।
चित से सुर्त प्यारी ॥ १ ॥
राधास्वामी का कर आधार ।
जग से हो न्यारी ॥ २ ॥
राधास्वामी रूप निहार ।
हिये बिच धर सारी ॥ ३ ॥

१—सूरज । २—निर्भय होकर । ३—स्पर्श कराया, पहुँचाया । ४—छू कर ।

राधास्वामी नाम पुकार।
निस दिन कर यारी[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सम्हार।
लाय घट में तारी[2] ॥ ५ ॥
राधास्वामी दरस निहार।
होय घट उजियारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्रेम सिंगार।
दिया मोहिं कर प्यारी ॥ ७ ॥
राधास्वामी पुर्ष अपार।
मेहर कर लिया तारी[3] ॥ ८ ॥
राधास्वामी प्रान अधार।
मिले मोहिं दया धारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी कुल करतार।
रची रचना सारी ॥ १० ॥
राधास्वामी पै जाऊँ बलिहार।
करी किरपा भारी ॥ ११ ॥
राधास्वामी से करले प्यार।
तन मन धन वारी[4] ॥ १२ ॥
राधास्वामी कुल दातार।
दया उन ले सारी[5] ॥ १३ ॥

१—प्रेम। २—पूरा ध्यान। ३—उबार। ४—निछावर करके। ५—सार, उत्तम।

राधास्वामी दीनदयाल ।
करें भौ से पारी ॥ १४ ॥
राधास्वामी की महिमा सार ।
गाऊँ सन्मुख ठाढ़ी ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

राधास्वामी मेरे प्यारे दाता ।
उन चरनन के रहूँ नित साथा ॥ १ ॥
राधास्वामी प्यारे पिता हमारे ।
उन के चरन सँग रहूँ सदा रे ॥ २ ॥
राधास्वामी प्यारे दीनदयाला ।
राधास्वामी सबको करें निहाला ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे अगम अनामी ।
राधास्वामी गत कस जाय बखानी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे दया करी री ।
खैंच सुरत मेरी चरन धरी[1] री ॥ ५ ॥
राधास्वामी भेद सुनाया सारा[2] ।
राधास्वामी दिया चरन में प्यारा ॥ ६ ॥
राधास्वामी लिया मोहि खैंच बुलाई ।
सतसँग में लिया आप लगाई ॥ ७ ॥

१—रख दी । २—असली ।

राधास्वामी खोल दई हिये आँखी ।
राधास्वामी मूरत घट में झाँकी[1] ॥ ८ ॥
राधास्वामी सेवा करूँ प्रेम से ।
राधास्वामी चरन धियाऊँ नेम[2] से ॥ ९ ॥
राधास्वामी प्यारे कुल करतारा ।
राधास्वामी सतगुरु परम उदारा ॥ १० ॥
राधास्वामी दया जीव जो चावे[3] ।
काल जाल का फंद कटावे ॥ ११ ॥
राधास्वामी जिस पर दया करें री ।
चरन ओट[4] दे पार करें री ॥ १२ ॥
राधास्वामी नाम गाय जो कोई ।
भेद पाय घर जावे सोई ॥ १३ ॥
राधास्वामी दीनी तपन[5] बुझाय ।
चरनन लग हुई सीतल आय ॥ १४ ॥
राधास्वामी सँग होय जीव उबार ।
राधास्वामी भरम निकालें झार[6] ॥ १५ ॥
राधास्वामी घट का पाट[7] खुलावें ।
करम धरम सब दूर हटावें ॥ १६ ॥
राधास्वामी धाम ऊँच से ऊँचा ।
राधास्वामी नाम सूच[8] से सूचा[8] ॥ १७ ॥

१—देखी । २—नियम । ३—चाहे । ४—शरण । ५—जलन, व्यथा ।
६—सभी । ७—परदा । ८—निर्मल, पवित्र ।

राधास्वामी मात पिता पति प्यारे।
राधास्वामी जीव और प्रान अधारे ॥१८॥
राधास्वामी देवें भक्ती साज।
चार लोक का बख़्शें राज ॥ १९ ॥
राधास्वामी बिन कुछ काज न सरई[1]।
राधास्वामी चरन चित्त अब धरई ॥ २० ॥
याते राधास्वामी २ गावो।
राधास्वामी बिन कोइ और न ध्यावो ॥२१॥

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी गुन गाऊँ मैं दम दम।
राधास्वामी दूर करी मेरी हमहम[2] ॥ १ ॥
राधास्वामी सा कोइ और न हमदम[3]।
राधास्वामी नाम जपूँ मैं हर दम ॥ २ ॥
राधास्वामी दिये निकार बिकारा[4]।
राधास्वामी लिया मोहि आज सुधारा ॥३॥
राधास्वामी सब बिध[5] तोड़ा मान[6]।
मारे ताक[7] बचन के बान ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीना सब बल तोड़।
राधास्वामी लीना मन को मोड़ ॥ ५ ॥

१—बनता। २—अहंकार। ३—मित्र। ४—दोष। ५—तरह। ६—अहंकार। ७—निशाना लगा कर।

राधास्वामी मुझ पर हुए दयाल ।
राधास्वामी लिया मोहिं आप सम्हाल ॥६॥
राधास्वामी भक्ती रीति सिखाई ।
राधास्वामी घट में प्रेम जगाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी जग से लिया छुड़ाई ।
सतसँग में मोहिं लिया मिलाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी करम धरम दिये काट ।
भरा प्रेम से मन का माट[1] ॥ ९ ॥
राधास्वामी दीना अगम सँदेस ।
सुरत शब्द का किया उपदेश ॥ १० ॥
राधास्वामी दीनी सुरत चढ़ाय ।
सहसकँवल में बैठी जाय ॥ ११ ॥
राधास्वामी बंकनाल दिखलाई ।
त्रिकुटी शब्द सुनाया आई ॥ १२ ॥
राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई ।
हंसन संग मानसर न्हाई ॥ १३ ॥
राधास्वामी किया महासुन पार ।
सेत[2] सूर निरखा उजियार ॥ १४ ॥
राधास्वामी सत्तलोक पहुँचाया ।
सत्तपुरुष का दरशन पाया ॥ १५ ॥

१—घड़ा । २—सफ़ेद ।

राधास्वामी अलख लोक दरसाई ।
अगम पुरुष का भेद जनाई ॥ १६ ॥
राधास्वामी वहाँ से अधर चढ़ाई ।
निज चरनन में लिया मिलाई ॥ १७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

राधास्वामी दरस दिया मोहिं जब से ।
राधास्वामी पर मोहित[1] हुई तब से ॥१॥
राधास्वामी भक्ति भाव मोहिं दीना ।
राधास्वामी चरन सरन में लीना ॥२॥
राधास्वामी घट का भेद जनाई ।
धुन सँग सूरत दीन लगाई ॥३॥
राधास्वामी सूरत[2] घट में चीन[3] ।
पियत अमीरस मन हुआ लीन ॥४॥
निस दिन घट में देख बिलास ।
राधास्वामी चरन हुई निज दास ॥५॥
राधास्वामी काट दिये सब भरम ।
गुरु भक्ती अब हुई निज धरम[4] ॥६॥
राधास्वामी चरन आसरा लीन ।
पिछली टेक सबहि तज दीन[5] ॥७॥

१—आशिक़ । २—स्वरूप । ३—पहचान कर । ४—कर्त्तव्य । ५—तज दीन—छोड़ दी ।

राधास्वामी सरन भरोसा भारी ।
राधास्वामी बिन नहिं और अधारी ॥८॥
राधास्वामी लिया अब मोहिं अपनाई ।
अटक भटक सब दीन छुड़ाई ॥९॥
राधास्वामी सेवा करत रहूँ री ।
राधास्वामी मुखड़ा[1] ताक रहूँ री ॥१०॥
राधास्वामी सोभा निरख हरखती ।
राधास्वामी दया घट माहिं परखती ॥११॥
राधास्वामी छबि पर तन मन वारूँ[2] ।
राधास्वामी चरन हिये में धारूँ ॥१२॥
राधास्वामी दया सुर्त घट में चढ़ती ।
जोत रूप लख आगे बढ़ती ॥१३॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत ।
राधास्वामी दया हुइ निरमल सूरत ॥१४॥
राधास्वामी दीना घाट चढ़ाय ।
सुन में जाय मानसर न्हाय ॥१५॥
राधास्वामी महासुन्न दिखलाय ।
मुरली धुन दई गुफा सुनाय ॥१६॥
राधास्वामी मेहर सुनी धुन बीन ।
भेद अलख और अगम का चीन[3] ॥१७॥

१—मुख । २—निछावर करूँ । ३—पहचाना ।

पूरन मेहर करी राधास्वामी ।
जाय लखा धुर[१] धाम अनामी ॥१८॥
राधास्वामी गुन कस करूँ बखान ।
राधास्वामी चरन अब मिला ठिकान[२] ॥१९॥

॥ शब्द ७ ॥

राधास्वामी प्यारे प्रेम निधान[३] ।
राधास्वामी प्यारे पुरुष सुजान ॥
प्रेम सहित राधास्वामी गुन गाऊँ ।
हर दम राधास्वामी नाम धियाऊँ ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
राधास्वामी किया मोर उपकार ।
राधास्वामी मोहिं उतारा पार ॥
राधास्वामी लें सब जीव उबार ।
जो कोइ सुमिरे नाम दयार[४] ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
दीन होय जो सरना आवे ।
आरत[५] कर राधास्वामी रिझावे[६] ॥
भेद पाय मन सुरत चढ़ावे ।
राधास्वामी दया अगम गत पावे ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ३ ॥

१—असली । २—विश्राम । ३—भंडार । ४—राधास्वामी दयाल का । ५—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ६—प्रसन्न करे ।

धर परतीत करे सतसंगा ।
राधास्वामी नाम सुमिर चित चंगा[1] ॥
सेवा करत चढ़े नित रंगा[2] ।
राधास्वामी दया भरम सब भंगा[3] ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ४ ॥

राधास्वामी बिन नहिं जीव उधार ।
खुले नहीं कभी मोक्ष दुआर ॥
राधास्वामी बिन पद लखे न सार[4] ।
भरमत रहे नित नौं[5] के वार[6] ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ॥ ५ ॥

याते सब जिव समझो भाई ।
राधास्वामी भेद लेव घट आई ॥
राधास्वामी से नित प्रीति बढ़ाई ।
राधास्वामी दें सब काज बनाई ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥

राधास्वामी से अब करूँ पुकारा ।
हे मेरे प्यारे पिता दयारा ॥
मुझ निकाम को लेव सम्हारा ।
राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

१—स्वस्थ । २—प्रेम का रंग । ३—नाश । ४—असली । ५—नौ इन्द्रियों के । ६—इसी तरफ़ ।

॥ शब्द ८ ॥

राधास्वामी नाम जपो मेरे भाई ।
राधास्वामी नाम सुनो घट आई ॥
हरदम चरनन सुरत लगाई ।
राधास्वामी गति[1] तब कुछ नज़र आई ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन हिये में धारो ।
ध्यान धरत उन रूप निहारो ॥
राधास्वामी करें तोहि जग पारो ।
राधास्वामी नाम कभी न बिसारो ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
राधास्वामी भेद नाद[2] दरसावें ।
राधास्वामी घर की राह लखावें ॥
मंज़िल[3] के सब नाम बतावें ।
धुन और रूप भिन्न कर गावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ३ ॥
राधास्वामी पिछली टेक छुड़ावें ।
राधास्वामी करम और भरम उड़ावें[4] ॥

१ – शक्ति । २—शब्द का । ३—रास्ते के । ४—छुड़ावें ।

राधास्वामी काल को दूर हटावें ।
करम काट जिव घर पहुँचावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मन को मोड़ धरावें[1] ।
राधास्वामी घट में सुरत चढ़ावें ॥
श्याम कंज का पाट[2] खुलावें ।
नभपुर जोत रूप दरसावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ५ ॥
राधास्वामी सुरत गगन पहुँचावें ।
तिरबेनी अश्नान करावें ।
महासुन्न के पार करावें ।
भँवरगुफा मुरली सुनवावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥
राधास्वामी संग अमरपुर आई ।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई ॥
अलख अगम के पार चढ़ाई ।
राधास्वामी २ दरशन पाई ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

१—मोड़ धरावें—संसार से हटा कर रखते हैं । २—परदा ।

॥ शब्द ९ ॥

गाओ गाओ री सखी नित राधास्वामी ।
ध्याओ २ री सखी नित राधास्वामी ।
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
सुनो २ री सखी धुन राधास्वामी ।
गुनो[1] २ री सखी गुन राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
देखो २ री सखी छबि[2] राधास्वामी ।
आओ २ री सरन सब राधास्वामी ।
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ३ ॥
परखो २ री सखी गत राधास्वामी ।
मानो २ री सखी मत राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ४ ॥
सेवो २ री सखी गुरू राधास्वामी ।
बसें २ री सखी धुर राधास्वामी ।
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ५ ॥
धारो २ री सखी बल राधास्वामी ॥
मिलो २ री सखी चल राधास्वामी ।
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥

१—विचारो । २—शोभा ।

निरखो २ री सखी पिया राधास्वामी ।
पाओ २ री सखी दया राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

राधास्वामी महिमा कस करूँ बरनन ।
राधास्वामी लिया लगा मोहिं चरनन ॥१॥
राधास्वामी काटे करम और धर्मा ।
राधास्वामी दूर किये सब भर्मा ॥ २ ॥
राधास्वामी जग से लिया निकार ।
राधास्वामी धोये सबहि बिकार[1] ॥ ३ ॥
राधास्वामी अपनी टेक बँधाई ।
किरतम[2] इष्ट सब दिये छुड़ाई ॥ ४ ॥
राधास्वामी दई मोहिं प्रीति चरन में ।
राधास्वामी दई परतीत सरन में ॥ ५ ॥
राधास्वामी भेद दिया निज नाम ।
राधास्वामी भक्ती दई निस्काम[3] ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीना चरन अधार ।
राधास्वामी किया भौजल से पार ॥ ७ ॥
राधास्वामी दुरमत[4] कीनी दूर ।
राधास्वामी दिया प्रेम भरपूर ॥ ८ ॥

१—दोष । २—कृत्रिम, नकली । ३—निष्काम, कामना रहित । ४—कुबुद्धि ।

राधास्वामी कीनी सूरत सूर[1] ।
बाजे घट में अनहद तूर[2] ॥ ९ ॥
राधास्वामी निस दिन नाम जपाई ।
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाई ॥ १० ॥
तिल अंदर सूरत को जोड़ ।
राधास्वामी सँग पहुँची नभ ओर[3] ॥ ११ ॥
राधास्वामी जोत रूप दरसाया ।
राधास्वामी त्रिकुटी शब्द सुनाया ॥ १२ ॥
राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई ।
हंसन संग मानसर न्हाई ॥ १३ ॥
राधास्वामी दया गुफा में जाय ।
सोहँग मुरली सुनी बनाय ॥ १४ ॥
राधास्वामी दया लखा सत रूप ।
सुरत धरा अब हंस सरूप ॥ १५ ॥
राधास्वामी दया अलखपुर झाँका ।
अगम पुरुष का दरशन ताका[4] ॥ १६ ॥
राधास्वामी मेहर गई धुर धाम ।
निरखा पूरन पुरुष अनाम ॥ १७ ॥
राधास्वामी कीना पूरन काज ।
प्रेम भक्ति का पाया साज[5] ॥ १८ ॥

१—बहादुर । २—बाजे । ३—तरफ़ । ४—देखा । ५—सामान ।

॥ शब्द ११ ॥

जो सच्चा परमारथी ।
तिसको यही उपाय ॥
कुल मालिक का खोज कर ।
राधास्वामी संगत आय ॥ १ ॥
कुल्ल मते सँसार के ।
थाक[1] रहे मग[2] माहिं ॥
राधास्वामी पद नहिं पाइया ।
रहे काल की ठाहिं[3] ॥ २ ॥
याते सतगुरु खोज कर ।
करना उन से प्रीत ॥
राधास्वामी मत का भेद ले ।
धर चरनन परतीत ॥ ३ ॥
उमँग सहित अभ्यास कर ।
मन और सुरत लगाय ॥
राधास्वामी दया कर ।
देवें शब्द सुनाय ॥ ४ ॥
मगन होय धुन शब्द सुन ।
नित्त भजन कर नेम[4] ॥

१—हार । २—रास्ते । ३—देश में । ४—नियम पूर्वक, क़ायदे से ।

राधास्वामी मेहर से।
जागे घट में प्रेम ॥ ५ ॥
सुरत चढ़े तब अधर में।
जोत रूप दरसाय ॥
राधास्वामी मेहर से।
त्रिकुटी शब्द सुनाय ॥ ६ ॥
सुन्न में देखा चाँदना।
भँवर सेत उजियार ॥
सत्त अलख और अगम लख।
राधास्वामी रूप निहार ॥ ७ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे।
परम गुरू दातार[1] ॥
दया करी मुझ दास पर।
दीना सरन अधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १२ ॥

राधास्वामी मेरे गुरु दातारे।
राधास्वामी मेरे प्रान पियारे ॥ १ ॥
अगम रूप राधास्वामी धारा।
राधास्वामी हुए अलख पुर्ष न्यारा ॥ २ ॥

१—दयाल।

राधास्वामी धारा सत्त सरूप ।
सोभा उनकी अजब अनूप[1] ॥ ३ ॥
राधास्वामी धरें संत अवतार ।
राधास्वामी करें जीव उद्धार ॥ ४ ॥
राधास्वामी घट का भेद सुनावें ।
सुरत शब्द मारग दरसावें ॥ ५ ॥
राधास्वामी शिक्षा जो जिव धारे ।
भौसागर के जावे पारे ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया बने निज करनी ।
सुरत शब्द में छिन छिन धरनी ॥ ७ ॥
दीन होय जो सरनी आवे ।
राधास्वामी दया मेहर तब पावे ॥ ८ ॥
याते राधास्वामी चरन धियाओ ।
राधास्वामी २ निस दिन गाओ ॥ ९ ॥

॥ शब्द १३ ॥

राधास्वामी चरन लगे मोहिं प्यारे ।
राधास्वामी सरन मिला आधारे ॥ १ ॥
राधास्वामी बचन सुने धर प्यार ।
मोह रही मैं देख दीदार[2] ॥ २ ॥

१—अद्भुत । २—स्वरूप ।

राधास्वामी सेव उमँग से करती ।
राधास्वामी भेद हिये में धरती ॥ ३ ॥
राधास्वामी गुन गाऊँ मैं उमँग से ।
राधास्वामी रूप धियाऊँ रँग[1] से ॥ ४ ॥
राधास्वामी भजन करूँ मैं चित से ।
राधास्वामी नाम जपूँ मैं हित[2] से ॥ ५ ॥
राधास्वामी २ कहत रहूँ री ।
राधास्वामी २ सुनत रहूँ री ॥ ६ ॥
राधास्वामी पर मैं हिया जिया[3] वारूँ[4] ।
जग भय लाज सभी तज डारूँ ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन लगाय लिया री ।
राधास्वामी मोहि निज भेद दिया री ॥८॥
राधास्वामी संग तपन हुई दूर ।
घट में बाजे अनहद तूर[5] ॥ ९ ॥
राधास्वामी संग हुआ मन चूर ।
राधास्वामी संग सुरत हुई सूर[6] ॥ १० ॥
राधास्वामी सँग पाई घट शांत ।
निरखी घट में धुन की क्रांत[7] ॥ ११ ॥
राधास्वामी किया परम[8] उपकार ।
भौजल से दिया पार उतार ॥ १२ ॥

१—प्रेम । २—प्रेम । ३—प्राण । ४—निछावर करूँ । ५—बाजे । ६—बहादुर । ७—शोभा । ८—सबसे बड़ा ।

॥ शब्द १४ ॥

राधास्वामी महिमा क्या कहूँ भारी।
राधास्वामी करें जीव उपकारी ॥१॥
राधास्वामी खैंच लिया चरनन में।
राधास्वामी रूप बसा नैनन में ॥२॥
राधास्वामी चरन मिला आलंबा[1]।
राधास्वामी बचन सुनत भ्रम भंगा[2] ॥३॥
राधास्वामी भेद दिया मोहि जबही।
राधास्वामी पर बल[3] गई मैं तबही ॥४॥
राधास्वामी दीनी सुरत लखाय।
राधास्वामी दीना शब्द जगाय ॥५॥
प्रीति बढ़ी राधास्वामी चरना।
धर परतीत गही उन सरना ॥६॥
राधास्वामी सत मत अजब निहारा।
राधास्वामी गति अति अगम अपारा ॥७॥
राधास्वामी लिया मेरा भाग जगाय।
राधास्वामी घट में शब्द सुनाय ॥८॥
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाय।
तिल पट में दई जोत लखाय ॥९॥

१—अवलंब, सहारा। २—नाश। ३—क़ुरबान।

धुन घंटा और संख सुनाय ।
राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाय ॥१०॥
गरज मृदंग मचाया शोर ।
राधास्वामी दिया काल बल तोड़ ॥११॥
राधास्वामी खोला दसवाँ द्वार ।
सुन धुन सूरत हो गई सार[1] ॥१२॥
राधास्वामी भँवरगुफा दिखलाय ।
सतपुर दीनी बीन सुनाय ॥१३॥
अलख अगम का नाका[2] तोड़ ।
राधास्वामी चरन सुरत लई जोड़ ॥१४॥
मेहर करी मोपै राधास्वामी ।
परस[3] चरन अतिकर मगनानी ॥१५॥

॥ शब्द १५ ॥

राधास्वामी गति कोई नहिं जाने ।
राधास्वामी मत कैसे पहिचाने ॥१॥
राधास्वामी भेद न कोई पावे ।
राधास्वामी चरन प्रीति कस[4] लावे ॥२॥
राधास्वामी मत है अति कर गहिरा ।
प्रेमी जन बिन कोइ न हेरा[5] ॥३॥

१—श्रेष्ठ । २—द्वार । ३—छू कर । ४—कैसे । ५—समझा ।

जगत भाव में रहे भुलाई ।
राधास्वामी मत की समझ न आई ॥४॥
याते सब को कहूँ बुझाई ।
राधास्वामी बिन जग में भरमाई ॥५॥
मौत खड़ी सिर ऊपर गाजे[1] ।
राधास्वामी बिन नहिं कोई बाचे ॥६॥
रोग सोग जग में सहो भारा ।
राधास्वामी बिन नहि और सहारा ॥७॥
याते चेतो समझो भाई ।
राधास्वामी सरन दौड़ कर आई ॥८॥
मान बड़ाई जग की त्याग ।
राधास्वामी चरन रहो तुम लाग ॥९॥
बचन सुनो हिरदे में धारो ।
छिन छिन राधास्वामी नाम पुकारो ॥१०॥
जग का भय और लाज बिसारो ।
राधास्वामी चरन प्रीति हिये धारो ॥११॥
सुरत शब्द का मारग ताको[2] ।
मन से राधास्वामी २ भाखो[3] ॥१२॥
राधास्वामी रूप ध्यान में लाय ।
निस दिन घट में प्रेम जगाय ॥१३॥

१—गरजती है । २—देखो । ३—कहो ।

तब होवे तुम जीव उबार।
राधास्वामी लीला देखो सार[1] ॥१४॥
हिम्मत बाँध गिरो चरनन में।
राधास्वामी दया करें छिन छिन में ॥१५॥

॥ शब्द १६ ॥

राधास्वामी अगम अनाम अपारे।
उन चरनन में रहूँ सदा रे ॥१॥
राधास्वामी माता पिता पियारे।
राधास्वामी बिन नहिं और अधारे ॥२॥
राधास्वामी संग चहूँ नित बास।
राधास्वामी सँग नित करूँ बिलास ॥३॥
राधास्वामी खोल दई हिये आँखी।
राधास्वामी चरन अमी रस चाखी ॥४॥
राधास्वामी भेद दिया मोहि घट का।
राधास्वामी चरन मोर मन अटका ॥५॥
राधास्वामी दिया काल को झटका।
मेट दिया झगड़ा खटपट का ॥६॥
राधास्वामी नाम धुंध उजियारा[2]।
राधास्वामी बिन जग बिच अँधियारा ॥७॥

१—उत्तम। २—धुंध उजियारा—प्रकाश ही प्रकाश।

राधास्वामी सेवा करत रहूँ री ।
राधास्वामी राधास्वामी जपत रहूँ री ॥८॥
राधास्वामी काल और करम हटाये ।
राधास्वामी संसय भरम नसाये ॥९॥
राधास्वामी सतसँग बचन सुनाये ।
राधास्वामी प्यारे सजन[1] सुहाये[2] ॥१०॥
राधास्वामी घट का भेद सुनाई ।
राधास्वामी धुन सँग सुरत लगाई ॥११॥
राधास्वामी तिल पट खोल दिखाई ।
राधास्वामी घंटा संख सुनाई ॥१२॥
राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाई ।
राधास्वामी चंद्र रूप दरसाई ॥१३॥
राधास्वामी भँवरगुफा दिखलाई ।
मुरली धुन जहाँ बजे सुहाई ॥१४॥
राधास्वामी सतगुरु रूप लखाया ।
राधास्वामी अलख अगम दरसाया ॥१५॥
राधास्वामी धाम मिला मोहिं भारी ।
महिमा ताकी[3] अकह अपारी ॥१६॥
दया हुई पद मिला इकंत[4] ।
राधास्वामी कीना मोहिं निचिंत ॥१७॥

१—प्रियतम । २—मनोहर । ३—उसकी । ४—न्यारा ।

॥ शब्द १७ ॥

राधास्वामी मत में धारा नीका[१] ।
राधास्वामी मत है सब का टीका[२] ॥१॥
राधास्वामी हैं अगम अनामा ।
राधास्वामी बसें अधर धुर धामा ॥२॥
ज्ञानी जोगी और सन्यासी ।
राधास्वामी मत परतीत न लाय ॥३॥
बेदांती और सूफ़ी भाई ।
राधास्वामी धाम का खोज न पाय ॥४॥
बुध चतुराई सबहिन कीनी ।
राधास्वामी चरन प्रीति नहिं लाय ॥५॥
विद्या में सब गये भुलाई ।
राधास्वामी भक्ती रीति न पाय ॥६॥
दृष्टी का कुछ साधन[३] करते ।
राधास्वामी जुगत न चित्त समाय ॥७॥
निरख प्रकाश फूल रहे मन में ।
राधास्वामी बिन सब धोखा खाय ॥८॥
यह प्रकाश माया की छाया ।
राधास्वामी नूर[४] धार नहिं पाय ॥९॥

१—अच्छा । २—तिलक, मुकट, सर्वश्रेष्ठ । ३—जुगत । ४—प्रकाश की ।

बाहरमुखी और मत सारे ।
राधास्वामी भेद न सुनिया आय ॥१०॥
काल फंद में सब मत फन्दे[1] ।
राधास्वामी बिन को जाल कटाय ॥११॥
मेरा भाग जगा अब भारी ।
राधास्वामी चरनन मिलिया आय ॥१२॥
दया मेहर से बचन सुनाये ।
राधास्वामी घट का भेद लखाय ॥१३॥
शब्द पकड़ सुर्त घट में चढ़ती ।
राधास्वामी चरन अमीरस पाय ॥१४॥
दया मेहर से एक दिन मुझको ।
राधास्वामी दें धुर घर पहुँचाय ॥१५॥

॥ शब्द १८ ॥

राधास्वामी चरन सीस मैं डारा ।
राधास्वामी कीन मोर उपकारा ॥१॥
राधास्वामी छिन में लेहिं सुधार ।
राधास्वामी दें पद अगम अपार ॥२॥
राधास्वामी सरन जीव जो आवें ।
राधास्वामी धुर[2] तक उन्हें निभावें[3] ॥३॥

१—फँसे। २—अन्त। ३—निर्वाह करें।

राधास्वामी मेहर न जाय बखानी।
राधास्वामी जम से जीव छुटानी ॥४॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर।
सोई घर जावे धुन सुन कर ॥५॥
राधास्वामी दीना अगम सँदेस।
दूर हटाया माया लेस ॥६॥
राधास्वामी घर की बाट[1] लखाई।
काल से लीने जीव बचाई ॥७॥
राधास्वामी देकर अपना हाथ।
राखा मोहि निज चरनन साथ ॥८॥
राधास्वामी अचरज दया करी री।
उमँग उमँग उन चरन पड़ी री ॥९॥
राधास्वामी धुर से मेहर कराई।
बालपने से चरन लगाई ॥१०॥
राधास्वामी दिया मोहि भक्ती दान।
घट में प्रीति जगाई आन ॥११॥
निस दिन रहूँ राधास्वामी अधार।
राधास्वामी करें मेरा काज सम्हार ॥१२॥
राधास्वामी चरन भरोसा भारी[2]।
राधास्वामी सरन सहारा भारी ॥१३॥

१—रास्ता। २—बड़ा।

राधास्वामी चरन बसे मेरे मन में ।
राधास्वामी नाम जपूँ नित तन में ॥१४॥
राधास्वामी महिमा क्या कहूँ गाई ।
मोहि निर्गुन[1] को लिया अपनाई ॥१५॥
आस बास[2] मेरा राधास्वामी चरना ।
लाज काज मेरा राधास्वामी सरना ॥१६॥
राधास्वामी बिन कोइ नज़र न आवे ।
राधास्वामी सँग चित थिरता[3] पावे ॥१७॥
मैं सब बिध[4] हूँ औगुनहारा ।
राधास्वामी दिया मोहि चरन सहारा ॥१८॥
राधास्वामी सब बिध दया करी री ।
गुन उनका कस गाऊँ अली[5] री ॥१९॥
मैं राधास्वामी बिन और न जानूँ ।
राधास्वामी बिन कोइ और न मानूँ ॥२०॥
कहाँ तक महिमा राधास्वामी गाऊँ ।
सीस चरन धर चुप्प रहाऊँ ॥२१॥

॥ शब्द १९ ॥

राधास्वामी चरन पर जाउँ बलिहार ॥१॥
राधास्वामी सरन मम[6] हिरदे धार ॥२॥

१—जिसमें कोई गुण नहीं है। २—विश्राम की जगह। ३—स्थिरता। ४—तरह। ५—सखी। ६—मेरे।

राधास्वामी दरस रहूँ नित्त निहार ॥३॥
राधास्वामी बचन सुनूँ चित्त सम्हार ॥४॥
राधास्वामी से पाऊँ भेद अपार ॥५॥
राधास्वामी उतारें भौजल पार ॥६॥
राधास्वामी सुनावें घंटा सार ॥७॥
राधास्वामी चढ़ावें गगन मँझार[1] ॥८॥
राधास्वामी लखावें चंद्र उजार[2] ॥९॥
राधास्वामी सुनावें सोहँग सार ॥१०॥
राधास्वामी दिखावें सत दरबार ॥११॥
राधास्वामी करावें अलख दीदार[3] ॥१२॥
राधास्वामी बढ़ावें अगम से प्यार ॥१३॥
राधास्वामी पहुँचावें निज घरबार ॥१४॥
राधास्वामी की रहूँ नित शुकरगुज़ार ॥१५॥
राधास्वामी मिटाये सब दुख झार[4] ॥१६॥

॥ शब्द २० ॥

भूल और भरम बढ़ा जग माँहि ।
संत मत राधास्वामी मानें नाँहि ॥१॥
जीव सब माया के बंदे[5] ।
बिना राधास्वामी रहें गंदे[6] ॥२॥

१—में। २—प्रकाश। ३—दर्शन। ४—सभी। ५—ग़ुलाम। ६—मैले।

काल के जाल फँसे सब आय ।
बिना राधास्वामी कौन छुटाय ॥३॥
भेद राधास्वामी मत कोई सुनाय ।
भरम कर नहिं सुनते चित लाय ॥४॥
खोज निज घर का दीना त्याग ।
बचन में राधास्वामी मन नहिं लाग ॥५॥
दुक्ख सुख सहते बहु भाँती[1] ।
चरन राधास्वामी बिन नहिं शांती ॥६॥
काल सँग नित धोखा खाते ।
दया राधास्वामी नहिं पाते ॥७॥
समझ तौ भी नहिं चित लाते ।
नाम राधास्वामी नहिं गाते ॥८॥
होय इन जीवन का तब काम ।
करें जब राधास्वामी मेहर तमाम[2] ॥९॥
भाग मैं अपना रहूँ सराय ।
लिया मोहिं राधास्वामी चरन लगाय ॥१०॥
मेहर से दीनी सुरत जगाय ।
दिया मोहिं राधास्वामी शब्द लखाय ॥११॥
सिखाई भाव भक्ति की रीत ।
दई मोहिं राधास्वामी, घट परतीत ॥१२॥

१—तरह । २—भरपूर ।

करूँ मैं निस दिन राधास्वामी संग ।
चरन में धारूँ ढंग उमंग ॥१३॥
करें राधास्वामी मेरी सहाय ।
चरन में दिन दिन प्रीति बढ़ाय ॥१४॥
गाऊँ मैं राधास्वामी गुन दम दम ।
नहीं कोइ राधास्वामी सा हमदम[1] ॥१५॥

॥ शब्द २१ ॥

राधास्वामी मुझ पर मेहर करी री ।
मन और सूरत पकड़ धरे री ॥१॥
राधास्वामी लिया मोहि खैंच बुलाय ।
राधास्वामी दिया घट भेद सुनाय ॥२॥
राधास्वामी लिया लगा चरनन से ।
राधास्वामी लिया छुटा करमन से ॥३॥
राधास्वामी दीनी भूल मिटाय ।
राधास्वामी दीने भरम बहाय ॥४॥
राधास्वामी दिया मोहि सतसंग ।
दिये जनाय मोहि भक्ती ढंग ॥५॥
राधास्वामी दीने सब मल[2] धोय ।
राधास्वामी दिये बिकार[3] सब खोय ॥६॥

१—दोस्त । २—मैल । ३—दोष ।

राधास्वामी छुटा लिया मोहि जग से ।
राधास्वामी बचा लिया मोहि ठग[1] से ॥७॥
राधास्वामी गुन नहिं बिसरूँ कबही ।
राधास्वामी चरन न छोड़ूँ कबही ॥८॥
राधास्वामी बचन बिचार रहूँ री ।
राधास्वामी नाम पुकार रहूँ री ॥९॥
राधास्वामी जुगत कमाय रहूँ री ।
राधास्वामी भक्ति जगाय रहूँ री ॥१०॥
राधास्वामी धुन में सुरत लगाऊँ ।
राधास्वामी बल मन गगन चढ़ाऊँ ॥११॥
राधास्वामी दया गुरु मूरत ताकूँ ।
राधास्वामी मया[2] सतगुरु पद झाँकूँ ॥१२॥
राधास्वामी बल मैं अलख लखूँ री ।
राधास्वामी दया घर अगम धसूँ[3] री ॥१३॥
राधास्वामी चरनन जाय मिलूँ री ।
राधास्वामी धुन में जाय रलूँ[4] री ॥१४॥

॥ शब्द २२ ॥

राधास्वामी परम पुरुष दातारे ।
राधास्वामी पूरन धनी[5] हमारे ॥ १ ॥

१—काल ठग । २—कृपा से । ३—प्रवेश करूँ । ४—मिलूँ । ५—मालिक ।

राधास्वामी सतगुरू परम पियारे ।
राधास्वामी प्रीतम प्रान अधारे ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन हिये में धारे ।
राधास्वामी सरन पकाय[1] सम्हारे ॥ ३ ॥
राधास्वामी भक्ती साज[2] दिया री ।
राधास्वामी जीव उबार लिया री ॥ ४ ॥
राधास्वामी मत क्या करूँ बड़ाई ।
निज घर सबसे ऊँच दिखाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी सहज जोग बतलाया ।
सुरत शब्द संजोग[3] कराया ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया हुआ मन निश्चल ।
राधास्वामी मेहर हुआ चित निरमल ॥७॥
राधास्वामी दई घट में परतीत ।
राधास्वामी चरनन बाढ़ी प्रीत ॥ ८ ॥
राधास्वामी घट का पाट[4] खुलाय ।
राधास्वामी अंतर बाट[5] लखाय ॥ ९ ॥
राधास्वामी दिये मन सुरत चढ़ाय ।
गगन सिंघासन बैठे जाय ॥ १० ॥
राधास्वामी बल गई सूरत दौड़ ।
पहुँची जाय सतपुर की ओर[6] ॥ ११ ॥

१—पक्की करके । २—सामान । ३—मेल । ४—परदा । ५—रास्ता । ६—तरफ़ ।

राधास्वामी लीना चरन मिलाय ।
धाम अनामी निरखा जाय ॥ १२ ॥
राधास्वामी दई मेरी सुरत सँवार ।
मेट दई सब जम की कार[1] ॥ १३ ॥
राधास्वामी के रहूँ नित गुन गाय ।
राधास्वामी दिया मेरा काज बनाय ॥ १४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

राधास्वामी धरा जग गुरू अवतार ।
राधास्वामी उतारें सबको पार ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन दृढ़ पकड़ूँ आज ।
राधास्वामी दिया मोहिं भक्ती साज ॥ २ ॥
राधास्वामी सुनाई घट में धुन ।
राधास्वामी चढ़ाई सूरत सुन ॥ ३ ॥
राधास्वामी सुनाई मुरली सार ।
राधास्वामी दिखाया सत दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी अलख और अगम लखाय ।
निज घर दीनी सुरत चढ़ाय ॥ ५ ॥
कर बिसराम हुई मगनानी[2] ।
राधास्वामी गुन नित रहूँ बखानी ॥ ६ ॥

१—काररवाई । २—प्रसन्न ।

सब जीवों को कहूँ सँदेस ।
राधास्वामी से मिल करो आदेस[१] ॥ ७ ॥
धाओ[२] पकड़ो राधास्वामी चरना ।
जस तस आओ राधास्वामी सरना ॥ ८ ॥
सतसँग कर राधास्वामी रँग धारो ।
मन की सबहि उचंग[३] बिसारो ॥ ९ ॥
राधास्वामी सम[४] नहिं कोइ हितकारी ।
राधास्वामी तुमको लेंहि सुधारी ॥ १० ॥
ले उपदेश करो सतसंग ।
राधास्वामी बल तज जगत कुरंग[५] ॥ ११ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में ।
राधास्वामी काज करें तब छिन में ॥ १२ ॥

॥ शब्द २४ ॥

राधास्वामी महिमा को सके गाय ।
बेद कतेब रहे भरमाय ॥ १ ॥
राधास्वामी भेद न कोई जाने ।
शेष महेश सब रहे भुलाने ॥ २ ॥
राधास्वामी धाम अति अगम अपारा ।
ब्रह्म और पारब्रह्म रहे वारा[६] ॥ ३ ॥

१—प्रणाम । २—दौड़ो । ३—तरंगें । ४—समान । ५—बुरे अंग । ६—इसी तरफ़ ।

नारद सारद बिश्नु महेशा ।
राधास्वामी पद कोइ सुना न देखा ॥४॥
राधास्वामी घर कोई प्रेमी जावे ।
जोत निरंजन दख़ल न पावे ॥ ५ ॥
जिसको मिलें भाग से सतगुरू ।
सोई जावे राधास्वामी धुर[1] पुर[2] ॥ ६ ॥
राधास्वामी देश है सबसे न्यारा ।
पहुँचे वहाँ सतगुरू का प्यारा ॥ ७ ॥
सतसँग कर सेवा को धावे ।
राधास्वामी चरनन ध्यान लगावे ॥ ८ ॥
सुरत शब्द का मारग धारे ।
निस दिन राधास्वामी नाम पुकारे ॥ ९ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावे दिन दिन ।
राधास्वामी चरन पै वारे[3] तन मन ॥ १० ॥
राधास्वामी आज्ञा चित से माने ।
राधास्वामी सम कोइ और न आने[4] ॥११॥
अस २ जो कोई कार[5] कमावे ।
दया मेहर राधास्वामी की पावे ॥ १२ ॥
राधास्वामी उसका काज बनावें ।
छिन २ सूरत अधर[6] चढ़ावें ॥ १३ ॥

१—ऊँचे से ऊँचे । २—स्थान । ३—निछावर करे । ४—समझे । ५—कमाई ।
६—अंतर में ।

इक दिन पहुँचावें धुर धाम ।
राधास्वामी चरन मिलै बिस्राम ॥ १४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

राधास्वामी नाम की महिमा भारी ।
राधास्वामी धाम अथाह[1] अपारी ॥१॥
राधास्वामी धार उतर कर आई ।
सत्तलोक तक रचन[2] रचाई ॥२॥
राधास्वामी दयाल देस रच लीना ।
महिमा वाकी[3] काहु[4] नहिं चीना[5] ॥३॥
ऐसा अद्भुत राधास्वामी देसा ।
नहिं ब्यापै वहाँ काल कलेशा ॥४॥
सब जीवों को कहूँ सुनाई ।
राधास्वामी पद का निश्चय लाई ॥५॥
सतसँग करो बूझ[6] तब पाई ।
करनी कर जग भरम नसाई[7] ॥६॥
दीन होय धारो उपदेशा ।
चरन पकड़ जाओ राधास्वामी देसा ॥७॥
राधास्वामी की धारो जुगती ।
तब पाओ तुम सच्ची मुक्ती ॥८॥

१—अपार । २—रचना, सृष्टि । ३—उसकी । ४—किसी ने । ५—पहचानी ।
६—समझ । ७—नाश करो ।

मेरे मन आनंद घनेरा[१] ।
राधास्वामी चरन हुआ मैं चेरा[२] ॥९॥
जब से राधास्वामी चरन गहे[३] री ।
करम भरम सब आप दहे[४] री ॥१०॥
सुरत शब्द का मारग ताकूँ ।
राधास्वामी दया अधर घर झाँकूँ ॥११॥
राधास्वामी दाता दीनदयाला ।
मेहर करी मोहि किया निहाला ॥१२॥

॥ शब्द २६ ॥

राधास्वामी सम कोइ मित्र न जग में ।
राधास्वामी प्रीति धसी रग रग[५] में ॥१॥
राधास्वामी चरन मेरे चित्त बसे री ।
राधास्वामी बिन जिव फाँस फँसे री ॥२॥
राधास्वामी दिया मोहि शब्द सिंगार ।
राधास्वामी लई मेरी सुरत निकार ॥३॥
राधास्वामी दिये मेरे बंधन तोड़ ।
राधास्वामी लिया मन चरनन जोड़ ॥४॥
राधास्वामी दई जम फाँसी काट ।
राधास्वामी खोली घट में बाट[६] ॥५॥

१—बहुत। २—दास। ३—पकड़े। ४—जल गए। ५—रग रग—नस नस यानी शरीर के छोटे से छोटे अंग में। ६—रास्ता।

राधास्वामी मेट दिये कल[1] अंक[2] ।
राधास्वामी चित से किया निसंक[3] ॥६॥
राधास्वामी दिया शब्द परखाय ।
घट में सूरत अधर चढ़ाय ॥७॥
राधास्वामी खोल दिये हिये नैना ।
मोहि सुनाये घट में बैना[4] ॥८॥
राधास्वामी पिरथम पाट खुलाया ।
जोत निरंजन पद दरसाया ॥९॥
राधास्वामी वहाँ से गगन चढ़ाई ।
शब्द गुरू से मेल कराई ॥१०॥
राधास्वामी अक्षर पुरुष लखाया ।
सुन में रारँग शब्द सुनाया ॥११॥
राधास्वामी भँवरगुफा दरसाई ।
मोहन मुरली बजे सुहाई ॥१२॥
राधास्वामी दया फिर सतपुर लीना ।
अलख अगम का दरशन कीना ॥१३॥
राधास्वामी वहाँ से अधर चढ़ाई ।
निज चरनन में लिया मिलाई ॥१४॥
क्या बिध कर[5] राधास्वामी गुन गाऊँ ।
हार मान अब चरन समाऊँ ॥१५॥

१—काल के । २—निशान, दाग । ३—निडर । ४—शब्द । ५—क्या बिध कर—किस तरह ।

बचन दसवाँ ॥

प्रेम बिलास–भाग दूसरा

सुरतिया

॥ चेतावनी का अंग ॥

॥ शब्द १ ॥

सुरतिया गाय रही ।
　नित राधास्वामी नाम दयाल ॥ १ ॥
नाम बिना कोइ ठौर[1] न पावे ।
　नाम बिना सब बिरथा घाल[2] ॥ २ ॥
नामहिं से नामी को लखिये ।
　नाम करे सब की प्रतिपाल ॥ ३ ॥
नाम कहो चाहे शब्द बखानो ।
　शब्द का निरखो नूर[3] जमाल[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी शब्द खोजती चाली ।
　सुन सुन धुन अब हुई निहाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सुरतिया रही पुकार पुकार ।
　सरन में सतगुरु के आओ ॥ १ ॥

१—जगह । २—काररवाई । ३—प्रकाश । ४—सुंदर रूप ।

जो यह बचन न मानो मेरा ।
तो जमपुर जाय पछताओ ॥ २ ॥
बारम्बार धरो तुम देही ।
दुख सुख सँग नित भरमाओ ॥ ३ ॥
जीव काज अपना कुछ सोचो ।
संत चरन में चित लाओ ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की करो कमाई ।
घट अंतर कुछ सुख पाओ ॥ ५ ॥
गुरु चरनन में करो पिरीती[1] ।
भाग आपना जगवाओ ॥ ६ ॥
सेवा कर प्रसन्नता लेवो ।
सुरत अधर में चढ़वाओ ॥ ७ ॥
जीव काज तब होवे तुम्हरा ।
राधास्वामी चरनन जाय समाओ ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुरतिया सुमिर रही ।
सतगुरु का छिन छिन नाम ॥ १ ॥
प्रेम अंग ले पकड़े चरना ।
बिसर[2] गये सब जग के काम ॥ २ ॥

१—प्रीति । २—भूल ।

सतसँग में चित अति हुलसाना ।
पाया वहाँ आराम ॥ ३ ॥
गुरू दर्शन बिन चैन न आवे ।
निरखत रहूँ छबि आठों जाम[1] ॥ ४ ॥
हित[2] कर करत बीनती गुरू से ।
देव गुरू अस अमृत जाम[3] ॥ ५ ॥
रहूँ अचिंत होय मस्ताना ।
सुरत चढ़ाय लखूँ गुरू धाम ॥ ६ ॥
मेहर करो अस राधास्वामी प्यारे ।
मैं तुम्हरी चेरी बिन दाम[4] ॥ ७ ॥
मेहर करी गुरू भेद सुनाया ।
शब्द शब्द का कहा मुक़ाम ॥ ८ ॥
बिरह अंग ले करो अभ्यासा ।
सुरत लगाओ होय निस्काम[5] ॥ ९ ॥
सहज सहज चढ़ चलो अधर में
निरखो त्रिकुटी गुरू का ठाम[6] ॥ १० ॥
वहाँ से सतगुरू दरस निहारो ।
राधास्वामी चरन करो बिसराम ॥ ११ ॥
दया मेहर बिन काज न होई ।
राधास्वामी दया लेव सँग साम[7] ॥ १२ ॥

१—पहर । २—प्रेम । ३—प्याला । ४—क़ीमत । ५—निष्काम, कामना रहित । ६—स्थान । ७—सहायता ।

॥ शब्द ४ ॥

सुरतिया छोड़ चली ।
अब छिन छिन माया देस ॥ १ ॥
नैन नगर में बसी आय कोइ दिन ।
पाया करम कलेस ॥ २ ॥
करम भरम में बहु बिध उलझी[1] ।
भूल गई निज देस ॥ ३ ॥
जाल बिछाया काल कराला ।
फाँस लिये जिव गहि कर केस[2] ॥ ४ ॥
कोई जिव बचने नहिं पावे ।
बिन सतगुरु उपदेस ॥ ५ ॥
याते प्यारी कहना मानो ।
कर गुरु को आदेस[3] ॥ ६ ॥
दीन होय ले भेद गुरू से ।
सुरत शब्द संदेस ॥ ७ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
पहुँचो पद निज शेश[4] ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सुरतिया मेल करत ।
गुरु प्रेमी जन के साथ ॥ १ ॥

१—फँसी । २—बाल । ३—प्रणाम । ४—अंतिम ।

दीन दिल गुरु सँग करती हेत[1]।
प्रेमी जन की सुन सुन बात ॥ २ ॥
भक्ति की रीती दई बताय।
करत गुरु सेवा दिन और रात ॥ ३ ॥
चित्त धर सतसँग के बचना।
चरन गुरु हिरदे में नित ध्यात ॥ ४ ॥
शब्द धुन से रही चित को जोड़।
निरख गुरु लीला घट मुसक्यात ॥ ५ ॥
हुआ अस निश्चय मन मेरे।
बिना गुरु सबही धोखा खात ॥ ६ ॥
प्रीति जो गुरु चरनन लावे।
साध सँग में जो चित्त बसात ॥ ७ ॥
वही जन मेहर गुरू पावे।
बचावे काल करम की घात[2] ॥ ८ ॥
उलट मन चढ़े गगन पर धाय।
शब्द में सूरत सहज समात ॥ ९ ॥
सरन राधास्वामी हिरदे धार।
सत्तपुर जावे पावे शांत ॥ १० ॥

१—प्रेम। २—चोट।

॥ शब्द ६ ॥

सुरतिया दीन हुई ।
लख[1] राधास्वामी दया अपार ॥ १ ॥
जगत भाव में रही भरमाती ।
धर मन में अहंकार ॥ २ ॥
मान बड़ाई भोग बासना ।
याही कारन करती कार[2] ॥ ३ ॥
परमारथ की सुध[3] नहिं लाती ।
गुरु भक्तन सँग किया न प्यार ॥ ४ ॥
निंद्या कर कर पाप बढ़ाती ।
मन के छोड़त नहीं बिकार ॥ ५ ॥
औसर पाय मिली सतगुरु से ।
बचन सुनाए गुरु ने सार[4] ॥ ६ ॥
जनम मरन नरकन के दुख सुख ।
गुरु ने दरसाये कर प्यार ॥ ७ ॥
तुच्छ देख इंद्रिन के भोगा ।
झूठा लागा जगत असार[5] ॥ ८ ॥
दीन चित्त होय पड़ी गुरु चरना ।
मेहर करी सतगुरु दातार ॥ ९ ॥

१—देखकर। २—संसारी कारवाई। ३—याद। ४—यथार्थ। ५—व्यर्थ।

भेद जनाय कराया सतसँग ।
सुरत लगी अब धुन की लार[1] ॥ १० ॥
चरन सरन गुरु हिये में धारी ।
राधास्वामी मेहर से कीन्हा पार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सुरतिया सोच करत ।
अब किस बिध[2] उतरूँ पार ॥ १ ॥
गुरु भेदी ने पता बताया ।
सुरत शब्द मारग रहो धार ॥ २ ॥
सतसँग करो बचन चित धारो ।
मन इंद्रिन को रोको झार[3] ॥ ३ ॥
गुरू परतीत प्रीति हिये धर कर ।
करनी करो सम्हार ॥ ४ ॥
सुन अस बचन उमँग हुई भारी ।
पहुँची गुरु दरबार ॥ ५ ॥
बचन सुनत मन निश्चय बाढ़ा ।
संशय भरम निकार ॥ ६ ॥
भेद पाय अभ्यास करूँ नित ।
तन मन गुरु पर वार[4] ॥ ७ ॥

१—साथ । २—तरह । ३—सभी को । ४—निछावर करके ।

सरन सम्हार चरन दृढ़ पकड़ूँ ।
सहजहि होय उद्धार ॥ ८ ॥
राधास्वामी गति मति अगम अपारा ।
राधास्वामी शब्द सार का सार ॥ ९ ॥
यह निज घर बड़भागी पावे ।
सब से होय नियार[1] ॥ १० ॥
मुझ ग़रीब की ख़ूब सुधारी ।
राधास्वामी परम पुरुष दातार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सुरतिया जाग उठी ।
गुरु नाम सुमिर धर प्यार ॥ १ ॥
बहु दिन जग सँग भरमत बीते ।
खोज न कीन्हा निज घर बार ॥ २ ॥
मन इंद्री सँग रही भुलानी ।
सुध नहिं कीनी को करतार[2] ॥ ३ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दया कर ।
उन घट भेद सुनाया सार[3] ॥ ४ ॥
काल करम बहु अटक लगाये ।
मन और सुरत बहत रहे वार[4] ॥ ५ ॥

१—अलग । २—कर्त्ता, मालिक । ३—असली । ४—इसी तरफ़ ।

गुरु दयाल मेरी फिर सुध लीनी[1] ।
खैंच लगाया सतसँग लार[2] ॥ ६ ॥
अमृत रूपी बचन सुनाये ।
दरशन दे कीना निरबार[3] ॥ ७ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत हिये में ।
चरन सरन बख़्शा आधार[4] ॥ ८ ॥
सुमिरन ध्यान शब्द अभ्यासा ।
जुगत सुनाई किरपा धार ॥ ९ ॥
राधास्वामी रूप धियाऊँ निस दिन ।
राधास्वामी गाऊँ नाम अपार ॥ १० ॥
राधास्वामी दया संग ले घट में ।
सुरत चढ़ाऊँ गगन मँझार[5] ॥ ११ ॥
सतपुर सत्त शब्द धुन सुन कर ।
परसूँ[6] राधास्वामी चरन सम्हार ॥ १२ ॥

॥ शब्द ९ ॥

सुरतिया कहत सुनाय सुनाय ।
चरन गुरु गहो सम्हार सम्हार ॥ १ ॥
क्यों माया सँग भूले भाई ।
क्यों निज घर को दिया बिसार[7] ॥ २ ॥

१—सुध लीनी—ख़बर ली । २—साथ । ३—छुटकारा । ४—सहारा । ५—में । ६—स्पर्श करूँ । ७—भुला ।

यह ग़फ़लत फिर बहुत सतावे।
जल्दी करो होव हुशियार ॥ ३ ॥
खोजो सतगुरु अधर ठिकानी।
उनके चरन में लाओ प्यार ॥ ४ ॥
प्रीति भाव से करो सतसंगत।
बचन सुनो हिये उमँग सम्हार ॥ ५ ॥
भेद पाय तुम धरो धियाना।
निरखो घट में एक गुलज़ार[1] ॥ ६ ॥
शब्द गुरू सँग आरत करना।
घट में अद्भुत दरस निहार ॥ ७ ॥
गुरु का बल ले चढ़ो अधर में।
सुन और महासुन्न के पार ॥ ८ ॥
मुरली बीन बजावत चाली।
पहुँची अलख अगम दरबार ॥ ९ ॥
राधास्वामी दरस निहारत।
चरन सरन गह बैठी हार ॥ १० ॥
ऐसी दुर्लभ भक्ति कमाई।
राधास्वामी कीन्ही दया अपार ॥ ११ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन।
सहज लिया मोहि अधम उबार ॥ १२ ॥

१—चमन।

॥ शब्द १० ॥

सुरतिया अटक रही ।
धर माया प्यार ॥ १ ॥
अनेक पदारथ और रस भोगा ।
काल रचाये कर बिस्तार[1] ॥ २ ॥
मन इच्छा दोउ प्यादे[2] उसके ।
रहें सुरत पर नित असवार ॥ ३ ॥
जित[3] चाहें तित[4] उसे घुमावें ।
भरमत रहे सदा नौ[5] वार ॥ ४ ॥
सुरत अजान न बूझे फंदा[6] ।
रच पच[7] माया बिछाया जार[8] ॥ ५ ॥
निज घर की कोइ सुध नहिं पावे ।
माया के नहिं जावे पार ॥ ६ ॥
जो जिव संत सरन में आवें ।
उनका मेहर से करें उबार ॥ ७ ॥
मेरा भाग जगा अब धुर का ।
राधास्वामी संगत पाई सार ॥ ८ ॥
मेहर करी सतसंग मिलाया ।
सूझ बूझ दई किरपा धार ॥ ९ ॥

१—फैलाव । २—गुलाम । ३—जिधर । ४—उधर । ५—नौ इंद्रियों के । ६—जाल । ७—रच पच—अच्छी तरह, होशियारी से । ८—जाल ।

निज घर का मोहिं भेद सुनाया ।
　सुरत शब्द दिया मारग सार ॥ १० ॥
बिरह उमँग ले करूँ कमाई ।
　चरन सरन गुरु हिये सम्हार ॥ ११ ॥
राधास्वामी दया मेहर से अपनी ।
　सहज उतारें मुझ को पार ॥ १२ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सुरतिया मान[1] तजत ।
　आज सतसँग में रस पाय ॥ १ ॥
मन का सँग कर हुई दिवानी ।
　भोगन में लिपटाय ॥ २ ॥
जगत बासना नित्त बढ़ावत ।
　दुक्ख सहत फिर फिर पछताय ॥ ३ ॥
करम धरम सँग हुई बावरी[2] ।
　देवी देव पुजाय ॥ ४ ॥
तीरथ बर्त जगत ब्योहारा ।
　नित्त करे सिर करम चढ़ाय ॥ ५ ॥
संतन की बानी नहिं पढ़ती ।
　मोह जाल में रही फँसाय ॥ ६ ॥

१—अहंकार । २—पागल ।

भाग जगा गुरु सन्मुख आई।
निज घर का उन भेद सुनाय ॥ ७ ॥
जग का झूठा खेल पसारा।
बहु बिधि[1] गुरु ने दिया समझाय ॥ ८ ॥
समझ बूझ सतसँग में लागी।
मान बड़ाई तज दई आय ॥ ९ ॥
गुरु से प्रीति करत अब साँची।
सुरत शब्द की कार[2] कमाय ॥ १० ॥
घट में निरख बिलास नवीना।
गुरु चरनन परतीत बढ़ाय ॥ ११ ॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर।
लीना अपना काज बनाय ॥ १२ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सुरतिया बोल रही।
जीवन को हेला मार[3] ॥ १ ॥
जो चाहो सच्चा निरवारा[4]।
सतगुरु सरन आओ धर प्यार ॥ २ ॥
सतसँग कर गुरु बचन सम्हारो।
जग का भय और भाव निकार ॥ ३ ॥

१—तरह। २—जुगत। ३—हेला मार—पुकार कर। ४—मोक्ष।

राधास्वामी चरनन धारो आसा ।
टेक पुरानी सब तज डार ॥ ४ ॥
करम भरम सब निस्फल जानो ।
बाहरमुख करनी देव बिसार[1] ॥ ५ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
घट में करनी करो सम्हार ॥ ६ ॥
भोग बासना चित से टारो[2] ।
त्यागो मन के सबही बिकार[3] ॥ ७ ॥
धर परतीत करो गुरु सेवा ।
दिन दिन प्रेम जगाओ सार ॥ ८ ॥
तब मन सुरत लगें घट धुन में ।
देखें अंतर बिमल बहार ॥ ९ ॥
गुरु बल हिये धर चढ़ें अधर में ।
मगन होंय सुन धुन झनकार ॥ १० ॥
शब्द शब्द का निरख प्रकाशा ।
पहुँचे सुरत सेत[4] दरबार ॥ ११ ॥
तब होवे सच्चा उद्धारा ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ १२ ॥

१—भुला । २—हटाओ । ३—दोष । ४—श्वेत प्रकाश वाले ।

॥ शब्द १३ ॥

सुरतिया अमर हुई ।
अब संत धाम में जाय ॥ १ ॥
या जग में कोई ठहर न पावे ।
काल सबन को खाय ॥ २ ॥
धन और मान भोग इन्द्री के ।
छिनभंगी[1] कोइ थिर[2] न रहाय ॥ ३ ॥
याते जतन करो सब कोई ।
जासे जनम मरन छुट जाय ॥ ४ ॥
सुरत शब्द बिन बचे न कोई ।
बिन सतगुरु कोइ बाट[3] न पाय ॥ ५ ॥
जब लग सुरत न पहुँचे सतपुर ।
काल देस में रहे भरमाय ॥ ६ ॥
याते चरन गहो सतगुरु के ।
दीन होय उन सरनी आय ॥ ७ ॥
सेवा कर सतसँग कर उनका ।
परमारथ का भाग जगाय ॥ ८ ॥
प्रीति प्रतीति धार उन चरना ।
सुरत शब्द में नित्त लगाय ॥ ९ ॥

१—क्षणभंगुर, न ठहरने वाले । २—स्थिर । ३—रास्ता ।

परम पुरुष राधास्वामी प्यारे ।
दया करें सुर्त अधर चढ़ाय ॥ १० ॥
सतपुर जाय अमी रस पीवे ।
मगन होय धुन बीन बजाय ॥ ११ ॥
जनम मरन की त्रास[1] नसाई[2] ।
राधास्वामी धाम मिला निज आय ॥ १२ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरतिया लिपट रही ।
मन इंद्रियन नाल[3] ॥ १ ॥
काल शिकारी घेरा डाला ।
माया आन बिछाया जाल ॥ २ ॥
सब जिव उनकी फाँस फँसाने ।
भूल गये निज घर की चाल ॥ ३ ॥
करम भरम सँग हुए बावरे[4] ।
चौरासी में पड़े बेहाल ॥ ४ ॥
करम भोग दुख सहें घनेरा[5] ।
को काटे उनका जंजाल ॥ ५ ॥
जो जिव आये सतगुरु सरना ।
छूट गये उनके दुख साल[6] ॥ ६ ॥

१—डर, भय । २—मिट गई । ३—साथ । ४—मतवाले । ५—बहुत । ६—कष्ट ।

मेरा भाग उदय हुआ भारी ।
 सतगुरु संत चरन परसाल[1] ॥ ७ ॥
निज घर भेद दया से दीना ।
 सुरत शब्द मारग दरसाल[2] ॥ ८ ॥
सतसँग में मोहिं लिया मिलाई ।
 अचरज बचन सुनाये हाल[3] ॥ ९ ॥
दृढ़ परतीत धरी चरनन में ।
 मिला प्रेम का धन और माल ॥ १० ॥
दीन निरख मोहिं राधास्वामी प्यारे ।
 मेहर दया से सुरत चढ़ाल[4] ॥ ११ ॥
नभ में होय गई गगनापुर ।
 मार दिया दल[5] काल कराल[6] ॥ १२ ॥
अनहद बाजे बाजन लागे ।
 निरख रही स्रुत सूरज लाल ॥ १३ ॥
अक्षर धुन सुन आगे चाली ।
 केल करत वहाँ हंसन नाल[7] ॥ १४ ॥
भँवरगुफा चढ़ अधर सिधारी[8] ।
 हैराँ[9] रहा देख महाकाल ॥ १५ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा ।
 मिल गये राधास्वामी पुरुष दयाल ॥ १६ ॥

१—स्पर्श किए। २—दिखलाया। ३—तुरंत ही। ४—चढ़ाई। ५—फ़ौज। ६—भयानक। ७—साथ। ८—गई। ९—परेशान, आश्चर्य में।

आरत कर गह राधास्वामी चरना ।
आनँद पाय हुई तृप्ताल[1] ॥ १७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सुरतिया चेत रही ।
गुरु बचन सम्हार सम्हार ॥ १ ॥
परमारथ चित धार हेत[2] कर ।
पढ़त सुनत रही बानी सार ॥ २ ॥
राधास्वामी दया करी मोपै धुर से ।
दीना मुझको अगम बिचार ॥ ३ ॥
समझ समझ कर सुने बचन गुरु ।
बूझा[3] परम तत्त[4] निज सार ॥ ४ ॥
शब्द बिना नहिं मारग सूझे ।
प्रेम बिना नहिं खुले दुआर ॥ ५ ॥
बिन सतगुरु कोइ राह न पावे ।
गत मत उनकी अगम अपार ॥ ६ ॥
ऐसी समझ धार कर हिये में ।
लीना राधास्वामी चरन अधार ॥ ७ ॥
और तरह कोइ बाच न पावे ।
कर्म और काल बड़े बरियार[5] ॥ ८ ॥

१—तृप्त, संतुष्ट । २—प्रेम । ३—समझा । ४—परम तत्त—परम तत्त्व, पूर्ण सत्य । ५—जबरदस्त ।

नीच ऊँच जोनी में भरमे।
कभी न होवे जीव उबार ॥ ९ ॥
याते सबको कहूँ सुनाई।
सरन गहो सतगुरु दरबार ॥ १० ॥
मैं बड़ भाग कहूँ क्या अपना।
राधास्वामी लिया मोहि गोद बिठार ॥ ११ ॥
बचन सार[1] मोहि भाख[2] सुनाये।
दरस दिया निज किरपा धार ॥ १२ ॥
सुरत शब्द का भेद अमोला।
सुमिरन ध्यान जुगत कही सार ॥ १३ ॥
मन इन्द्री को रोक अँदर में।
शब्द की परखूँ घट में धार ॥ १४ ॥
मन चंचल की चाल निहारूँ।
दूर हटाऊँ सभी बिकार ॥ १५ ॥
प्रीति प्रतीति जगाय हिये में।
नित प्रति निरखूँ नई बहार ॥ १६ ॥
राधास्वामी बल हिरदे धर अपने।
सुरत चढ़ाऊँ गगन मँझार[3] ॥ १७ ॥
सहसकँवल त्रिकुटी लख लीला।
सुन्न और महासुन्न धस[4] पार ॥ १८ ॥

१—असली। २—कह कर। ३—में। ४—प्रवेश करके।

भँवरगुफा का ताक़[१] उघारूँ[२] ।
सत्त अलख और अगम निहार ॥ १९ ॥
राधास्वामी धाम अपारा ।
परस[३] चरन रहूँ आरत[४] धार ॥ २० ॥
राधास्वामी परम पुरुष दातारा ।
चरनन में लिया मोहि कर प्यार ॥ २१ ॥

भेद का अंग

॥ शब्द १६ ॥

सुरतिया लाल हुई ।
चढ़ गगन निरख गुरु रूप ॥ १ ॥
घंटा संख गरज धुन सुन कर ।
छोड़ दिया भौ कूप[५] ॥ २ ॥
आसा तृश्ना मनसा जग की ।
फटक[६] दई ले गुरु का सूप ॥ ३ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
निरखा सूरज सेत स्वरूप ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष का दर्शन करके ।
पहुँची राधास्वामी धाम अरूप[७] ॥५॥

१—छोटा दरवाज़ा । २—खोलूँ । ३—छू कर । ४—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ५—कुआँ । ६—छाँट । ७—जिसका रूप न हो ।

॥ शब्द १७ ॥

सुरतिया झाँक रही।
गुरु दरस अनूप[1] ॥ १ ॥
मन और सुरत साध[2] कर घट में।
नभ चढ़ निरखा जोत स्वरूप ॥ २ ॥
अधर चढ़त पहुँची गगनापुर।
जहाँ छाँह नहिं खिल रही धूप ॥ ३ ॥
भँवरगुफा के हो गई पारा।
निरखा जाय पुरुष सतरूप ॥ ४ ॥
बिन सतगुरु यह धाम[3] न पावे।
जीव पड़े सब माया कूप ॥ ५ ॥
अलखपुरुष के दरशन करके।
अगम पुरुष निरखा कुल भूप ॥ ६ ॥
अचरज दरशन राधास्वामी पाये।
अकह अपार अनाम अरूप[4] ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरतिया झूल रही।
आज धरन गगन के बीच ॥ १ ॥
घेर फेर मन घट में लाई।
सुरत अधर में खींच ॥ २ ॥

१—अद्भुत। २—रोक। ३—स्थान। ४—जिसका रूप न हो।

गगन तख़्त पर गुरू बिराजे ।
मेहर करी मोहि लीना ईंच[1] ॥ ३ ॥
माया दल थक रहा डगर[2] में ।
काल करम दोउ डाले भींच[3] ॥ ४ ॥
होय निसंक[4] चढ़ूँ नित घट में ।
सैर करूँ पद ऊँच और नीच ॥ ५ ॥
सुन सतशब्द गई अमरापुर ।
छोड़ दई संगत मन नीच ॥ ६ ॥
घट में भक्ती पौद खिलानी ।
प्रेम रूप जल से रही सींच ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन पाय बिश्रामा ।
निर्भय सोऊँ आँखें मीच[5] ॥ ८ ॥

॥ शब्द १९ ॥

सुरतिया बिगस[6] रही ।
लख कँवल कली ॥ १ ॥
उलटत दृष्टि जोड़ तिल अंदर ।
नभ की ओर चली ॥ २ ॥
सहसकँवल जाय बासा कीना ।
जहाँ वहाँ जोत बली[7] ॥ ३ ॥

१—खींच । २—रास्ते । ३—डाले भींच—दबा कर चूर कर दिये । ४—निडर । ५—बंद करके । ६—खिल । ७—जलती है ।

घंटा संख तजी धुन दोई ।
　निरखी आगे गगन गली[1] ॥ ४ ॥
माया थाक रही मग माँहीं ।
　हार रहा अब काल बली ॥ ५ ॥
अक्षर निःअक्षर के पारा ।
　सत्त शब्द में जाय रली[2] ॥ ६ ॥
संत मते को सार न जानी ।
　बेद कतेब रहे हार तली[3] ॥ ७ ॥
अलख अगम का रूप निहारत ।
　राधास्वामी चरनन जाय मिली ॥ ८ ॥
मेहर दया जस मोपर कीनी ।
　गुन उनका कस गाऊँ अली[4] ॥ ९ ॥

॥ शब्द २० ॥

सुरतिया गगन चढ़ी ।
　　सुन धुन झनकार ॥ १ ॥
बिरह दरद ले सन्मुख आई ।
　　लीना भेद सम्हार ॥ २ ॥
मन को मोड़ इंद्रिरी रोकत ।
　　दिये बिकार निकार ॥ ३ ॥

१—रास्ता । २—मिली । ३—नीचे । ४—सखी ।

सुरत शब्द सँग चढ़त अधर में।
खोला मोक्ष दुआर ॥ ४ ॥
घंटा संख शब्द सुन हरखी।
निरखा जोत उजार ॥ ५ ॥
वहाँ से चल पहुँची त्रिकुटी में।
सुनी गरज धुन ओअंकार ॥ ६ ॥
सुन में लखा चंद्र उजियारा।
सुनत रही सारंगी सार ॥ ७ ॥
सुरत धरा अब हंस सरूपा।
चुगती मुक्ता[१] सार ॥ ८ ॥
महासुन्न के चढ़ गई पारा।
सुनी भँवर में सोहँग सार ॥ ९ ॥
सतपुर जाय सुनी धुन बीना।
अलख अगम के हो गई पार ॥१०॥
राधास्वामी दरस पाय मगनानी।
होय गई अब सूरत सार[२] ॥ ११ ॥

बिरह का अंग

॥ शब्द २१ ॥

सुरतिया तड़प रही।
गुरु दरस बिना ॥ १ ॥

१—मोती। २—उत्तम।

बिरह अगिन हिये में नित सुलगत।
चैन न पावत रैन[1] दिना ॥ २ ॥
ब्याकुल मन और चित्त उदासा।
जगत किरत[2] सँग सहूँ तपना ॥ ३ ॥
राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती।
दर्शन दो मोहि कर अपना ॥ ४ ॥
जिस दिन दरस भाग से पाऊँ।
तन मन वारूँ और धना ॥ ५ ॥
या जग में मोहि जान पड़ी अब।
राधास्वामी बिन नहिं कोइ अपना।६।
याते सरन गहूँ राधास्वामी।
सेवा करूँ गुरु भक्त जनाँ ॥ ७ ॥
यही उपाव कहा संतन ने।
यही जतन कर मेरे मना[3] ॥ ८ ॥
राधास्वामी भाग जगाया मेरा।
सुख पाया मैं आज घना[4] ॥ ९ ॥

॥ शब्द २२ ॥

सुरतिया भाव[5] भरी।
अब आई गुरु के घाट ॥ १ ॥

१—रात। २—कारवाई। ३—हे मन। ४—बहुत। ५—श्रद्धा।

सतसँग करत मैल मन धोवत।
परमारथ की पाई चाट[१] ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति चरन में धारत।
खोजत घर की बाट[२] ॥ ३ ॥
सुमिरन ध्यान करत निस बासर।
माँजत मन का माट[३] ॥ ४ ॥
शब्द सँग अब सुरत लगावत।
खोलत घट का पाट[४] ॥ ५ ॥
धुन की डोर पकड़ सुर्त चालत।
सहसकँवल में बाँधत ठाट[५] ॥ ६ ॥
घंटा संख शब्द धुन गाजे।
जहाँ बलत[६] जोत की लाट[७] ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया बिचारी।
दिये करम सब काट ॥ ८ ॥
चरन सरन दे मोहि अपनाया।
खोल दिये अब सभी कपाट[८] ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरन धार अब हिये में।
निरभय सोऊँ बिछाये खाट ॥ १० ॥

१—शौक़। २—माग। ३—घड़ा। ४—द्वार। ५—बाँधत ठाट—शान जमाती है। ६—जलती है। ७—लौ। ८—दरवाज़े।

॥ शब्द २३ ॥

सुरतिया सुनत रही ।
धुन शब्द निरख नभ द्वार ॥ १ ॥
संत बचन को गुनती[1] हर दम ।
शब्द का करत बिचार ॥ २ ॥
घट का भेद दिया नहिं कोई ।
खोजत रही सबसे हर बार[2] ॥ ३ ॥
साध मिले जब गुरु के भेदी ।
उन कहा संत मत सार ॥ ४ ॥
ले जुगती करती अभ्यासा ।
मन और सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
मन में पूरी शान्त न पाई ।
आई गुरु दरबार ॥ ६ ॥
सुन सुन भेद मगन हुई मन में ।
घट में पाया मारग सार ॥ ७ ॥
निश्चल चित होय सुरत लगाई ।
हरख रही सुन धुन झनकार ॥ ८ ॥
नित अभ्यास करूँ मैं घट में ।
प्रीति प्रतीति सम्हार ॥ ९ ॥

१—विचारती । २—समय ।

आरत कर राधास्वामी रिझाऊँ[1] ।
पाऊँ उनकी मेहर अपार ॥ १० ॥
काल जीत जाऊँ भौजल पारा ।
राधास्वामी चरन करूँ दीदार[2] ॥११॥

॥ शब्द २४ ॥

सुरतिया दर्द भरी ।
रहे निस दिन चित्त उदास ॥ १ ॥
मेहर दया सतगुरु से माँगत ।
चाहत चरनन बास ॥ २ ॥
मन माया से नित प्रति जूझे[3] ।
चरन बिना कोइ और न आस ॥ ३ ॥
सतसँग बचन सार हिये धारत ।
नाम जपत निस[4] बास[5] ॥ ४ ॥
अपनी सी बहु करत कमाई ।
गुरु का धर बिस्वास ॥ ५ ॥
तज जग का ब्योहार असारा ।
रहती गुरु के पास ॥ ६ ॥
मगन होय चित जोड़त धुन से ।
निरखत घट परकाश ॥ ७ ॥

१—प्रसन्न करूँ । २—दर्शन । ३—लड़ता रहे । ४—रात । ५—बासर, दिन ।

घंटा संख और गरज सुनावत।
सुन्न में लखती चंद्र उजास[1] ॥ ८ ॥
भँवरगुफा सतलोक शब्द सुन।
अलख अगम जाय किया निवास॥ ९ ॥
राधास्वामी चरन ध्यान धर।
मगन हुई पाय अमर बिलास ॥ १० ॥
दीन हीन होय आरत धारी।
राधास्वामी चरन हुई निज दास॥ ११ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सुरतिया जाग रही।
गुरु चरनन में चित लाय ॥ १ ॥
जनम जनम जग बिच रही सोती।
माया संग लुभाय ॥ २ ॥
सत पद का कभी खोज न कीना।
भरमन में दई बैस[2] बिताय ॥ ३ ॥
मेहर हुई सतसँग में आई।
सतगुरु बचन सुनत हरखाय ॥ ४ ॥
मनन[3] करत धारी गुरु सरना।
किरतम[4] इष्ट सब दिये बहाय ॥ ५ ॥

१—प्रकाश। २—उम्र। ३—विचार। ४—कृत्रिम, बनावटी।

भेद पाय घट धुन में लागी।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ६ ॥
ले गुरु दया चली अब घट में।
नभ पर घंटा संख सुनाय ॥ ७ ॥
गगन जाय सुनती धुन ओअँग।
सुन में मानसरोवर न्हाय ॥ ८ ॥
भँवरगुफा की बंसी बाजी।
सतपुर दरशन पुरुष दिखाय ॥ ९ ॥
अलख अगम का दरशन पावत।
छिन छिन रही सतगुरु गुन गाय ॥ १० ॥
आगे चढ़ पहुँची धुर धामा।
राधास्वामी चरन समाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सुरतिया तोल[1] रही।
गुरु बचन सार के सार ॥ १ ॥
खोज करत सतसँग में आई।
गुरु का दरस निहार ॥ २ ॥
बचन सुनत मन शांती आई।
मोह रही कर प्यार ॥ ३ ॥

१—जाँच।

जितने मते[1] जगत में जारी ।
सबही थोथे[2] जान असार ॥ ४ ॥
सत पद का कोइ भेद न गावे ।
जीव बहे चौरासी धार ॥ ५ ॥
सतगुरु मोहिं घट भेद सुनाया ।
पता दिया मोहिं निज घरबार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द की राह लखाई ।
पकड चढ़ूँ अब धुन की धार ॥ ७ ॥
प्रीति प्रतीति चरन में धारूँ ।
करम धरम का पटकूँ भार[3] ॥ ८ ॥
उमँग सहित करनी करूँ निस दिन ।
राधास्वामी चरन सरन आधार ॥ ९ ॥
संसय भरम उड़ाय दिये सब ।
गुरु चरनन पर तन मन वार[4] ॥ १० ॥
दिन दिन भाग जगाऊँ अपना ।
सुरत शब्द की करती कार[5] ॥ ११ ॥
मेहर करी राधास्वामी प्यारे ।
पार किया मोहिं किरपा धार ॥ १२ ॥

१—मजहब । २—खाली । ३—बोझ । ४—निछावर करके । ५—काररवाई ।

॥ शब्द २७ ॥

सुरतिया तरस रही।
 गुरु दर्शन को दिन रात ॥ १ ॥
जग ब्योहार पड़ा अस पीछे।
 घर नहिं छोड़ा जात ॥ २ ॥
तड़प तड़प मन होय उदासा।
 रहे घट में अकुलात ॥ ३ ॥
बहु बिध[1] कर मैं जुगत उपाऊँ।
 पर कोई भी पेश न जात ॥ ४ ॥
सतसँग बिन मन चैन न पावे।
 चित में रहूँ नित्त घबरात ॥ ५ ॥
संसय भरम उठावत काला।
 भजन ध्यान में रस नहिं पात ॥ ६ ॥
बिरह उठत नित हिये में भारी।
 और कहीं मन लगे न लगात ॥ ७ ॥
राधास्वामी से अब करूँ पुकारी।
 देव प्रेम की मोहि अब दात[2] ॥ ८ ॥
जल्द जल्द मैं दर्शन पाऊँ।
 सतसँग में नए बचन सुनात ॥ ९ ॥

१—तरह। २—बख़्शिश।

तब तन मन मेरे शांति धरावें।
दर्शन और बचन रस पात ॥ १० ॥
जो अस मौज न होवे जल्दी।
दूर करो मन के उतपात ॥ ११ ॥
घट में मोहि नित दर्शन दीजे।
धुन सँग मन और सुरत लगात ॥ १२ ॥
गुन गाऊँ तुम चरन धियाऊँ।
प्यारे राधास्वामी मेरे पित और मात १३
दया दृष्टि से मोहि निहारो।
औगुन मेरे चित्त न लात ॥ १४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सुरतिया झुरत रही।
कस लगूँ शब्द सँग जाय ॥ १ ॥
नित फ़र्याद[1] करूँ सतगुरु से।
घट में दीजे दर्शन आय ॥ २ ॥
एक चित होय लगूँ घट अंतर।
शब्द अमीरस पिऊँ अघाय ॥ ३ ॥
सुननहार नहिं सुने पुकारा।
कैसी करूँ मेरी कहा[2] बसाय[3] ॥ ४ ॥

१—प्रार्थना । २—क्या । ३—पेश जाय ।

रैन[1] दिवस रहुँ सोचत मन में।
कस भौसागर पार पराय[2] ॥ ५ ॥
बिरह अगिन मोहि नित्त सतावे।
बेकल रहुँ मोहि कछु न सुहाय ॥ ६ ॥
आस आस में बहु दिन बीते।
योंही उमरिया बीती जाय ॥ ७ ॥
मन इंद्री सँग जूझत रहती।
बहु बिधि भय और आस दिखाय ॥ ८ ॥
काज बना नहिं पूरा अब तक।
मन भी कुछ मेरे बस नहिं आय ॥ ९ ॥
जब तब माया ओर[3] लुभावे।
घट में चालन को आलसाय ॥ १० ॥
आस निरास संग दिन बीतत।
मनही मन में रहूँ अकुलाय ॥ ११ ॥
भूल चूक और कसर[4] अनेका।
सोचत मन में रहूँ शरमाय ॥ १२ ॥
बिन राधास्वामी कोइ और न दीखे[5]।
उनहीं से कहूँ बिपत सुनाय ॥ १३ ॥
मेहर दृष्टि से अब मोहिं हेरो[6]।
जल्दी देव निज शब्द सुनाय ॥ १४ ॥

१—रात। २—जाऊँ। ३—तरफ़। ४—कमियाँ, दोष। ५—दिखलाई पड़ता। ६–देखो।

किरपा कर निज रूप दिखाओ ।
 तब मन मेरा तृप्त अघाय[१] ॥ १५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

सुरतिया परख परख ।
 आज गुरू मत लीना चीन[२] ॥ १ ॥
उमँग भरी सतसँग में आई ।
 गुरू चरनन आधीन ॥ २ ॥
बचन सुनत बढ़ा भाव हिये में ।
 तजत मान हुई दीन ॥ ३ ॥
भेद पाय मन उमँगा भारी ।
 सुरत शब्द में लीन ॥ ४ ॥
सब मत खोज जाँच लिया मन में ।
 गुरू मत साँचा दीन[३] ॥ ५ ॥
धुन की ख़बर पाय अब घट में ।
 मन दृढ़ निश्चय कीन ॥ ६ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ी गुरू चरनन ।
 तन मन वार धरीन[४] ॥ ७ ॥
माया ममता झींक रही[५] अब ।
 काल हुआ ग़मगीन[६] ॥ ८ ॥

१—संतुष्ट हो । २—पहचान । ३—मजहब । ४—वार धरीन—निछावर कर दिया । ५—झींक रही —परेशान हो रही । ६—उदास ।

पाँच दूत गुरु बल बस कीने ।
थाके[1] रहे गुन तीन ॥ ९ ॥
राधास्वामी की क्या महिमा गाऊँ ।
लिया अपनाय मोहिं मिसकीन[2] ॥ १० ॥
प्रेम रंग की बरखा कीनी ।
मन और सुरत हुए रंगीन[3] ॥ ११ ॥
उमँग उमँग कर चढ़त अधर में ।
शब्द शब्द रस लीन ॥ १२ ॥
सहसकँवल और गगन अटारी ।
सुन और महासुन्न लख[4] लीन ॥ १३ ॥
भँवरगुफा होय चढ़ी अधर में ।
सतपुर जाय सुनी धुन बीन ॥ १४ ॥
सत्तपुरुष की आरत कीनी ।
दई मेहर से मोहि दुरबीन ॥ १५ ॥
अलख अगम के पार गई अब ।
मिल गये राधास्वामी गुरु परबीन[5] ॥ १६ ॥
राधास्वामी चरन सरन गह बैठी ।
प्रीति लगी अब जस जल मीन[6] ॥ १७ ॥

१—हार । २—गरीब । ३—प्रेम में मग्न । ४—देख । ५—प्रवीण, चतुर ।
६—मछली ।

॥ शब्द ३० ॥

सुरतिया निरख परख[1] ।
अब गुरु मत धारा आय ॥ १ ॥
खोजत रही आदि घर न्यारा ।
ताकी बूझ[2] कहीं नहिं पाय ॥ २ ॥
कोइ मूरत कोइ तीरथ गावें[3] ।
कोइ रहे करम धरम अटकाय ॥ ३ ॥
विद्या ज्ञानी ब्रह्म होय बैठे ।
मन माया सँग रहे लिपटाय ॥ ४ ॥
हठ जोगी बहु कष्ट उठाते ।
जग को नए नए स्वाँग दिखाय ॥ ५ ॥
मौनी जोगी जती[4] सन्यासी ।
निज घर का कोइ भेद न गाय ॥ ६ ॥
और अनेक मते जग माहीं ।
परघट हुए समाज बनाय ॥ ७ ॥
करम धरम में भरम रहे सब ।
सत[5] मत का कोइ खोज न पाय ॥ ८ ॥
इन सब से मन होय निरासा ।
संत मते का खोज लगाय ॥ ९ ॥

१—जाँच कर । २—ख़बर । ३—बतलावें । ४—यती, साधन करने वाले ।
५—सच्चे ।

सतसंगी से मिला भाग से ।
 उन मोहि दीना पता बताय ॥ १० ॥
सत मत सोई संत मत कहिये ।
 महिमा उसकी दई सुनाय ॥ ११ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
 घट में उनका भेद जनाय ॥ १२ ॥
प्रेम भक्ति सतगुरु की महिमा ।
 सुरत शब्द की जुगत लखाय ॥ १३ ॥
कर अभ्यास मिला घट आनँद ।
 तन मन दोनों शांति धराय ॥ १४ ॥
राधास्वामी संगत में जाय मिलिया ।
 सतसँग कर लिया भाग जगाय ॥ १५ ॥
संसय भरम हुए सब दूरा ।
 नई नई प्रीति प्रतीति जगाय ॥ १६ ॥
प्रेम सहित नित जुगत कमाऊँ ।
 सेवा कर लिया गुरू रिझाय ॥ १७ ॥
नित प्रति सुरत अधर में चढ़ती ।
 नई नई लीला गुरू दिखाय ॥ १८ ॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर ।
 मेहर से लीना काज बनाय ॥ १९ ॥

बिनती और प्रार्थना का अंग

॥ शब्द ३१ ॥

सुरतिया बिनय करत ।
गुरु चरनन में कर[1] जोड़ ॥ १ ॥
शब्द भेद मोहि खोल सुनाओ ।
धुन में लाग रहे चित मोर ॥ २ ॥
जगत भाव भय मन से टारो ।
छूटे मोर और तोर[2] ॥ ३ ॥
घट में जाय परम सुख पाऊँ ।
बाजे जहाँ नित अनहद घोर ॥ ४ ॥
दया करो मोहि चरन लगाओ ।
हे राधास्वामी बंदीछोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुरतिया चाह रही ।
सतगुरु से भक्ती दान ॥ १ ॥
उमँग अंग ले सन्मुख आई ।
गुरु चरनन में सुरत लगान ॥ २ ॥
भेद पाय सुनती अनहद धुन ।
गुरु स्वरूप का करती ध्यान ॥ ३ ॥

१—हाथ । २—मोर और तोर—मेरा तेरा ।

घट में देखत बिमल बिलासा ।
शब्द गुरू का पाया ज्ञान ॥ ४ ॥
प्रेम डोर गह चढ़ी अधर में ।
भँवरगुफा मुरली धुन गान ॥ ५ ॥
सत्तपुरुष का दरशन पाया ।
सत्त शब्द का मिला ठिकान[1] ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारी ।
होय गई अब अमन अमान[2] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

सुरतिया याच[3] रही ।
गुरु चरन प्रेम की दात ॥ १ ॥
उमँग भरी गुरु सन्मुख आई ।
दरशन कर हिये में हुलसात ॥ २ ॥
सुन सुन बचन मगन हुई मन में ।
तोड़ा जग जीवन से नात[4] ॥ ३ ॥
कृत[5] संसारी अब नहिं भावे ।
करम धरम पर मारी लात ॥ ४ ॥
गुरु सँग प्रीति लगावत ऐसी ।
जस बालक माता के साथ ॥ ५ ॥

१—स्थान । २—निश्चिन्त, शान्त । ३—माँग । ४—नाता, संबंध । ५—काररवाई ।

बिन दरशन अब चैन न आवे ।
और कहीं मन लगे न लगात ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करत धर ध्याना ।
गुरु मूरत निज हिये बसात ॥ ७ ॥
छिन छिन घट में दरस निहारत ।
गुरु छबि देख चित्त मगनात ॥ ८ ॥
रसक रसक[1] सुनती अनहद धुन ।
अमी धार नित सुन[2] से आत ॥ ९ ॥
मन और सूरत चढ़त अधर में ।
शब्द शब्द पौड़ी[3] दरसात ॥ १० ॥
अजब बिलास मिला अंतर में ।
उमँग उमँग गुरु के गुन गात ॥ ११ ॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे ।
प्रेम सहित उन चरन समात ॥ १२ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

सुरतिया साज रही ।
गुरु आरत प्रेम सम्हार ॥ १ ॥
बिरह भाव की थाली लाई ।
शब्द की जोत सँवार ॥ २ ॥

१—रसक रसक—रस ले ले कर । २—सुन्न स्थान । ३—सीढ़ी ।

उमँग जगाय चरन गुरु सेती[1] ।
　राधास्वामी नाम पुकार ॥ ३ ॥
बचन गुरू के हिये में गुनती[2] ।
　लख रही महिमा सार ॥ ४ ॥
अजब बिलास निरख घट माहीं ।
　गावत गुन हर बार ॥ ५ ॥
राधास्वामी महिमा अकह[3] अपारा ।
　चरन सरन रही हिरदे धार ॥ ६ ॥
काल लगाई बहुतक लीकें[4] ।
　रोग दोख[5] का किया पसार ॥ ७ ॥
मैं गुरु चरन पकड़ दृढ़ हिये में ।
　रहूँ राधास्वामी चरन अधार ॥ ८ ॥
मेहर करें काटें जंजाला ।
　अपनी किरपा धार ॥ ९ ॥
नित प्रति बिनय करूँ चरनन में ।
　करो सहाय मेरी गुरु दातार ॥ १० ॥
दया धार मोहि धीरज दीजे ।
　घट में रहूँ नित दरस निहार ॥ ११ ॥
राधास्वामी गुरु किरपाल दयाला ।
　चरन लगाया मोहि कर प्यार ॥ १२ ॥

१—सेवा करती । २—विचारती । ३—जो कही न जा सके । ४—झगड़े । ५—दोष ।

॥ शब्द ३५ ॥

सुरतिया सोच भरी ।
　गुरु चरनन करत पुकार ॥ १ ॥
जगत जाल जंजाल लगाया ।
　नित्त करे मन उसकी कार[1] ॥ २ ॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवे ।
　क्योंकर होवे जीव उबार ॥ ३ ॥
रोग दुक्ख मोहिं नित्त सतावें ।
　चिंता सँग रहे मन बीमार ॥ ४ ॥
कैसी करूँ कुछ बस नहिं चाले ।
　गुरु बिन कौन करे निरबार[2] ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरनन करूँ पुकारा ।
　बेग[3] लेव मोहिं अधम[4] सुधार ॥ ६ ॥
मेहर दया से बिघन हटाओ ।
　मन से देव बिकार[5] निकार ॥ ७ ॥
सतसँग करूँ प्रेम से निस दिन ।
　भजन करूँ मन सुरत सम्हार ॥ ८ ॥
मन और सुरत सिमट कर घट में ।
　चढ़ कर देखें बिमल बहार ॥ ९ ॥

१—काररवाई । २—छुटकारा । ३—शीघ्र । ४—नीच । ५—दोष ।

मैं अति दीन निबल नाकारा[1]।
सरन पड़ी अब सब बल हार ॥ १० ॥
मोपै मेहर दृष्टि अब कीजे।
सहज उतारो भौजल पार ॥ ११ ॥
राधास्वामी बिन कोइ और न सूझे[2]।
राधास्वामी हैं मेरे कुल करतार ॥ १२ ॥
बिनती सुनो दया कर प्यारे।
काज करो मेरा किरपा धार ॥ १३ ॥
नित नित मैं गुन गाऊँ तुम्हारे।
राधास्वामी २ रहूँ पुकार ॥ १४ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

सुरतिया सेव करत।
गुरु चरन हिये धर प्यार ॥ १ ॥
सतसँग करत कटे मन भरमा।
देखी जग की किरत[3] असार ॥ २ ॥
सतगुरु की महिमा मन मानी।
गत मत[4] शब्द अपार ॥ ३ ॥
बचन सुनत मन शांती आई।
गुरु चरनन में जागा प्यार ॥ ४ ॥

१—निकम्मा। २—दिखलाई पड़ता। ३—काररवाई। ४—गत मत—महिमा।

दीन जान गुरु दिया उपदेशा।
शब्द भेद निज सार ॥ ५ ॥
हित चित से अब करूँ कमाई।
मन और सुरत सम्हार ॥ ६ ॥
बिन किरपा कुछ काज न सरई[1]।
मेहर करो गुरु परम उदार ॥ ७ ॥
घेर[2] फेर[3] मन घट में लाओ।
सुरत चढ़ाओ नौ[4] के पार ॥ ८ ॥
घंटा संख सुनूँ जाय नभ में।
और लखूँ वहाँ जोत उजार ॥ ९ ॥
बंकनाल धस निरखूँ गुरु पद।
सुनूँ गरज सँग धुन ओंकार ॥ १० ॥
सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न लख।
भँवरगुफा मुरली झनकार ॥ ११ ॥
सतपुर जाय सुनूँ धुन बीना।
दरस पुरुष का करूँ सम्हार ॥ १२ ॥
अलख अगम के लोक सिधारूँ।
सुनूँ गुप्त[5] धुन बानी सार ॥ १३ ॥
आगे राधास्वामी चरन निहारूँ।
प्रेम सहित रहूँ आरत धार ॥ १४ ॥

१—बनता। २—रोक कर। ३—उलटा कर। ४—नौ इंद्रियों। ५—छिपी हुई।

मेहर दया राधास्वामी पाई।
मगन[1] होय बैठी सरन सम्हार ॥ १५ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

सुरतिया मचल[2] रही।
गुरु चरन पकड़ हठ नाल[3] ॥ १ ॥
बिनती करत दोउ कर जोड़ी।
हे राधास्वामी परम दयाल ॥ २ ॥
मेहर करो अबही दिखलाओ।
निज स्वरूप का दरस बिशाल[4] ॥ ३ ॥
मन इंद्री बहु बिघन लगाते।
काट देव उनका जंजाल ॥ ४ ॥
नाम खड़ग[5] ले चढ़ूँ गगन पर।
मारूँ दल माया और काल ॥ ५ ॥
घंटा संख सुनूँ धुन नभ में।
देखूँ सुंदर जोत जमाल[6] ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय ओअं धुन पाऊँ।
चमक रहा जहाँ सूरज लाल ॥ ७ ॥
अधर जाय तिरबेनी न्हाऊँ।
सुनूँ सुन्न में शब्द रसाल[7] ॥ ८ ॥

१—प्रसन्न। २—प्रेम से ज़िद करती। ३—साथ। ४—महान, भव्य, सुंदर। ५—तलवार। ६—सुंदर रूप। ७—रसीला।

महासुन्न होय पहुँच गुफा में ।
　महाकाल का काटूँ जाल ॥ ९ ॥
सतपुर जाय सुनूँ धुन बीना ।
　दरस पुरुष का पाऊँ हाल[1] ॥ १० ॥
अलख अगम का शब्द जगाऊँ ।
　गाऊँ गुन सतगुरू दयाल ॥ ११ ॥
राधास्वामी चरन परस[2] कर ।
　करूँ आरती होउँ निहाल ॥ १२ ॥
यह बिनती मेरी अब मानो ।
　कीजे मेरी आप सम्हाल ॥ १३ ॥
घट में दरस दिखाकर अपना ।
　जल्दी मुझको लेव निकाल ॥ १४ ॥
छिन छिन राधास्वामी चरन धियाऊँ ।
　रहे नहीं कोइ और ख़याल ॥ १५ ॥
प्रेम सिंध[3] में पहुँच दया से ।
　पाऊँ प्रेम रूप धन माल ॥ १६ ॥
जो माँगा सो बख़्शिश दीजे ।
　राधास्वामी कीजे मेहर कमाल ॥ १७ ॥

१—तुरंत ही । २—छू । ३—भंडार ।

॥ शब्द ३८ ॥

सुरतिया माँग रही ।
सतगुरु से मेहर की दात[1] ॥ १ ॥
दीन होय आई राधास्वामी चरना ।
चित से सुनती गुरु मुख बात ॥ २ ॥
राधास्वामी महिमा अगम अपारा ।
समझ समझ हरखात ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति जगावत मन में ।
चरन सरन पर हिया[2] उमँगात ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग की महिमा ।
सुन सुन हियरे उमँग बढ़ात ॥ ५ ॥
नित अभ्यास नेम[3] से करती ।
मगन होत घट में धुन पात ॥ ६ ॥
माया काल पेच[4] बहु डाले ।
चिंता बैरन बिघन लगात ॥ ७ ॥
अनेक भाँत की खटक[5] हिये में ।
सालत[6] रहे दिन रात ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरनन करत पुकारा ।
मेरा बल कुछ पेश न जात ॥ ९ ॥

१—बख़्शिश । २—दिल । ३—नियम । ४—फंदे । ५—चिंता, फ़िक्र ।
६—सालत रहे—परेशान करती रहे ।

अरज़ी करत बहुत दिन बीते ।
अब तो धरो मेहर का हाथ ॥ १० ॥
कारज मेरे आप सँवारो ।
दीनदयाल दया के साथ ॥ ११ ॥
तब मन निश्चल सुर्त होय निरमल ।
धुन रस और रूप रस पात ॥ १२ ॥
हरख हरख फिर चढ़ें अधर में ।
होय करम की बाज़ी मात[1] ॥ १३ ॥
निरख जोत लख सूर प्रकाशा ।
चंद्र चाँदनी चौक समात ॥ १४ ॥
मुरली धुन और बीन बजावत ।
अलख अगम के चरन परात[2] ॥ १५ ॥
राधास्वामी धाम धाय धुन सुन सुन ।
अचरज रूप निरख[3] मुसकात ॥ १६ ॥
अभेद आरती राधास्वामी कीनी ।
मेहर पाय निज भाग सरात[4] ॥ १७ ॥
राधास्वामी महिमा अतिसै[5] भारी ।
को बरने को करे बिख्यात[6] ॥ १८ ॥
भूल चूक मेरी चित नहिं धारी ।
राधास्वामी दाता दया करात ॥ १९ ॥

१—बाज़ी मात—हार जावे। २—पड़ती है। ३—देख कर। ४—भाग सराहती है। ५—अतिशय, अत्यंत। ६—प्रकट।

सेवा का अंग

॥ शब्द ३९ ॥

सुरतिया सेव करत।
　गुरु भक्तन की दिन रात ॥ १ ॥
सब का काम काज नित करती।
　आलस नेक न लात[1] ॥ २ ॥
चाह[2] सँवार मेल नित करती।
　जैसे क्षीर[3] शकर के साथ ॥ ३ ॥
छाँट बचन सतगुरु के सारा।
　धर मन में हरखात ॥ ४ ॥
डोलत फिरत जपत गुरु नामा।
　रूप सोहावन हिये बसात ॥ ५ ॥
भजन नेम से करती घट में।
　शब्द सुनत मगनात ॥ ६ ॥
कुल परिवार संग ले अपने।
　राधास्वामी सरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४० ॥

सुरतिया खड़ी रहे।
　नित सेवा में गुरु पास ॥ १ ॥

१—करती। २—शौक़, प्रेम। ३—दूध।

चरन दबावत पंखा फेरत[1] ।
धर मन में बिस्वास ॥ २ ॥
ब्यंजन[2] अनेक बनाय प्रीति से ।
लावत गुरू के पास ॥ ३ ॥
जब सतगुरू ने भोग लगाया ।
परशादी ले बढ़त हुलास[3] ॥ ४ ॥
अमी रूप जल लाय पिलावत ।
मुख अमृत पी बुझत पियास ॥ ५ ॥
नाम गुरू हिरदे में धारा ।
जपती स्वाँसो स्वाँस ॥ ६ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
निरख रही घट में परकाश ॥ ७ ॥
राधास्वामी आरत[4] नित नित गाऊँ ।
दीन्हा मुझको चरन निवास ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

सुरतिया फूल रही ।
सतगुरू के दरशन पाय ॥ १ ॥
भाव भक्ति से पूजा करती ।
मत्था टेक चरन परसाय[5] ॥ २ ॥

१—झलती, घुमाती । २—तरह तरह के भोजन । ३—हर्ष । ४—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ५—स्पर्श करती ।

गंध सुगंध फूल की माला ।
सतगुरु गल[1] पहिनाय ॥ ३ ॥
अमृत रस जल भर के लाई ।
चरनामृत कर पियत अघाय[2] ॥ ४ ॥
मुख अमृत बिनती कर लेती ।
उमँग सहित हिये प्यास बुझाय ॥ ५ ॥
ब्यंजन अनेक प्रीति कर लाई ।
गुरु सन्मुख धरे थाल भराय ॥ ६ ॥
प्रेम सहित गुरु आरत करती ।
दृष्टि से दृष्टि मिलाय ॥ ७ ॥
सतगुरु दया दृष्टि जब डारी ।
मगन होय रही उन गुन गाय ॥ ८ ॥
सब सतसंगी और सतसंगिन ।
दृष्टि जोड़ दरशन रस पाय ॥ ९ ॥
बटा परशाद हरख हुआ भारी ।
सब मिल गुरु परशादी पाय ॥ १० ॥
कभी कभी अस[3] औसर भल[4] पावत ।
सब मिल राधास्वामी चरन धियाय ॥११॥

१—गले में । २—तृप्त हो कर । ३—ऐसा । ४—अच्छा ।

॥ शब्द ४२ ॥

सुरतिया ध्यान धरत ।
गुरु रूप चित्त में लाय ॥ १ ॥
सेवा करत मानसी[1] गुरु की ।
मन में नित नया भाव जगाय ॥ २ ॥
सतगुरु रूप ध्यान धर हिये में ।
बटना[2] मल अस्नान कराय ॥ ३ ॥
बस्तर भाव प्रीति पहिना कर ।
चंदन केसर तिलक लगाय ॥ ४ ॥
पलँग बिछाय बिठावत गुरु को ।
उमँग उमँग उन आरत[3] गाय ॥ ५ ॥
ताक[4] नैन गुरु दरशन करती ।
दृष्टि समेट[5] मद्ध[6] तिल लाय ॥ ६ ॥
हरखत मन अस जुगत सम्हारत ।
सुनत शब्द अति आनँद पाय ॥ ७ ॥
कोइ दिन अस मन चित ठहरावत ।
सहज सरूप और धुन रस पाय ॥ ८ ॥
नित प्रति भजन ध्यान अस करती ।
सुरत चढ़ी अब घट में धाय ॥ ९ ॥

१—मानसिक । २—उबटन । ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ४—देख कर ।
५—एकत्रित करके । ६—मध्य, बीच में ।

शब्द शब्द धुन सुनत अधर में ।
राधास्वामी चरनन पहुँची जाय ॥ १० ॥
मेहर दया राधास्वामी की पाई ।
तब अस कारज लिया बनाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

सुरतिया टहल[1] करत ।
सतसँग में धर कर भाव ॥ १ ॥
प्रेमी जन की दया पाय कर ।
दिन दिन बाढ़त चाव[2] ॥ २ ॥
मन मलीन फिर फिर भरमावत ।
दया मेहर से खावत ताव[3] ॥ ३ ॥
रूखा फीका होय सेवा में ।
फिर फिर मनही मन पछताव ॥ ४ ॥
बहु बिध[4] समझौती ले घट में ।
आलस तज नया चाव[5] बढ़ाव ॥ ५ ॥
आस बास धारी गुरु चरना ।
अब कभी नहिं मन जाय भुलाव ॥ ६ ॥
छोड़ कपट सच्चा होय बरते ।
संसे भरम न चित्त समाव ॥ ७ ॥

१—सेवा । २—शौक़, प्रेम । ३—खावत ताव—कसा जाता है । ४—तरह ।
५—शौक़ ।

दया होय मुझ पर अब ऐसी ।
माया सँग नहिं जाय लुभाव ॥ ८ ॥
सतसँग बचन सुनूँ चित देकर ।
ध्यान भजन में कुछ रस पाव ॥ ९ ॥
मौज अनुसार चलै फिर सीधा ।
जग का भाव न चित्त समाव ॥ १० ॥
राधास्वामी दीनदयाल मेहर से ।
चरनन में मोहि नित्त लगाव ॥ ११ ॥

सरन का अंग

॥ शब्द ४४ ॥

सुरतिया निडर हुई ।
राधास्वामी सरन सम्हार[१] ॥ १ ॥
दृढ़ परतीत चरन में लाई ।
धर हिरदे में प्यार ॥ २ ॥
चरन ओट[२] गह[३] खेलत जग में ।
सुमिर सुमिर गुरु नाम दयार ॥ ३ ॥
लीला देख हरखती मन में ।
गुरु दरशन की निरख बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन अब हिये बसाये ।
घट में करती सहज दीदार[४] ॥ ५ ॥

१—ले कर । २—सहारा । ३—ले कर । ४—दर्शन ।

॥ शब्द ४५ ॥

सुरतिया रीझ रही[1] ।
गुरु अचरज[2] दरस निहार ॥ १ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सुन गुरु बचन फूल रही तन में ।
शब्द की लीनी जुगती सार[3] ॥ ३ ॥
भजन करत परतीत बढ़ावत ।
ध्यान धरत हिये बाढ़ा प्यार ॥ ४ ॥
सुरत हुई अब धुन रस माती[4] ।
गुरु सरूप रस मन सरशार[5] ॥ ५ ॥
बिरह जगावत प्रेम बढ़ावत ।
गुरु गुन गावत बारम्बार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर की भारी ।
सहज लिया मोहिं अधम[6] उबार ॥७॥

॥ शब्द ४६ ॥

सुरतिया बाँह गही ।
सतगुरु की सब बल त्याग[7] ॥ १ ॥
मान बड़ाई जगत बासना ।
तज गुरु चरनन लाग ॥ २ ॥

१—रीझ रही—प्रसन्न हो रही है। २—अद्भुत । ३—उत्तम । ४—मतवाली । ५—अत्यन्त प्रसन्न । ६—नीच । ७—छोड़ कर ।

भेद पाय निज नाम सम्हाला ।
सुमिर सुमिर रही जाग ॥ ३ ॥
भजन करत निस दिन रस पावत ।
सुनत रागनी और धुन राग ॥ ४ ॥
करम धरम से नाता[1] टूटा ।
छोड़ दई अब माया आग[2] ॥ ५ ॥
त्रिकुटी होय सुन्न में पहुँची ।
छूट गई संगत मन काग[3] ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सम्हारे ।
जाग उठा मेरा पूरन भाग[4] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

सुरतिया ओट[5] गही ।
सतगुरु की धर परतीत ॥ १ ॥
करम भरम तज सरन लई अब ।
छोड़ी जग की चाल अनीत[6] ॥ २ ॥
सतसँग करत भाव नया जागत ।
दिन दिन बढ़ती प्रीत ॥ ३ ॥
करत अभ्यास सुरत मन माँजत[7] ।
दृढ़ कर पकड़ा शब्द अतीत[8] ॥ ४ ॥

१—संबंध। २—अग्नि, माया जो अग्नि के समान है। ३—कौआ। ४—भाग्य। ५—सरन। ६—अनुचित। ७—साफ़ करती। ८—माया के पार का।

धुन रस पाय हरखती मन में।
रही सरावत[1] भाग अजीत[2] ॥ ५ ॥
जग परमारथ देख असारा।
धार लई गुरु भक्ती रीत ॥ ६ ॥
संत मते की महिमा जानी।
गाय रही नित राधास्वामी गीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

सुरतिया दीन दिल।
आज आई सरन गुरु धाय[3] ॥ १ ॥
परमारथ की अति कर प्यासी।
बचन सुनत रस पाय ॥ २ ॥
भर भर प्रेम करत गुरु दरशन।
सेवा करत हिया उमँगाय ॥ ३ ॥
सतसँग कर नित प्रीति बढ़ावत।
गुरु चरनन सँग रहे लिपटाय ॥ ४ ॥
सुमिरन ध्यान भजन नित करती।
प्रीति सहित गुरु बचन कमाय[4] ॥ ५ ॥
दिन दिन आनँद बढ़त हिये में।
उमँग उमँग नई प्रीति जगाय ॥ ६ ॥

१—प्रशंसा करती। २—सबसे बढ़ कर। ३—दौड़ कर। ४—मानती।

आरत[1] कर राधास्वामी रिझावत[2]।
दिन दिन होत मेहर अधिकाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

सुरतिया भाव सहित।
नित गुरु का भोग[3] बनाय ॥ १ ॥
उमँग सहित नित थाल सजावत।
नये नये ब्यंजन लाय ॥ २ ॥
भोजन अधिक रसीले लागें।
नित प्रति स्वाद अधिकाय ॥ ३ ॥
गुरु सतसंगी सब मिल पावत[4]।
मन में अधिक हरखाय ॥ ४ ॥
अस अस भाव और प्यार निहारत।
भक्ति दान दिया दया उमँगाय ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति चरन में बढ़ती।
मन और सुरत नाम धुन गाय ॥ ६ ॥
नाम जपत अब होत सफ़ाई।
शब्द भेद दिया गुरु समझाय ॥ ७ ॥
भजन और ध्यान करत नित घट में।
अंतर शब्द प्रकाश दिखाय ॥ ८ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। २—प्रसन्न करती। ३—भोजन। ४—खाते हैं।

मगन होय अब धुन रस पावत।
　चरन सरन रही हिये बसाय ॥ ९ ॥
राधास्वामी गुरू अब हुए दयाला।
　मेहर से दीना काज बनाय ॥ १० ॥

॥ शब्द ५० ॥

सुरतिया रटत[1] रही।
　पिया प्यारा नाम सही ॥ १ ॥
उमँग भरी सतसँग में आई।
　मान लाज दोउ त्याग दई ॥ २ ॥
समझ बूझ गुरू बचन सम्हारे।
　गुरू चरनन की टेक गही[2] ॥ ३ ॥
सार भेद ले करत कमाई।
　शब्द अमी रस चाख रही ॥ ४ ॥
गुरू चरनन में किया बिस्वासा।
　दिन दिन जागत प्रीति नई ॥ ५ ॥
गुरू दरशन अस प्यारा लागे।
　जस माता को पुत्र कही[3] ॥ ६ ॥
बिन दरशन ब्याकुल रहे तन में।
　दरस पाय जब मगन भई ॥ ७ ॥

१—सुमिरन करत। २—पकड़ी। ३—प्यारा कहा जाता है।

ऐसी लगन[1] देख गुरु प्यारे।
निज चरनन की सरन दई ॥ ८ ॥
सरन पाय अब हुई अचिंती[2]।
दिन दिन प्रेम जगाय रही ॥ ९ ॥
गुरु परताप सुरत अब चेती[3]।
शब्द संग चढ़ अधर गई ॥ १० ॥
राधास्वामी चरनन जाय मिली अब।
महिमा उसकी कौन कही ॥ ११ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

सुरतिया सरन गही।
लख[4] राधास्वामी गत[5] भारी ॥ १ ॥
भाग जगे गुरु सतसँग पाया।
बचन अमोल चित्त धारी ॥ २ ॥
गुरु का रूप बसाय हिये में।
निरख रही घट उजियारी ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त अब दिन दिन।
भींज गई गुरु रँग सारी ॥ ४ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर।
त्याग दिया जग ब्योहारी ॥ ५ ॥

१—प्रेम। २—चिंता रहित। ३—जागी। ४—देखकर। ५—शक्ति।

शब्द भेद ले सुरत चढ़ावत ।
सुन रही अनहद झनकारी ॥ ६ ॥
लख गुरु मेहर हरख हिये अंतर ।
चरनन पर तन मन वारी[1] ॥ ७ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना ।
होय गई मैं पिया प्यारी ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया सहसदल पाया ।
सुनी अधर धुन ओंकारी ॥ ९ ॥
चंद्र मँडल लख भँवरगुफा चढ़ ।
सुनी बीन धुन निज सारी ॥ १० ॥
अलख अगम की मेहर पाय कर ।
धाम अनामी पग[2] धारी ॥ ११ ॥
अचरज रूप निरख हुलसानी ।
राधास्वामी चरनन बलिहारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

सुरतिया सरन पड़ी ।
गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
दरशन कर हिये में मगनानी ।
जब बालक माता सँग प्यार ॥ २ ॥

१—निछावर करती है । २—पर ।

आस भरोस धरा चरनन में ।
जियत रहूँ गुरु चरन अधार ॥ ३ ॥
बिन गुरु चरन रहे ब्याकुल मन ।
पियत रहूँ चरनन रस सार ॥ ४ ॥
अद्भुत छबि गुरु की मन भाई[1] ।
निरखत रहूँ दरस गुरु सार ॥ ५ ॥
तोड़ दिये अब सब बल मन के ।
धार रही गुरु टेक सम्हार ॥ ६ ॥
सेवा करत फूलती[2] तन में ।
हाज़िर रहूँ नित गुरु दरबार ॥ ७ ॥
काम क्रोध और लोभ बिकारी ।
त्याग दिये सब जान लबार[3] ॥ ८ ॥
गुरु की दया धार हिये छिन छिन ।
जीत लिया दल माया नार ॥ ९ ॥
परमारथ स्वारथ कारज में ।
मौज गुरू की रहूँ सम्हार ॥ १० ॥
सुक्ख दुःख जब मौज से ब्यापें ।
शुकर करूँ रहूँ गुरु को धार[4] ॥ ११ ॥
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होई ।
गुरु ही हैं मेरे कुल करतार ॥ १२ ॥

१—अच्छी लगती है । २—ख़ुश होती । ३—मिथ्या, झूठ । ४—पकड़ ।

अचरज खेल देख अब घट में।
त्याग दिया जग काल पसार ॥ १३ ॥
उमँग उमँग सुत चढ़त अधर में।
निरख रही कँवलन फुलवार ॥ १४ ॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे।
छिन छिन रहूँ उन शुकरगुज़ार ॥१५॥

प्रेम का अंग

॥ शब्द ५३ ॥

सुरतिया चुप्प रही।
देख अचरज लीला सार ॥ १ ॥
प्रीति सहित गुरु के ढिंग[1] आती।
दरशन करत सम्हार ॥ २ ॥
आरत[2] कर निज भाग जगाती।
प्रेम भक्ति का थाल सँवार ॥ ३ ॥
सीत प्रसाद उमँग कर लेती।
करम भरम का भार उतार ॥ ४ ॥
मेहर दया राधास्वामी की पाई।
होय गई उन सरन अधार ॥ ५ ॥

१—पास। २—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३।

॥ शब्द ५४ ॥

सुरतिया खिलत रही ।
गुरु अचरज दरशन पाय ॥ १ ॥
गुरु छबि अजब नैन भर देखत ।
बाढ़ा आनँद हिये न समाय ॥ २ ॥
धुन झनकार अधर से आवत ।
अमी धार चहुँ दिस बरखाय ॥ ३ ॥
नूर[1] हिये में अद्भुत जागा ।
शोभा वाकी बरनी न जाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर की भारी ।
अस लीला दई मोहि दरसाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सुरतिया देख रही ।
सतगुरु का मोहन रूप ॥ १ ॥
सुरत शब्द की महिमा सुन सुन ।
धारी जुगत अनूप ॥ २ ॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
छोड़ दिया भौ कूप[2] ॥ ३ ॥
काल देस के परे सिधारी[3] ।
छोड़ी छाँह और धूप ॥ ४ ॥

१—प्रकाश । २—कुआँ । ३—गई ।

राधास्वामी दरस निहारा ।
जहाँ रेखा[1] नहिं रूप ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

सुरतिया फड़क रही ।
सुन सतगुरु बानी सार ॥ १ ॥
राग रागिनी धुन सँग गावत ।
जागत प्रेम पियार ॥ २ ॥
घट में नित प्रति करती फेरा ।
लीला अजब निहार ॥ ३ ॥
गुरु पद परस चढ़ी ऊँचे को ।
सत्तपुरुष दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारे ।
हुई उन पर बलिहार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

सुरतया केल[2] करत ।
घट शब्द धुनन के संग ॥ १ ॥
अधर चढ़त सुत हुई मतवाली ।
भींज रही रस रंग ॥ २ ॥
हंसन संग करत नित केला ।
छोड़ा जगत कुरंग[3] ॥ ३ ॥

१—आकार । २—क्रीड़ा । ३—मैला रंग ।

घट में पाया बिमल बिलासा।
रहे नित गुरु के संग ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन परस[1] मगनानी।
प्रीति बसी अँग अंग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

सुरतिया चाख रही।
घट शब्द अमी रस सार ॥ १ ॥
सतगुरु दया निरख रही नभ में।
झिलमिल जोत उजार ॥ २ ॥
देख गगन में सूर प्रकाशा।
चंद्र चाँदनी दसवें द्वार ॥ ३ ॥
भँवरगुफा सोहँग धुन पाई।
पहुँची सत्तपुरुष दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम अनूपा।
निरखा अचरज रूप अपार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

सुरतिया सज धज से आई।
चलन को सतगुरु देस ॥ १ ॥
बिरह भाव बैराग सम्हारत।
तज दिया माया लेस[2] ॥ २ ॥

१—छूकर। २—संबंध।

सुरत शब्द गह[१] चढ़ती सुन में ।
धारा हंसा भेस ॥ ३ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख ।
जहाँ न काल कलेश ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन जाय कर परसे ।
पाया पूरन ऐश[२] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६० ॥

सुरतिया लाय रही ।
गुरु चरनन प्यार ॥ १ ॥
उमँग सहित नित दरशन करती ।
पहिनाती गल हार ॥ २ ॥
भाव संग परशादी लेती ।
पियत चरन रस सार ॥ ३ ॥
ब्यंजन अनेक थाल भर लाई ।
आरत[३] गावत सन्मुख ठाढ़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करी अंतर में ।
निरखा घट उजियार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

सुरतिया गाय रही ।
राधास्वामी नाम अपार ॥ १ ॥

१—पकड़ कर । २—आराम । ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

दरशन कर गुरु सेवा करती ।
धर चरनन में प्यार ॥ २ ॥
लीला देख हरखती मन में ।
गुरु परतीत सम्हार ॥ ३ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
मगन[1] होत सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी मगन होय कर ।
दीना चरन अधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

सुरतिया परस[2] रही ।
राधास्वामी चरन अनूप ॥ १ ॥
बिरह अंग ले सन्मुख आई ।
मगन हुई लख अचरज रूप ॥ २ ॥
करम जलावत भाग सरावत[3] ॥
त्याग दिया अब भौजल कूप ॥ ३ ॥
अधर चढ़त स्रुत गगन सिधारी[4] ।
लखा जाय तिरलोकी भूप ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर धर ध्याना ।
निरख रही घट बिमल सरूप ॥ ५ ॥

१—प्रसन्न । २—छू । ३—सराहती । ४—गई ।

॥ शब्द ६३ ॥

सुरतिया दमक[1] रही।
 चढ़ घट में नभ के द्वार ॥ १ ॥
जोत उजार छिटक रहा सुन में।
 घंटा संख धूम अति डार ॥ २ ॥
सूरज चाँद अनेकन देखे।
 फूल रही अद्भुत फुलवार ॥ ३ ॥
आगे चढ़ पहुँची गगनापुर।
 उठत नाद जहाँ बानी सार ॥ ४ ॥
सतगुरु रूप लखा सतपुर में।
 राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

सुरतिया धार रही।
 गुरु आरत प्रेम जगाय ॥ १ ॥
बस्तर भूखन[2] बहु पहिनाती।
 नई नई सोभा देख हरखाय ॥ २ ॥
अनहद धुन घट शोर मचाया।
 घंटा संख मृदंग बजाय ॥ ३ ॥
हंस हंसनी जुड़ मिल आये।
 नाचें गावें उमँग बढ़ाय ॥ ४ ॥

१—चमक। २—भूषण, ज़ेवर।

प्रेम घटा घट उमड़त आई ।
 अमी धार चहुँ दिस बरखाय ॥ ५ ॥
नूर[1] पुरुष का घट में जागा ।
 कोट सूर और चन्द्र लजाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब सब पर ।
 चरन सरन दे लिया अपनाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

सुरतिया निरख रही ।
 घट अंतर शब्द प्रकाश ॥ १ ॥
चित रहै दीन लीन गुरु चरनन ।
 जग सँग रहत उदास ॥ २ ॥
गुरु की दया परख कर मन में ।
 गावत गुन निस बास[2] ॥ ३ ॥
गुरु की मूरत हिये बसाई ।
 निस दिन रहे गुरु पास ॥ ४ ॥
मन और सुरत जमावत तिल में ।
 धावत अधर अकास ॥ ५ ॥
जोत रूप लख चढ़त गगन पर ।
 सुन्न में पाया अगम निवास ॥ ६ ॥

१—प्रकाश । २—बासर, दिन ।

राधास्वामी दया करी अब मुझ पर।
घट में दीना परम बिलास ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९६ ॥

सुरतिया हरख रही।
आज गुरु छबि देख नई ॥ १ ॥
ज़ेवर कपड़े लाय अनेका।
कर सिंगार रही ॥ २ ॥
मसनद तकिया लाय पलँग पर।
गुरु को बिठाय दई ॥ ३ ॥
मोतियन की अब लड़ियाँ पोह[1] कर।
थाल सजाय लई ॥ ४ ॥
फूलन के गल हार पहिना कर।
गुरु के चरन पई ॥ ५ ॥
ले थाली गुरु आरत गावत।
चहुँ दिस हरख आनंदमई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर।
दीना नाम सही ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९७ ॥

सुरतिया ध्याय रही।
हिये में गुरु रूप बसाय ॥ १ ॥

[1]—गूँथ।

दृष्टि जोड़ कर धरती ध्याना ।
मन में प्रेम जगाय ॥ २ ॥
मन और सुरत सिमट नभ द्वारे ।
तन से रही अलगाय ॥ ३ ॥
आनँद अधिक पाय अब दिन दिन ।
गुरु चरनन में रही लिपटाय ॥ ४ ॥
धुन की धार अधर से आवत ।
पी पी रस हरखाय ॥ ५ ॥
निरखत घट में बिमल प्रकाशा ।
सूर चाँद जहाँ रहे लजाय ॥ ६ ॥
छिन छिन राधास्वामी के गुन गावत ।
चरन ओट ले सरन समाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

सुरतिया खेल रही ।
गुरु चरनन पास ॥ १ ॥
हरख हरख करती गुरु दरशन ।
देखत नित्त बिलास ॥ २ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी ।
बाढ़त नित्त हुलास ॥ ३ ॥

सेवा करत उमँग कर गुरु की ।
धर हिरदे बिस्वास ॥ ४ ॥
दया करी राधास्वामी प्यारे ।
देखा घट परकाश ॥ ५ ॥
उमँग २ करती गुरु ध्याना ।
सुनती घट में अमर अवास ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सरन गह बैठी ।
सब से होय उदास ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६९ ॥

सुरतिया सील भरी ।
आज करत गुरू सँग हेत ॥ १ ॥
जग ब्योहार त्याग दिया मन से ।
सुनत बचन गुरु चेत ॥ २ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
भजन ध्यान रस लेत ॥ ३ ॥
बिरह भाव बैराग सम्हारत ।
मन माया को डाला रेत[1] ॥ ४ ॥
गुरु किरपा तज श्याम[2] धाम को ।
सुरत लगाय रही पद सेत[3] ॥ ५ ॥

१—पीस । २—अंधकार पूर्ण । ३—निर्मल चेतन देश ।

सो पद दिया मेहर से गुरु ने ।
बेद पुकार रहा तिस नेत[1] ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीन अधीन निरख मोहिं ।
चरनन रस अब छिन २ देत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७० ॥

सुरतिया माँग रही ।
सतगुरु से अचल सुहाग ॥ १ ॥
दया धार सतगुरु मोहिं भेटे ।
जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥ २ ॥
गहिरी प्रीत लगी उन चरनन ।
जगत मोह टूटा ज्यों ताग[2] ॥ ३ ॥
निज घर का मोहिं भेद सुनाया ।
सुरत उठी अब धुन सँग जाग ॥ ४ ॥
उमँग अंग ले चढ़त अधर में ।
छूटा मन का द्वेष और राग ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन पहुँची दस द्वारे ।
काल देस अब दीना त्याग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया गई निज घर में ।
बैठ रही उन चरनन लाग ॥ ७ ॥

१—'नेति', 'न इति' कह कर जिसकी तरफ़ इशारा करता है । २—कच्चा, धागा ।

॥ शब्द ७१ ॥

सुरतिया प्यार करत।
सतगुरु से हिये धर भाव ॥ १ ॥
जगत प्रीति तज तन मन वारत।
अस न मिलै फिर दाव[1] ॥ २ ॥
भेद पाय स्रुत अधर चढ़ावत।
निरख उजार बढ़त घट चाव[2] ॥ ३ ॥
सतगुरु चरन प्रेम नया जागा।
सहती बिरहा ताव[3] ॥ ४ ॥
करम धरम सब छोड़े छिन में।
माया काल दोऊ हट जाव ॥ ५ ॥
सुनत नाद[4] चाली गगनापुर।
वहाँ से सूरत अधर लगाव ॥ ६ ॥
सत्त शब्द से जाय मिली अब।
आगे राधास्वामी चरन समाव ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७२ ॥

सुरतिया प्रेम सहित।
अब करती गुरु सतसंग ॥ १ ॥
बाली[5] भोली सरना आई।
धार ग़रीबी अंग ॥ २ ॥

१—मौक़ा। २—शौक़। ३—पीड़ा। ४—शब्द। ५—छोटी उम्र में।

राधास्वामी नाम सुमिरती हित से ।
मन की रोक तरंग[1] ॥ ३ ॥
सतसँग बचन धारती हिये में ।
होवत संसय भंग[2] ॥ ४ ॥
ध्यान धरत निरखत परकाशा ।
धारा रंग बिरंग ॥ ५ ॥
दिन दिन घट में होत सफ़ाई ।
छूटे सबही कुरंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर से अपनी ।
मोहि सिखाया भक्ती ढंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

सुरतिया सींच रही ।
गुरु चरन प्रीति फुलवार ॥ १ ॥
दरशन कर गुरु सेवा करती ।
उमँग उमँग धर प्यार ॥ २ ॥
सतसँग बचन सम्हारत मन में ।
कर कर मनन बिचार ॥ ३ ॥
सार धार नित करती करनी ।
रहनी सुमत[3] सुधार ॥ ४ ॥

१—वासनाओं की लहरें । २—नाश । ३—सुबुद्धि ।

चरन गुरू अब दृढ़ कर पकड़े ।
हिरदे सरन सम्हार ॥ ५ ॥
मन और सुरत लगे घट अंतर ।
सुन सुन धुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ाई ।
पहुँच गई सतगुरु दरबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

सुरतिया पूज रही ।
गुरु चरन बिरह धर चीत ॥ १ ॥
समझ बूझ सतसँग के बचना ।
धारी भक्ती रीत ॥ २ ॥
जग जीवन की परख[1] पिरीती ।
गुरु को माना सच्चा मीत ॥ ३ ॥
निरख परख सतगुरु की लीला ।
धरी हिरदे परतीत ॥ ४ ॥
नित २ घट में प्यार बढ़ावत ।
गुरु भक्तन सँग लेती सीत[2] ॥ ५ ॥
जग जीवन से मेल न रखती ।
सतसँगियन से करती प्रीत ॥ ६ ॥

१—पहचान कर । २—प्रसाद ।

नित अभ्यास करत अब घट में ।
बूझी[1] सतसँग नीत[2] ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया माँगती हरदम ।
देव मिटाय सकल भ्रम भीत[3] ॥ ८ ॥
राधास्वामी आरत करत प्रेम से ।
जाऊँ निज घर भौजल जीत ॥ ९ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

सुरतिया प्रीति करत ।
सतगुरु से भाव जगाय ॥ १ ॥
हित चित से गुरु दरशन करती ।
बचन सुनत मन लाय[4] ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त अब छिन छिन ।
गुरु स्वरूप रही हिये बसाय ॥ ३ ॥
सतसँगियन से हेल मेल कर ।
गुरु सेवा को हित[5] से धाय ॥ ४ ॥
आरत करत प्रेम से पूरी ।
गुरु छबि देख अधिक हुलसाय ॥ ५ ॥
दया मेहर सतगुरु की परखत ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ६ ॥

१—समझी । २—ढंग । ३—डर । ४—लगा कर । ५—प्रेम ।

शब्द संग नित सुरत चढ़ावत ।
　गगन मँडल में पहुँची धाय ॥ ७ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस[1] के ।
　राधास्वामी लिये मनाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७६ ॥

सुरतिया मेल करत ।
　गुरु भक्तन से धर प्यार ॥ १ ॥
मदद लेय उन सबकी मिलकर ।
　आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना ।
　माँगे शब्द का भेद अपार ॥ ३ ॥
लख अनुराग[2] गुरू दातारा[3] ।
　नाम भेद दिया सबका सार ॥ ४ ॥
मेहर करी गुरु लिया अपनाई ।
　निरखा घट में शब्द उजार ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन स्रुत चढ़ी अधर में ।
　घंटा सुन गई नौ[4] के पार ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय ओं धुन पाई ।
　सतपुर सुनी बीन धुन सार ॥ ७ ॥

१—छू । २—प्रेम । ३—दयाल । ४—नौ इंद्रियों ।

राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में ।
अलख अगम के हो गई पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७७ ॥

सुरतिया आन पड़ी ।
सतसँग में तज घरबार ॥ १ ॥
सतसँगियन से हिल मिल चालत ।
गुरु से बढ़ावत दिन दिन प्यार ॥ २ ॥
बिरह अनुराग धार हिये अंतर ।
छोड़े जग के भोग असार[1] ॥ ३ ॥
भेद पाय धर गुरु परतीती ।
निस दिन करत अभ्यास सम्हार ॥ ४ ॥
मन और सुरत चढ़ावत घट में ।
पकड़ शब्द की धार ॥ ५ ॥
कथनी[2] बदनी[3] त्याग दीन चित ।
रहनी रहत भक्त अनुसार ॥ ६ ॥
नित नई दया परख सतगुरु की ।
देखत घट में बिमल बहार ॥ ७ ॥
हंस रूप होय अधर सिधारी ।
राधास्वामी चरन मिला आधार ॥ ८ ॥

१—झूठ । २—कहनी । ३—कोरी बातचीत ।

॥ शब्द ७८ ॥

सुरतिया धोय रही ।
अब चूनर मैल भरी ॥ १ ॥
भाव भरी सतसँग में आई ।
गुरु चरनन सुत जोड़ धरी ॥ २ ॥
बचन सुनत अनुराग बढ़ावत ।
सेवा को नित रहत खड़ी ॥ ३ ॥
गुरु की दया मैल मन धोवत ।
निरमल होय भव सिंध[1] तरी[2] ॥ ४ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
चढ़ पहुँची पद परस[3] हरी ॥ ५ ॥
गगन जाय परसे गुरु चरना ।
दसम द्वार गई होय छड़ी[4] ॥ ६ ॥
सतगुरु दरस मिला सतपुर में ।
सुफल हुई अब देह नरी[5] ॥ ७ ॥
अलख अगम की फिर सुध[6] लेकर ।
राधास्वामी चरनन आन पड़ी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७९ ॥

सुरतिया निरत[7] करत ।
गुरु सन्मुख कर सिंगार ॥ १ ॥

१—भव सिंध—भवसागर। २—पार गई। ३—पहुँच कर। ४—सबसे अलग। ५—मनुष्य की। ६—खबर। ७—नृत्य।

प्रीति प्रतीति का ज़ेवर पहिना ।
भाव[1] भक्ति के बस्तर धार ॥ २ ॥
अधर चढ़त धुन सुन स्रुत प्यारी ।
मस्त हुई सुन साँरग सार ॥ ३ ॥
हंस हंसनी सँग जुड़ मिल कर ।
नाचत गावत उमँग सम्हार ॥ ४ ॥
अजब समाँ अचरज यह औसर[2] ।
आनँद बरस रहा दस द्वार ॥ ५ ॥
बिना भाग बिन राधास्वामी किरपा ।
कौन लखे यह बिमल बहार ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन आगे चाली ।
बीन बजे सतगुरु दरबार ॥ ७ ॥
सज धज के स्रुत अधर सिधारी[3] ।
राधास्वामी चरन मिले निज सार ॥८॥

॥ शब्द ८० ॥

सुरतिया भाग भरी ।
आज गुरु दरशन रस लेत ॥ १ ॥
जगत राग[4] तज भाव[5] हिये धर ।
गुरु सँग करती हेत[6] ॥ २ ॥

१—श्रद्धा । २—मौक़ा । ३—गई । ४—मोह । ५—गुरु का भाव । ६—प्रेम ।

सतगुरु बचन अधिक मन भाये[१]।
　सुनती चित से चेत ॥ ३ ॥
उमँग उमँग कर तन मन धन को।
　वार चरन पर देत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु जुगत कमाती।
　डारत मन को रेत[२] ॥ ५ ॥
चित में धर बिस्वास गुरू का।
　जीत काल से खेत[३] ॥ ६ ॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में।
　तजत श्याम पहुँची पद सेत॥ ७ ॥
सब मत के सिद्धांत[४] अस्थाना।
　रह गये नीचे ब्रह्म समेत[५] ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया सम्हारत।
　पाय गई घर अद्भुत नेत[६] ॥ ९ ॥

॥ शब्द ८१ ॥

सुरतिया अभय हुई।
　घट में गुरु दरशन पाय ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति धार गुरु चरनन।
　सुरत शब्द की जुगत कमाय ॥ २ ॥

१—अच्छे लगे। २—पीस। ३—जीत खेत—लड़ाई जीत कर। ४—इष्ट। ५—साथ। ६—अनंत।

चढ़त अधर पहुँची नभपुर में ।
धुन घंटा और संख सुनाय ॥ ३ ॥
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीना ।
अनहद धुन मिरदंग बजाय ॥ ४ ॥
गुरु स्वरूप के दरशन कीने ।
माया काल रहे मुरझाय ॥ ५ ॥
कँवलन की फुलवार खिलानी ।
सूरज चाँद अनेक दिखाय ॥ ६ ॥
ऊपर चढ़ पहुँची दस द्वारे ।
हंसन संग मिली अब आय ॥ ७ ॥
तीन लोक के हो गई पारा ।
निरभय हुई सुन धुन रस पाय ॥ ८ ॥
दया मेहर से यह पद पाया ।
राधास्वामी लीना मोहि अपनाय ॥ ९ ॥

॥ शब्द ८२ ॥

सुरतिया छान[1] रही ।
अब गुरु मत कर सतसंग ॥ १ ॥
बचन सुनत नित करत बिचारा ।
होवत संशय भंग[2] ॥ २ ॥

१—छाँट। २—नाश।

भेद समझ नित करत कमाई ।
जोड़ सुरत धुन संग ॥ ३ ॥
जो कुछ बचन कहे संतन ने ।
घट में परख रही अँग अंग ॥ ४ ॥
शब्द बिलास निरख हिये अंतर ।
धारा सतगुरु रंग[1] ॥ ५ ॥
प्रेम बढ़त दिन दिन गुरु चरना ।
मन इच्छा हुए सहज अपंग[2] ॥ ६ ॥
सुरत हुई अब धुन रस माती[3] ।
चढ़त अधर जस चंग[4] ॥ ७ ॥
सहसकँवल होय त्रिकुटी धाई ।
सुन्न गई तज काल कुरंग[5] ॥ ८ ॥
भँवरगुफा का लखा उजाला ।
सतपुर पहुँची होय निहंग ॥ ९ ॥
राधास्वामी दया गई धुर धामा ।
धारा अद्भुत सहज सुरंग ॥ १० ॥

॥ शब्द ८३ ॥

सुरतिया भजन करत ।
हुई घट में आज निहाल ॥ १ ॥

१—प्रेम । २—लाचार, निबंल । ३—मतवाली । ४—पतंग । ५—मैला रंग । ६—आवरण रहित ।

सतगुरू बचन धार हिये अंतर ।
सुनत शब्द धुन सुरत सम्हाल ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति गुरू चरनन में ।
नित्त बढ़ावत होय खुशहाल ॥ ३ ॥
जगत किरत[1] से हुई उदासा ।
छिन छिन सुमिरत गुरू दयाल ॥ ४ ॥
उमँग उमँग गुरु सतसँग चाहत ।
तोड़ फोड़ सब माया जाल ॥ ५ ॥
बिघन लगाय काल उलझावत ।
काम क्रोध की डालत पाल[2] ॥ ६ ॥
मैं राधास्वामी बल हिये धर अपने ।
मन इच्छा को मारूँ हाल ॥ ७ ॥
मेहर बिना कुछ बन नहिं आवे ।
दया करो राधास्वामी कृपाल ॥ ८ ॥
करम काट सुत अधर चढ़ाओ ।
दूर करो यह सब जंजाल ॥ ९ ॥
दीन होय तुम सरना आई ।
राधास्वामी करो मेरी प्रतिपाल[3] ॥ १० ॥

१—काररवाई । २—परदा । ३—रक्षा ।

॥ शब्द ८४ ॥

सुरतिया मान रही ।
गुरु बचन सम्हार सम्हार ॥ १ ॥
सतसँग करत नित्त हित चित से ।
चुन चुन बचन हिरदे में धार ॥ २ ॥
सेवा करत उमँग से निस दिन ।
गुरु सतसँगियन से धर प्यार ॥ ३ ॥
ले उपदेश गुरू से सारा ।
सुमिरन नाम करत आधार ॥ ४ ॥
ध्यान धरत घट निरख उजारी ।
मगन होत सुन धुन झनकार ॥ ५ ॥
परचा[1] पाय घट बढ़त उमंगा ।
गुरु चरनन धरा तन मन वार ॥ ६ ॥
प्रीति प्रतीति पकाय[2] हिये में ।
सरन गही अब आपा[3] डार ॥ ७ ॥
नित प्रति सुरत अधर में चढ़ती ।
सहसकँवल त्रिकुटी दस द्वार ॥ ८ ॥
भँवरगुफा सतलोक निहारत ।
अलख अगम के पहुँची पार ॥ ९ ॥

१—अंतरी अनुभव । २—पक्की करके । ३—अहंकार ।

राधास्वामी मेहर से काज बनाया।
छिन छिन चरनन पर बलिहार ॥ १० ॥

॥ शब्द ८५ ॥

सुरतिया लीन हुई ।
चरनन में रूप निहार ॥ १ ॥
महिमा सुन सतसँग में आई ।
बचन सुने अनुराग[1] सम्हार ॥ २ ॥
जगत बासना त्यागी छिन में ।
भोग दिये तज जान बिकार[2] ॥ ३ ॥
मोह जाल का फंदा काटा ।
करम धरम का भार[3] उतार ॥ ४ ॥
प्रीति करत अब गुरु सँग पूरी ।
हिये दृढ़ निश्चय धार ॥ ५ ॥
निज कर सरन गही सतगुरु की ।
राधास्वामी चरन बढ़ावत प्यार॥ ६ ॥
ले उपदेश चलत अब घट में ।
पकड़ शब्द की धार ॥ ७ ॥
जोत निरख पहुँची गगनापुर ।
चंद्र रूप लख गुफा उजार[4] ॥ ८ ॥

१—प्रेम । २—दोष । ३—बोझ । ४—प्रकाश ।

सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी रूप लखा निज सार ॥ ९ ॥

आरत[1] कर राधास्वामी रिझाती[2]
छिन छिन पियत अमी रस सार ॥ १० ॥

॥ शब्द ८६ ॥

सुरतिया धीर धरत।
नित करनी करत सम्हार ॥ १ ॥

बिरह अनुराग धार घट अंतर।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥

सुन उपदेश मगन हुई मन में।
नित्त बढ़ावत प्यार ॥ ३ ॥

घट का भेद समझ सतगुरु से।
सुरत लगावत धुन की लार ॥ ४ ॥

सुमिरन कर घट होत सफ़ाई।
ध्यान लाय गुरु रूप निहार ॥ ५ ॥

नित प्रति घट में बढ़त उजारी।
शब्द मचावत अधिक पुकार ॥ ६ ॥

धीरज धर नित करत कमाई।
प्रेम जगावत बिरह सम्हार ॥ ७ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। २—प्रसन्न करती।

घंटा संख सुनी धुन मिरदँग।
सारंगी सुनी मुरली सार ॥ ८ ॥
सुन धुन बीन हुई मस्तानी।
पहुँची सत्तपुरुष दरबार ॥ ९ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने।
पहुँच गई अब निज घरबार ॥ १० ॥

॥ शब्द ८७ ॥

सुरतिया उमँग भरी।
आज लाई आरती[१] साज[२] ॥ १ ॥
घंटा संख बजी धुन नभपुर।
गगन सुनाई मिरदँग गाज[३] ॥ २ ॥
भाव बढ़ा सतगुरु चरनन में।
उन दिया भक्ति का दाज[४] ॥ ३ ॥
मेहर हुई कल[५] मल सब नाशे।
छोड़ दिया मन कपटी पाज[६] ॥ ४ ॥
त्रिकुटी जाय दरस गुरु पाया।
तीन लोक का मिल गया राज ॥ ५ ॥
मन माया से नाता टूटा।
काल करम का छूटा बाज[७] ॥ ६ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। २—सजा कर। ३—गरज, जोर की आवाज़। ४—दान। ५—काल के। ६—ढोंग। ७—महसूल।

सुन में जाय मानसर न्हाई ।
हो गई सूरत निरमल आज ॥ ७ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर धाई ।
मुरली बीन रही जहाँ बाज ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया बिचारी ।
आज किया मेरा पूरन काज ॥ ९ ॥
क्या मुख ले उन महिमा गाऊँ ।
कहत कहत मोहि आवे लाज ॥ १० ॥

॥ शब्द ८८ ॥

सुरतिया परख[1] रही ।
घट में गुरु दया अपार ॥ १ ॥
निपट[2] अजान चरन में आई ।
गुरु कीना मुझ से प्यार ॥ २ ॥
बालक सम गुरु मोहि निहारा ।
चरन ओट दे लिया सम्हार ॥ ३ ॥
किरपा कर मोहि जुगत बताई ।
शब्द भेद दिया सब का सार ॥ ४ ॥
समझ बूझ मोहि आपहि दीनी ।
संशय भरम दिये सब टार[3] ॥ ५ ॥

१—जाँच । २—बिलकुल । ३—हटा ।

प्रेम सहित गुरु बानी गाऊँ।
राधास्वामी नाम जपूँ हर बार ॥ ६ ॥
प्रेमी जन की सेवा करती।
धर गुरु चरनन भाव और प्यार ॥ ७ ॥
सतसँग बचन उमँग से सुनती।
धरती मन में कर बीचार ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया भरोसा भारी।
धार रही परतीत सम्हार ॥ ९ ॥
सब बिधि काज सवारें[1] मेरा।
राधास्वामी अपनी ओर निहार॥१०॥
राधास्वामी परम दयाल कृपानिधि।
अपनी दया से लिया मोहि उबार ॥११॥

॥ शब्द ८९ ॥

सुरतिया निरख रही।
घट माहिं रूप गुरु मनभावन[2] ॥ १ ॥
जनम जनम के पातक[3] नासे।
लग गुरु चरन हुई पावन[4] ॥ २ ॥
सतसंगत में अति हुलसानी।
दूर हुई मन की धावन[5] ॥ ३ ॥

१—बनावें। २—सुंदर। ३—पाप। ४—पवित्र। ५—दौड़ धूप, परेशानी।

सार भेद गुरु दिया बताई ।
मेट दई जग की भावन[1] ॥ ४ ॥
करम कटाये भरम नसाये ।
या जग में अब नहिं आवन ॥ ५ ॥
गुरु परतीत बढ़ी हिये अंतर ।
नित नई प्रीति चरन लावन ॥ ६ ॥
मन और सुरत जोड़ चरनन में ।
धुन रस पाय अधर जावन ॥ ७ ॥
सहसकँवल होय त्रिकुटी धावत ।
जहाँ वहाँ गुरु पद दरसावन ॥ ८ ॥
मन का सँग तज चढ़ी अधर में ।
सुन में जा बेनी[2] न्हावन ॥ ९ ॥
मुरली धुन सुन सतपुर आई ।
लगी सतगुरु के गुन गावन ॥ १० ॥
चरन सरन राधास्वामी पाई ।
अजर अमर घर सुख पावन ।

॥ शब्द ९० ॥

सुरतिया प्रीति भरी ।
अब लाई आरती जोड़ ॥ १ ॥

१—भावना, इच्छा । २—त्रिवेणी ।

दीन अधीन चित्त ले थाली।
　जोत जगाई मन को मोड़ ॥ २ ॥
प्रेम भरी गुरु आरत[1] गाती।
　शब्द किया अब घट में शोर ॥ ३ ॥
घंटा संख बजी धुन नभ में।
　मिरदँग गाजी[2] और घन घोर[3] ॥ ४ ॥
आनँद अधिक हुआ अब मन में।
　दूर हुआ सब मोर और तोर ॥ ५ ॥
ररंकार धुन सुनी चढ़ सुन में।
　घट गया काल करम का ज़ोर ॥ ६ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन पाई।
　रैन गई अब हो गया भोर[4] ॥ ७ ॥
वहाँ से भी फिर आगे चाली।
　बीन सुनी सतपुर की ओर ॥ ८ ॥
अलख पुरुष का धाम निहारा।
　अगम लोक चढ़ पाई ठौर[5] ॥ ९ ॥
उमँग अंग ले अधर सिधारी।
　राधास्वामी धाम गई मैं दौड़ ॥ १० ॥
राधास्वामी दृष्टि[6] करी कर प्यारा।
　लीनी सुरत चरन में जोड़ ॥ ११ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। २—गरजने लगी, ज़ोर से बजने लगी। ३—बादल की गरज। ४—सवेरा। ५—जगह। ६—दया की दृष्टि।

॥ शब्द ९१ ॥

सुरतिया पकड़ गुरू की बाँह ।
उमँग कर निज घर को जाती ॥ १ ॥
समझ सोच गुरु बचन अमोला ।
होय गई धुन रस माती[1] ॥ २ ॥
नित अभ्यास करत अब घट में ।
मन इन्द्री को ले साथी ॥ ३ ॥
गुरु का रूप अधिक मन भाया[2] ।
ध्यान धरत हिये दिन राती ॥ ४ ॥
करम धरम और भरम अनेका ।
इन सब की अब हुई घाती[3] ॥ ५ ॥
सहसकँवल होय चढ़ी गगन में ।
गुरु दरशन रस हुई राती[4] ॥ ६ ॥
माया काल लगाईं अटकें ।
गुरु बल मार धरे लाती[5] ॥ ७ ॥
प्रेम भरे राग और रागिनी ।
सुन में हंसन सँग गाती ॥ ८ ॥
महासुन्न के पार गुफा में ।
सोहँग मुरली बजवाती ॥ ९ ॥

१—मतवाली। २—अच्छा लगा। ३—नाश। ४—लीन। ५—लातों से।

सत्तपुरुष सँग आरत[1] करती ।
मधुर बीन धुन सुनवाती ॥ १० ॥
राधास्वामी दीनदयाला ।
चरन सरन की दई दाती ॥ ११ ॥

॥ शब्द ८२ ॥

सुरतिया अधर चढ़ी ।
गुरु दई प्रेम की दात ॥ १ ॥
दया हुई गुरु सन्मुख आई ।
उन धरा मेहर का हाथ ॥ २ ॥
संत मते की महिमा जानी ।
सतसँग कर दिन रात ॥ ३ ॥
दया मेहर से बचन सुनाये ।
परख परख समझी गुरु बात ॥ ४ ॥
चरन सरन गुरु हिरदे धारी ।
टूट गया अब जम से नात[2] ॥ ५ ॥
सुरत शब्द मारग ले सारा ।
करती शब्द बिख्यात[3] ॥ ६ ॥
धुन रस पाय सुरत अब जागी ।
दूर हुए मन के उतपात[4] ॥ ७ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । २—संबंध । ३—प्रकट । ४—झगड़े ।

करम भरम सब दीन नसाई ।
काल बली की निरखी घात[1] ॥ ८ ॥
चढ़ी सुरत पहुँची नभपुर में ।
गगन मँडल गुरु दरशन पात ॥ ९ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख ।
सत्तलोक धुन बीन सुनात ॥ १० ॥
अलख अगम का दरशन करके ।
राधास्वामी चरन समात ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९३ ॥

सुरतिया गाय रही ।
गुरु महिमा सार ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन ।
चरन सरन रही हिरदे धार ॥ २ ॥
उमँग सहित सेवा को धावत ।
हरख रही गुरु रूप निहार[2] ॥ ३ ॥
प्रेम सहित सुनती धुन अनहद ।
निरख रही घट मोक्ष दुआर ॥ ४ ॥
द्वारा फोड़ चढ़त नभ ऊपर ।
घंटा संख सुना धर प्यार ॥ ५ ॥

१—चोट, धोखा । २—देख कर ।

गुरु पद पाय सुन्न में धाई।

गुरु सँग गई महासुन पार ॥ ६ ॥

मुरली धुन सुन बीन बजावत।

भेंटी जाय सत्त करतार ॥ ७ ॥

अलख अगम के पार हुई जब।

मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥८॥

प्रेम उमंग नवीन जगावत।

आरत[1] गावत सन्मुख ठाड़[2] ॥ ९ ॥

मेहर दया सतगुरु की पाई।

खुल गया अब भक्ती भंडार ॥ १० ॥

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी।

गावत रहूँ अब लैलो निहार[3] ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९४ ॥

सुरतिया भींज रही।

गुरु प्रेम रंग बरसाय ॥ १ ॥

मगन होय धरती गुरु ध्याना।

घट में दरशन पाय ॥ २ ॥

अचरज रूप दिखाया गुरु ने।

सोभा वाकी बरनी न जाय ॥ ३ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। २—खड़ी। ३—लैलो निहार—रात दिन।

उमँग उमँग चरनन में लागी ।
दिन दिन प्रेम प्रीति अधिकाय॥ ४ ॥
शब्द सुनत अब चढ़त अधर में ।
नभ में जोत रूप दरसाय ॥ ५ ॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत ।
सुन्न में चढ़ निरमल गत[1] पाय॥ ६ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन सुन कर ।
सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ७ ॥
अचरज दरस पुरुष का पाया ।
मेहर से दई धुन बीन सुनाय ॥ ८ ॥
अलख पुरुष दरबार निरख कर ।
अगम लोक में पहुँची धाय॥ ९ ॥
धाम अनामी अपर अपारा[2] ।
वहाँ आरती प्रेम सजाय ॥ १० ॥
राधास्वामी के चरनन लागी ।
अचरज सोभा क्या कहूँ गाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९५ ॥

सुरतिया सुनत रही ।
हित चित से सतगुरु बैन[3] ॥ १ ॥

१—अवस्था । २—अपर अपारा—बड़े से बड़ा । ३—बचन ।

मगन होय गुरु दरशन लागी ।
ताकत रही गुरु ऐन[1] ॥ २ ॥
चित हुआ साफ़ बुद्धि हुई निरमल ।
परखी घट की सैन[2] ॥ ३ ॥
मन और सुरत लगे घट जुड़ने ।
धर गुरु ध्यान रूप रस लेन ॥ ४ ॥
प्रीति बढ़त परतीत सम्हारत ।
गुरु के पास बसत दिन रैन[3] ॥ ५ ॥
बिन गुरु दरस बिकल रहे मन में ।
सतसंगत में पावत चैन ॥ ६ ॥
करम भरम से हुई अब न्यारी ।
काल से छूटा लेन और देन ॥ ७ ॥
दीन जान गुरु दया बिचारी ।
सुरत चली अब घट में पैन[4] ॥ ८ ॥
नभ में लखा जोत उजियारा ।
त्रिकुटी जाय सुनी गुरु कहेन[5] ॥ ९ ॥
धुन की ख़बर लेत चली आगे ।
सुन्न में जाय खुले हिये नैन ॥ १० ॥
सतपुर होय गई धुर धामा ।
निरखा अचरज रूप अनैन[6] ॥ ११ ॥

१—नेत्र । २—इशारा । ३—रात । ४—तेजी से । ५—कहन, बचन, शब्द । ६—बिना नेत्रों के ।

मोहिं निकाम नीच को छिन में।
राधास्वामी मेहर से कीना महन[1] ॥१२॥

॥ शब्द ९६ ॥

सुरतिया सेव रही।
गुरु चरन सम्हार ॥ १ ॥
भक्ति भाव हिये माहिं बढ़ावत।
धर चरनन में प्यार ॥ २ ॥
सेवा करत उमँग से निस दिन।
मन नहिं लावे आर[2] ॥ ३ ॥
लोक लाज की कान[3] न लावे।
हाज़िर रहे दरबार ॥ ४ ॥
कोइ कुछ कहवे मन नहिं लावे।
दीन अधीन पड़ी गुरु द्वार ॥ ५ ॥
करम भरम तज सरन सम्हारी।
मन में निश्चय धार ॥ ६ ॥
सतसँग में मन चित हुलसाना।
सुनत बचन गुरु सार ॥ ७ ॥
शब्द माहिं नित सुरत लगावत।
सुन अनहद झनकार ॥ ८ ॥

१—महान, बड़ा। २—ऐतराज़। ३—शर्म।

हिरदे में गुरु रूप बसावत ।
ध्यान धरत हर बार ॥ ९ ॥
सुमिरन नाम करे निस बासर[1] ।
राधास्वामी टेक अधार ॥ १० ॥
जगे भाग गुरु दरशन पाये ।
काल से तोड़ा नाता झाड़[2] ॥ ११ ॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला ।
सहज किया भौसागर पार ॥ १२ ॥

॥ शब्द ८७ ॥

सुरतिया चटक[3] चली ।
सुन धुन झनकार ॥ १ ॥
दीन चित्त होय सन्मुख आई ।
कीना गुरु से प्यार ॥ २ ॥
बिरह भाव बैराग हिये धर ।
बचन सुनत हुशियार ॥ ३ ॥
दया धार गुरु जुगत बताई ।
करनी करत सम्हार ॥ ४ ॥
उलट पलट घट अंतर लागी ।
तज काल अंग बीकार[4] ॥ ५ ॥

१—दिन । २—बिलकुल । ३—तेज़ी से । ४—विकार, दोष ।

शब्द डोर गह[1] चढ़त अधर में ।
निरखा जोत उजार ॥ ६ ॥
मन हुआ लीन चरन में गुरु के ।
लख रही त्रिकुटी लीला सार ॥ ७ ॥
सुन में जाय मिली हंसन से ।
बाज रही जहाँ सारँग सार ॥ ८ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर पहुँची ।
काल और महाकाल रहे हार ॥ ९ ॥
अलख लोक में सुरत सुधारी ।
अगम लोक चढ़ किया सिंगार ॥ १० ॥
पुहप[2] सिंघासन स्वामी बिराजे ।
अचरज सोभा धार ॥ ११ ॥
दरशन कर अति कर हरखानी ।
राधास्वामी चरन गहे निज सार ॥१२॥

॥ शब्द ९८ ॥

सुरतिया हरख रही ।
गुरु देख जमाल[3] ॥ १ ॥
बिरह भाव ले सन्मुख आई ।
मगन हुई सुन बचन रसाल[4] ॥ २ ॥

१—पकड़ कर । २—पुष्प । ३—भव्य स्वरूप । ४—रसीले ।

समझ समझ गुरु बात अमोला ।
त्याग दिये सब माया ख़्याल ॥ ३ ॥
भोगन से इंद्रियन को रोकत ।
निरखत रही नित मन की चाल ॥ ४ ॥
गुरु स्वरूप का ध्यान हिये धर ।
तोड़ दिया बल काल कराल[1] ॥ ५ ॥
लोभ मोह और मान ईरखा ।
दूर हटाये बिरह सम्हाल ॥ ६ ॥
रोक टोक अब करे न कोई ।
काम क्रोध नहिं डारत पाल[2] ॥ ७ ॥
बाट[3] छोड़ माया थक बैठी ।
अब नहिं डारत अपना जाल ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया सुरत हुई निर्मल ।
चढ़त अधर घर हाल ॥ ९ ॥
नभ चढ़ सुरत गगन को धाई ।
सुन्न सिखर गई सतगुरु नाल[4] ॥ १० ॥
भँवरगुफा होय सतपुर पहुँची ।
अलख अगम लख हुई खुशहाल ॥ ११ ॥
राधास्वामी दरस निहारा ।
चरन सरन गह[5] हुई निहाल ॥ १२ ॥

१—भयंकर । २—परदा । ३—रास्ता । ४—साथ । ५—लेकर ।

॥ शब्द ९९ ॥

सुरतिया नाच रही ।
चढ़ गगन शब्द सुन तान ॥ १ ॥
उमँग उमँग गुरु दरशन करती ।
त्यागा मन का मान ॥ २ ॥
सुन सुन धुन फिर आगे चाली ।
हंसन संग मिली अब आन ॥ ३ ॥
हरख हरख सब हंस हंसनी ।
गावत गुन सतगुरु धर ध्यान ॥ ४ ॥
गुरु बल गई महासुन पारा ।
सुनत रही मुरली धुन कान ॥ ५ ॥
पहुँची जाय पुरुष दरबारा ।
पाय गई सत शब्द निशान ॥ ६ ॥
अलख अगम के चरन परस[1] कर ।
पहुँची धुर अस्थान ॥ ७ ॥
राधास्वामी पुरुष अनामी ।
प्रेम भक्ति मोहिं दीना दान ॥ ८ ॥
दीन अधीन पड़ी चरनन में ।
चरन सरन दृढ़ कीनी आन[2] ॥ ९ ॥

१—छू । २—आकर ।

प्रेम सहित उन आरत[1] गाती ।
वार धराती[2] जान और प्रान ॥ १० ॥
महिमा राधास्वामी अतिसै[3] भारी ।
क्योंकर करूँ बखान ॥ ११ ॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी दयाला ।
दीना चरन ठिकान ॥ १२ ॥

॥ शब्द १०० ॥

सुरतिया झूम रही ।
अब पिया अमी[4] रस नाम ॥ १ ॥
तन मन की अब सुध बिसरानी ।
दिया गुरू अस जाम[5] ॥ २ ॥
सुन सुन धुन नभ ऊपर धाई ।
पाया जोत मुक़ाम ॥ ३ ॥
घंटा संख दोऊ धुन छोड़ी ।
चढ़ गई त्रिकुटी बाम[6] ॥ ४ ॥
मगन हुई गुरु दरशन पाए ।
हारे काल और जाम[7] ॥ ५ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हाई ।
हंसन संग किया बिसराम ॥ ६ ॥

१—देखिए पृष्ठ २ नोट नं० ३ । २—वार धराती—निछावर कर देती । ३—अतिशय, अत्यंत । ४—अमृत । ५—प्याला । ६—छत पर । ७—यमराज ।

वहाँ से चली अधर को प्यारी।
　भँवरगुफा मुरली धुन गाम[1] ॥ ७ ॥
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में।
　पहुँची सतगुरु धाम ॥ ८ ॥
अलख अगम की धुन सुन धाई।
　कीना पूरा काम ॥ ९ ॥
राधास्वामी पुरुष अनामी।
　पाया अब निज ठाम[2] ॥ १० ॥
दीन लीन होय आरत गाती।
　पाई शीतल छाम[3] ॥ ११ ॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला।
　चरनन में दीना आराम ॥ १२ ॥

॥ शब्द १०१ ॥

सुरतिया घूम गई।
　तज जगत भाव भय प्यार ॥ १ ॥
सतसँग कर निर्मल बुध जागी।
　देखा जगत असार ॥ २ ॥
कुमत उड़ाय सुमत अब धारी।
　तज दिये मन के सभी बिकार ॥ ३ ॥

१—गाती है। २—स्थान। ३—छाया।

संत मता[1] अति पूरा साँचा ।
धुर पहुँचावनहार ॥ ४ ॥
सुन गुरु बचन समझ अस महिमा ।
मन से उसको लीना धार ॥ ५ ॥
उमँग सहित गुरु सेवा लागी ।
नित्त बढ़ावत चरनन प्यार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द मारग निज सारा ।
गुरु से पाया भेद अपार ॥ ७ ॥
प्रीति सहित अभ्यास करूँ नित ।
चाखत रहूँ शब्द रस सार[2] ॥ ८ ॥
उलट पलट अब चढ़ी गगन पर ।
मगन हुई गुरु रूप निहार ॥ ९ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
धुन मुरली और बीन सम्हार ॥१०॥
निरख दरस गुरु अलख अगम का ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ११
हुए प्रसन्न राधास्वामी प्यारे ।
चरन सरन दी दया बिचार ॥ १२ ॥

१—मजहब । २—असली ।

॥ शब्द १०२ ॥

सुरतिया लिपट रही ।
धर शब्द गुरू सँग प्यार ॥ १ ॥
भाव भक्ति से चरन परसती[१] ।
पहिनाती गल हार ॥ २ ॥
उलट दृष्टि गुरु दरशन करती ।
तन मन सुरत बिसार[२] ॥ ३ ॥
प्रेम भरी मुख आरत गाती ।
चरनन पर जाती बलिहार ॥ ४ ॥
गुरु दयाल मोहिं निरख अधीना[३] ।
लीना भुजा पसार ॥ ५ ॥
चरन सरन मोहिं निज कर दीनी ।
काल करम को डाला वार[४] ॥ ६ ॥
क्योंकर गुन राधास्वामी गाऊँ ।
उन बिन नहिं मोहिं और अधार ॥७॥
इत[५] से घूम निरखती घट में ।
गुरु का अद्भुत रूप अपार ॥ ८ ॥
मचल मचल चरनन लिपटानी ।
झूम रही पी अमृत धार ॥ ९ ॥

१—स्पर्श करती । २—भुलाकर । ३—दीन । ४—इसी तरफ । ५—इधर ।

जग जिव भाव हटाया गुरु ने ।
 दीना निरमल जीवन सार ॥ १० ॥
अटक भटक तज पकड़े चरना ।
 राधास्वामी हुए मेरे प्रिय भरतार[1] ॥११॥
पति और पिता उन्हीं को जानूँ ।
 रहूँ निस दिन उन मौज अधार ॥१२॥

॥ शब्द १०३ ॥

सुरतिया रंग[2] भरी ।
 गुरु सन्मुख उमँगत आय ॥ १ ॥
दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ावत ।
 चरनन रहो लिपटाय ॥ २ ॥
साज सँवार करत गुरु भक्ती ।
 नित नई प्रेम रीत दरसाय ॥ ३ ॥
मन इँद्रियन से जूझ जूझ[3] कर ।
 लेती खूँट[4] छुड़ाय ॥ ४ ॥
छिन छिन जोड़त सुरत शब्द में ।
 धुन झनकार सुनाय ॥ ५ ॥
मेहर दया राधास्वामी की परखत[5] ।
 नित नया आनँद पाय ॥ ६ ॥

१—स्वामी। २—प्रेम। ३—जूझ जूझ—लड़ लड़। ४—संबंध। ५—पहचान कर।

जब तब माया बिघन लगावत ।
　काल रहे मग[1] में अटकाय ॥ ७ ॥
तबही चित्त उदास होय कर ।
　गिरत पड़त धुन रस नहिं पाय ॥ ८ ॥
गुरु से करे फ़रियाद घनेरी[2] ।
　क्यों नहिं मेरी करो सहाय ॥ ९ ॥
गुरु की दया सदा सँग रहती ।
　मसलहत उनकी बूझ[3] न पाय ॥ १० ॥
अटक भटक जो मग में भेंटत ।
　देत नई बिरह उमँग जगाय ॥ ११ ॥
याते धर बिस्वास हिये में ।
　सूरत मन नित अधर चढ़ाय ॥ १२ ॥
राधास्वामी मेहर दया से अपने ।
　पूरा काज बनाय ॥ १३ ॥
मैं अति दीन निबल निरआसर[4] ।
　आन पड़ा उनकी सरनाय ॥ १४ ॥
प्रेम सहित नित आरत[5] करके ।
　राधास्वामी लेउँ रिझाय[6] ॥ १५ ॥

१—रास्ते । २—बहुत । ३—समझ । ४—बिना सहारे के । ५—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ६—लेउँ रिझाय—प्रसन्न कर लूँ ।

॥ शब्द १०४ ॥

सुरतिया मस्त हुई ।
अब पाया दरश गुरु आय ॥ १ ॥
सुन सुन धुन तिल फोड़ सिधारी[1] ।
नभ में पहुँची धाय ॥ २ ॥
घंटा संख अति धूम मचाई ।
दरशन जोत दिखाय ॥ ३ ॥
बँकनाल धस त्रिकुटी आई ।
गरज मृदंग सुनाय ॥ ४ ॥
गुरु का रूप लखा हिये अंतर ।
अद्भुत सोभा बरनी न जाय ॥ ५ ॥
अक्षर[2] रूप लखा[3] सुन माहीं ।
हंसन संग मिलाप बढ़ाय ॥ ६ ॥
गुरु बल गई महासुन पारा ।
भँवरगुफा मुरली धुन गाय ॥७॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख ।
मधुर मधुर धुन बीन बजाय ॥ ८ ॥
अलख अगम का रूप अनूपा ।
लख हिये प्रेम अधिक रहा छाय ॥९॥

१—गई । २—अक्तर पुरुष का । ३—देखा ।

अचरज धाम निरखती चाली ।
राधास्वामी चरन रही लिपटाय ॥१०॥
प्रेम प्रीति से आरत[1] साजी ।
राधास्वामी लिए रिझाय ॥ ११ ॥
प्रेम आनंद मिला अति भारी ।
अब किसको मैं कहूँ सुनाय ॥१२॥
अजब धाम[2] पाया मैं सजनी।
महिमा ताकी[3] कही न जाय ॥१३॥
दया करी राधास्वामी प्यारे ।
लीना मुझको अंग लगाय ॥ १४ ॥
छिन छिन गुन गाऊँ गुरु प्यारे ।
पल पल राधास्वामी रही धियाय ।१५।

॥ शब्द १०५ ॥

सुरतिया मगन भई ।
गुरु देख दीदार[4] ॥ १ ॥
बचन बान गुरु तान चलाये ।
सुन सुन हुई सरशार[5] ॥ २ ॥
हरख हरख गुरु सतसँग करती ।
भूल गई संसार ॥ ३ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। २—स्थान। ३—उसकी। ४—दर्शन। ५—पूर्ण संतुष्ट।

प्रेम बढ़ा दिन दिन गुरु चरनन ।
तन मन धन सब दीना वार ॥ ४ ॥
गुरु का रूप अनूप हिये में ।
निरख रही छिन छिन कर प्यार ॥ ५ ॥
आठ जाम[1] सुत रहे रँगीली ।
प्रेम प्रीति का कर सिंगार ॥ ६ ॥
नींद भूख आलस सब छोड़ा ।
चढ़ा रहे नित प्रेम खुमार[2] ॥ ७ ॥
गुरु के रंग रँगी सुत रंगी[3] ।
त्याग दिया सब जग ब्योहार ॥ ८ ॥
छिन छिन भाग सरावत अपना ।
माया काल रहे दोउ हार ॥ ९ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ १० ॥
सुन सुन धुन पहुँची नभपुर में ।
बंकनाल धस त्रिकुटी पार ॥ ११ ॥
सुन्न के परे महासुन धाई ।
भँवरगुफा सतलोक निहार ॥ १२ ॥
अलख अगम के पार ठिकाना ।
पाया राधास्वामी चरन अधार ॥ १३ ॥

१—पहर । २—नशा । ३—प्रेमिन ।

प्रेम प्रीति से आरत साजी ।
　गाय रही मैं सन्मुख ठाड़[१] ॥ १४ ॥
चरन सरन दे गोद बिठाया ।
　राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥ १५ ॥

॥ शब्द १०६ ॥

सुरतिया गाज[२] रही ।
　चढ़ शब्द गुरू के संग ॥ १ ॥
बिरह बिमल अनुराग चित्त धर ।
　धारा सतगुरु रंग ॥ २ ॥
राधास्वामी मेहर परख अंतर में ।
　प्रीति बसी अँग अंग ॥ ३ ॥
दरशन कर तन मन सुध[३] भूली ।
　जैसे दीप पतंग[४] ॥ ४ ॥
राधास्वामी बल ले चढ़त गगन पर ।
　देख काल रहा दंग[५] ॥ ५ ॥
शब्द शोर मच रहा गगन में ।
　बह रही धारा गंग ॥ ६ ॥
काम क्रोध अहंकार लोभ सब ।
　हुए आपही तंग ॥ ७ ॥

१—खड़ी हुई । २—गरज । ३—याद । ४—जैसे ... पतंग—जिस तरह दीपक को देख कर पतंगा सब सुध बुध भूल जाता है । ५—हैरान ।

छोड़ गये घर घाट पुराना ।
मन भी हुआ अपंग[1] ॥ ८ ॥
माया ममता दूर हटाई ।
छोड़ा नाम और नंग[2] ॥ ९ ॥
सील सुमत आय थाना कीना[3] ।
सीखी सतगुरू ढंग ॥ १० ॥
निरमल होय सुन्न में खेलूँ ।
हो गई आज निसंक[4] ॥ ११ ॥
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में ।
पहुँची जैसे बिहंग[5] ॥ १२ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
सब से हुई असंग[6] ॥ १३ ॥
दीन अधीन पड़ी चरनन में ।
गुरू ने लगाया अपने अंग ॥ १४ ॥
राधास्वामी अचरज दरशन पाये ।
धारा रंग सुरंग ॥ १५ ॥

॥ शब्द १०७ ॥

सुरतिया लाग रही ।
गुरू चरन अधार ॥ १ ॥

१—कमजोर । २—नाम और नंग—नेकनामी बदनामी । ३—थाना कीना—अड्डा जमाया । ४—निडर । ५—पच्छी । ६—अलहदा ।

सुन सुन महिमा संत मते की ।
　भाव बढ़ा और जागा प्यार ॥ २ ॥
औसर पाय मिला साधू सँग ।
　पाया　भेद　अपार　॥ ३ ॥
उमँग उमँग करती नित साधन[1] ।
　सुनती　धुन　झनकार　॥ ४ ॥
प्रेम बढ़ा चरनन में गुरु के ।
　खोजत आई गुरु दरबार ॥ ५ ॥
दरशन पाय हुई मस्तानी ।
　निरख रही घट बिमल बिहार ॥ ६ ॥
दया करी सतसँग में मेला[2] ।
　गुरु ने बचन सुनाये सार ॥ ७ ॥
परमारथ की क़दर जनाई ।
　देखा　जगत　असार　॥ ८ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त गुरु चरना ।
　उमँग उठत हिये में हर बार ॥ ९ ॥
सेवा करके गुरू रिझाऊँ[3] ।
　पाऊँ राधास्वामी दया अपार ॥ १० ॥
करम भरम सब दूर बहाये ।
　पकड़े राधास्वामी चरन सम्हार ॥११॥

१—अभ्यास । २—मिला लिया । ३—प्रसन्न करूँ ।

सुरत चढ़ी नभ में अब दौड़ी ।
　गगन जाय सुनी धुन ओंकार ॥ १२ ॥
सुन और महासुन्न के पारा ।
　भँवरगुफा मुरली झनकार ॥ १३ ॥
सत्त रूप और अलख अगम लख ।
　गई सुरत अब निज घरबार ॥ १४ ॥
मेहर करी निज भाग जगाया ।
　राधास्वामी कीना सहज उद्धार ॥ १५ ॥

॥ शब्द १०८ ॥

सुरतिया प्रेम भरी ।
　रही सतगुरु हिरदे छाय ॥ १ ॥
बाल समान गोद गुरु खेलत ।
　हिये दृढ़ सरन बसाय ॥ २ ॥
जो कुछ करें करें गुरु प्यारे ।
　चित में नित्त रहे हरखाय ॥ ३ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी ।
　आस[1] बास[2] गुरु चरनन लाय ॥ ४ ॥
ऐसी निरमल भक्ति कमावत ।
　उमँग उमँग सेवा को धाय ॥ ५ ॥

१—आशा । २—बासना ।

बचन गुरू सुन बिगसत[1] मन में ।
नई नई प्रीति जगाय ॥ ६ ॥
चरनन में नित सरधा बढ़ती ।
महिमा चित में अधिक समाय ॥ ७ ॥
सुमिरन ध्यान भजन की जुगती ।
ले गुरु से रहूँ नित्त कमाय ॥ ८ ॥
मन रहे दीन लीन चरनन में ।
सुरत शब्द सँग अधर चढ़ाय ॥ ९ ॥
सहसकँवल धुन घंटा सुनती ।
जोत रूप दरसाय ॥ १० ॥
गगन जाय निरखत गुरु मूरत ।
धुन मिरदँग और गरज सुनाय ॥ ११ ॥
राग रागिनी गावत सुन में ।
धुन किंगरी सारंग बजाय ॥ १२ ॥
सेत सूर[2] लख भँवर प्रकाशा ।
मुरली सँग सोहँग धुन गाय ॥ १३ ॥
दरस पुरुष का पाय अमरपुर ।
अलख अगम को निरखा जाय ॥ १४ ॥
राधास्वामी किया सब काज[3] मेहर से ।
उनके चरन से रही लिपटाय ॥ १५ ॥

१—हरखती । २—सूरज । ३—काम ।

॥ शब्द १०९ ॥

सुरतिया उमँग भरी ।
　रही गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥
दया धार गुरु चरन पधारे ।
　अचरज भाग जगाय ॥ २ ॥
नित प्रति दरशन गुरु का करती ।
　चरनामृत परशादी खाय ॥ ३ ॥
मैं तो नीच निकाम नकारा[1] ।
　चरन सरन दई मोहि अपनाय ॥ ४ ॥
औगुन मेरे कुछ न बिचारे ।
　दिन दिन मेहर करी अधिकाय ॥ ५ ॥
दीन और हीन चीन्ह मोहिं सतगुरु ।
　लीना अपनी गोद बिठाय ॥ ६ ॥
बिन करनी गुरु मेहर दया से ।
　मन और सुरत दीन सिमटाय ॥ ७ ॥
अंतर में नित करत चढ़ाई ।
　तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ८ ॥
घट में देखूँ अजब तमाशा ।
　परमारथ में लाग बढ़ाय ॥ ९ ॥

१—निकम्मा ।

मगन होय नित भाग सराहूँ ।
अचरज लीला देख हरखाय ॥ १० ॥
नित्त बिलास होत घर मेरे ।
सतसँग दिन दिन बढ़ता जाय ॥ ११ ॥
किरपा कर संजोग मिलाया ।
अस बड़ भाग कोइ बिरला पाय ॥ १२ ॥
बिना माँग गुरु किरत[1] करावें ।
बिन याचे[2] दई न्यामत[3] आय ॥ १३ ॥
क्योंकर शुकराना करूँ उनका ।
मैं गुरु बिन कोइ और न ध्याय ॥ १४ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझाऊँ[4] ।
राधास्वामी २ रहूँ नित गाय ॥ १५ ॥

॥ शब्द ११० ॥

सुरतिया भाव भरी ।
आज गुरु सँग करत बिलास ॥ १ ॥
अमी रूप गुरु बचन अमोला ।
सुनत चित्त दे पास ॥ २ ॥
समझ समझ कर मानत उनको ।
धर चरनन बिस्वास ॥ ३ ॥

१—करनी । २—माँगे । ३—बख़्शिश । ४—प्रसन्न करूँ ।

सुरत शब्द की करत कमाई ।
निस दिन बढ़त हुलास ॥ ४ ॥
गुरु चरनन बिन और न कोई ।
धारत हिये में आस ॥ ५ ॥
भक्ति दीनता प्रेम बढ़ावत ।
करती चरन निवास ॥ ६ ॥
गुरु सरूप को ध्यान लाय कर ।
हिये में करती बास ॥ ७ ॥
उमँग उठी सेवा की घट में ।
हो गई दासन दास ॥ ८ ॥
निस दिन सेव रही गुरु चरना ।
चित से रहती उनके पास ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम जपत निस बासर[1] ।
जग से रहती चित्त उदास ॥ १० ॥
राधास्वामी चरन पकड़ कर बैठी ।
मिल गई प्रेम सरन की रास[2] ॥ ११ ॥
दया हुई सुत चढ़ी अधर में ।
सहसकँवलदल किया निवास ॥ १२ ॥
वहाँ से चल त्रिकुटी में पहुँची ।
निरखा लाल सूर परकाश ॥ १३ ॥

१—दिन । २—भंडार ।

सुन में जाय किये अश्नाना ।
　देखा अक्षर पुरुष उजास[1] ॥ १४ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर धाई ।
　बीन बजे जहाँ वहाँ निस बास[2] ॥ १५ ॥
लखा जाय फिर अलख अगम को ।
　राधास्वामी चरनन कीना बास ॥ १६ ॥
प्रेम सहित वहाँ आरत साधी[3] ।
　हो गई राधास्वामी चरनन दास ॥१७॥

॥ शब्द १११ ॥

सुरतिया मोह रही ।
　आज निरख गुरू छबि शान ॥ १ ॥
नित्त बिलास होत गुरु द्वारे ।
　देख देख मैं रहूँ हैरान ॥ २ ॥
मेहर दया जस मुझ पर कीनी ।
　क्योंकर उसका करूँ बखान ॥ ३ ॥
मात पिता मेरे राधास्वामी प्यारे ।
　दया धार जग प्रगटे आन ॥ ४ ॥
बालक सम मोहि गोद बिठाया ।
　प्रेम भक्ति मोहि दीनी दान ॥ ५ ॥

१—प्रकाश । २—बासर, दिन । ३—सजाई ।

जो कुछ माँगा सो मैं पाया ।
क्योंकर करूँ शुकराना आन ॥ ६ ॥
सहज मिले मोहिं दुरलभ देवा ।
तन मन उन पर करूँ कुरबान[1] ॥ ७ ॥
राधास्वामी सम कोइ और न जानूँ ।
राधास्वामी हैं मेरे जान और प्रान ॥८॥
वाह वाह मेरे सतगुरू दाता ।
वाह वाह प्यारे पुरुष सुजान ॥ ९ ॥
जीव दया कारन जग आये ।
देव सब जीवन भक्ती दान ॥ १० ॥
मुझ पर दया करो अब ऐसी ।
घट में दीजे शब्द निशान ॥ ११ ॥
मन और सूरत चढ़ें अधर में ।
सुनें जाय त्रिकुटी धुन तान ॥ १२ ॥
आरत धार गुरू चरनन में ।
वहाँ से चढ़ाऊँ अधर ठिकान ॥ १३ ॥
सतपुर जाय करूँ फिर आरत ।
सत्तपुरुष के सन्मुख आन ॥ १४ ॥
वहाँ से राधास्वामी धाम सिधारूँ[2] ।
राधास्वामी चरन लगाऊँ ध्यान ॥ १५ ॥

१—निछावर । २—जाऊँ ।

उमँग प्रेम से आरत गाती ।
पाय गई अब प्रेम निधान[1] ॥ १६ ॥
कैसे भाग सराहूँ अपना ।
राधास्वामी प्यारे चरन समान ॥ १७ ॥

॥ शब्द ११२ ॥

सुरतिया मौन रही ।
गुरु दिया शब्द रस सार ॥ १ ॥
प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आई ।
हिये परतीत सँवार ॥ २ ॥
सरधा सहित सुनत गुरु बचना ।
सतसँग में धर प्यार ॥ ३ ॥
उमँग बढ़त दिन दिन हिरदे में ।
सेवा करत सम्हार ॥ ४ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा ।
तजत न कीनी बार[2] ॥ ५ ॥
कुल कुटुम्ब से नाता तोड़ा ।
तज मन का अहंकार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द का भेद नियारा ।
गुरु से पाया सार[3] ॥ ७ ॥

१—भंडार। २—देर। ३—असली।

मन इंद्री से जूझत[1] निस दिन ।
त्यागे सबही बिकार ॥ ८ ॥
भजन भक्ति अभ्यास करत नित ।
झाँकत[2] मोक्ष दुआर ॥ ९ ॥
सतगुरु दया मेहर सँग लेकर ।
अधर चढ़त मन बिरह सम्हार ॥ १० ॥
नभ में लखा जोत उजियारा ।
गगन जाय गुरु रूप निहार ॥ ११ ॥
सुन में जाय सरोवर न्हाई ।
गुरु मिल गई महासुन पार ॥ १२ ॥
भँवरगुफा का लखा उजाला ।
सतपुर सुनी बीन धुन सार ॥ १३ ॥
अलख अगम का रूप निहारत ।
पहुँची राधास्वामी धाम अपार ॥ १४ ॥
पिता प्यारे मेरे हुए दयाला ।
अंग लगाया मोहि कर प्यार ॥ १५ ॥
मिल गया आज प्रेम भंडारा ।
परम आनंद अनंत अपार ॥ १६ ॥
पूरन[3] भाग उदय[4] हुए मेरे ।
मिल गये राधास्वामी निज दिलदार १७

१—लड़ता । २—देखता है । ३—पूरे । ४—प्रकट ।

॥ शब्द ११३ ॥

सुरतिया अधर चढ़ी ।
धर सतगुरु रूप धियान ॥ १ ॥
भाव सम्हार संग गुरु कीना ।
सुने बचन निज[1] आन ॥ २ ॥
राधास्वामी महिमा अगम अपारा ।
सुरत शब्द का पाया ज्ञान ॥ ३ ॥
ले उपदेश किया अभ्यासा ।
सतगुरु रूप करी पहिचान ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति हिरदे में जागी[2] ।
गुरु चरनन में रही लिपटान ॥ ५ ॥
दरशन करत ताक[3] गुरु नैना ।
बचन सुनत चढ़ अधर ठिकान ॥ ६ ॥
पियत सार रस हुई मतवाली ।
झूठा लगा जहान[4] ॥ ७ ॥
सतगुरु रंग रँगी स्रुत बिरहन ।
मन माया दोउ वार[5] रहान[6] ॥ ८ ॥
नित्त बिलास करे घट अंतर ।
सहज सहज स्रुत अधर चढ़ान ॥ ९ ॥

१—गुरु के। २—प्रकट हुई। ३—देख। ४—संसार। ५—इसी तरफ़। ६—रह गए।

सतगुरु रूप संग ले चालत ।
काल करम की कुछ न बसान ॥ १० ॥
दरशन पाय रहत मगनानी ।
वारत तन मन जान और प्रान ॥ ११ ॥
सतगुरु रूप लगा अति प्यारा ।
जस कामी को कामिन[1] जान ॥ १२ ॥
मीन रहे जस जल आधारा ।
पपिहा को जस स्वाँति समान ॥ १३ ॥
ऐसी प्रीति बढ़ी गुरु चरनन ।
को उसका कर सके बखान[2] ॥ १४ ॥
मन और सुरत चढ़े गगनापुर ।
वहाँ से सतपुर जाय बसान ॥ १५ ॥
सत्तपुरुष से ले दुरबीना ।
धाम अनामी पहुँची आन ॥ १६ ॥
मगन हुई निज घर में आई ।
राधास्वामी दरस पाय त्रिप्तान[3] ॥ १७ ॥

॥ शब्द ११४ ॥

सुरतिया ताक[4] रही ।
गुरु नैन रसाल[5] ॥ १ ॥

१—स्त्री । २—वर्णन । ३—तृप्त हो गई । ४—देख । ५—रसीले ।

घेर घुमर[१] घट भीतर आई ।
　पियत अधर[२] रस हाल ॥ २ ॥
बिसर गई सब सुध बुध तन की ।
　दूर हुए मेरे सब दुख साल[३] ॥ ३ ॥
काल लगाये बिघन अनेका ।
　सन्मुख हुई ले नाम की ढाल ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काल बल तोड़ा ।
　मन इंद्री का काटा जाल ॥ ५ ॥
काम क्रोध अहंकार लबारा[४] ।
　लोभ मोह भी हुए पामाल[५] ॥ ६ ॥
बिन गुरु दया भरमती जग में ।
　राधास्वामी लिया मोहि आप सम्हाल ।७।
निरमल होय अधर को चाली ।
　निरखा अद्भुत जोत जमाल[६] ॥ ८ ॥
घंटा संख छोड़ धुन नभ में ।
　आगे धसी बंक की नाल ॥ ९ ॥
त्रिकुटी जाय दरस गुरु पाया ।
　सुन में न्हाय मानसर ताल ॥ १० ॥
लीला अक्षर पुरुष निरख कर ।
　महासुन्न गई सतगुरु नाल[७] ॥ ११ ॥

१—घेर घुमर—चारों तरफ़ से हट कर । २—अंतर में । ३—कष्ट । ४—झूठे । ५—ज़ेर । ६—शान । ७—साथ ।

मुरली धुन सुन भँवरगुफा में।
महाकाल को दिया खिलाल[1] ॥ १२ ॥
सतपुर जाय दरस पुर्ष पाया।
धुन बीना सुन हुई खुशहाल ॥ १३ ॥
अलख अगम के चढ़ गई पारा।
मिल गये राधास्वामी दीनदयाल ॥ १४ ॥
उमँग सम्हार आरती धारी।
मगन हुई अब पाय विसाल[2] ॥ १५ ॥
मेहर दया से अंग लगाया।
होय गई मैं आज निहाल[3] ॥ १६ ॥
हर दम गुन गाऊँ पिया प्यारे।
कर दिया मुझको मालामाल ॥ १७ ॥

॥ शब्द ११५ ॥

सुरतिया जाग उठी।
सुन बचन गुरू के सार ॥ १ ॥
भरमत रही जगत अँधियारी।
मिला न सच्चा संग ॥ २ ॥
भाग जगे गुरू सन्मुख आई।
पाया भेद अपार ॥ ३ ॥

१—शिकस्त। २—मेल। ३—सरशार।

मन और सूरत जुड़ मिल आये ।
धर चरनन में प्यार ॥ ४ ॥
काल करम बहु बिघन लगाये ।
पड़ा संगत से दूर ॥ ५ ॥
मेहर हुई बढ़ी उमँग नवीनी[1] ।
आया चरन हज़ूर ॥ ६ ॥
मेहर की दृष्टि करी सतगुरु ने ।
दई प्रेम की दात[2] ॥ ७ ॥
उमँग उमँग गुरु सेवा करती ।
नित नया भाव जगाय ॥ ८ ॥
सुरत लगाय शब्द धुन सुनती ।
नित नया रस पाय ॥ ९ ॥
रैन दिवस चरनन में रहती ।
नित नया आनँद पाय ॥ १० ॥
नित नई प्रीति जगत[3] गुरु चरनन ।
बरनन करी न जाय ॥ ११ ॥
धुन रस पाय हुई मतवारी ।
सुरत गगन को धाय ॥ १२ ॥
सहसकँवल लख जोत उजारा ।
त्रिकुटी गुरु का धाम[4] ॥ १३ ॥

१—नई । २—बख़्शिश । ३—पैदा होती है । ४—स्थान ।

चंद्र चाँदनी चौक निहारा ।
भँवरगुफा सत नूर[1] ॥ १४ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस कर ।
पाया अजब सरूर[2] ॥ १५ ॥
तिस के परे अलख दर्स पाया ।
अगम को परसा[3] धाय ॥ १६ ॥
हैरत[4] धाम लखा तिस ऊपर ।
सोभा कही न जाय ॥ १७ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।
अचरज दरशन पाय ॥ १८ ॥
भर भर प्रेम आरती गाती ।
चरन सरन लिपटाय ॥ १९ ॥
मेहर करी गुरु परम सनेही[5] ।
लीना गोद बिठाय ॥ २० ॥
हरख हरख मैं नित गुन गाऊँ ।
राधास्वामी सदा धियाय ॥ २१ ॥

॥ शब्द ११६ ॥

सुरतिया मनन करत[6] ।
सतगुरु के अचरज बोल ॥ १ ॥

१—प्रकाश । २—आनंद । ३—प्राप्त किया । ४—अचरज । ५—प्यार करने वाले । ६—मनन करत—मन में धारण करती, विचारती ।

जो जो बचन सुनत सतसँग में ।
सबकी करती तोल[1] ॥ २ ॥
सार निकार हिये बिच धारा ।
सुरत शब्द मारग अनमोल ॥ ३ ॥
चढ़त अधर में निरख[2] उधर में ।
छाँट रही घट धुन को रोल[3] ॥ ४ ॥
राधास्वामी जैसी दिखाई लीला ।
कासे कहूँ मैं उसको खोल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११७ ॥

सुरतिया सोय रही ।
मन इंद्रियन सँग जग माँहि ॥ १ ॥
जगा भाग सतगुरु से भेंटी ।
दृढ़ कर पकड़ी उनकी बाँह ॥ २ ॥
दया करी घर भेद सुनाया ।
बैठी चरन सरन की छाँह ॥ ३ ॥
मोह नींद से अब उठ जागी ।
मिट गई काल करम की दायँ[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी सब बिध काज सँवारा ।
अब नहिं छोड़ूँ उनकी बाँह ॥ ५ ॥

१—जाँच । २—देख । ३—जाँच कर । ४—काल करम की दायँ—काल करम के पैरों के तले रौंदा जाना ।

॥ शब्द ११८ ॥

सुरतिया खेल रहीं ।
गुरु बागन बीच ॥ १ ॥
कँवलन की फुलवार खिलानी ।
मन माली रहा सींच ॥ २ ॥
लख लख कँवल बिगस[1] ज्यों कलियाँ ।
सुरत अधर को खींच ॥ ३ ॥
भोग बासना दूर हटाई ।
मन इंद्री को डाला भींच[2] ॥ ४ ॥
बिघन अनेक मेहर से टारे ।
काल करम को दीनी मींच[3] ॥ ५ ॥
अपना जान दया स्वामी कीनी ।
सुरत चरन में लीनी ईंच[4] ॥ ६ ॥
राधास्वामी लिया उबार दया कर ।
मोहि अधम नालायक़ नीच ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११९ ॥

सुरतिया चरन गहे ।
सुन सतगुरु बचन अमोल ॥ १ ॥
धर अनुराग लिया उपदेशा ।
कर रही सुरत शब्द की तोल ॥ २ ॥

१—खिलती । २—दबा । ३—मौत । ४—खींच ।

प्रेम सहित घट धुन में लागी ।
पहुँची जाय ब्रह्म के कोल[१] ॥ ३ ॥
वहाँ से पारब्रह्म अस्थाना ।
लखा जाय और हुई अनमोल ॥ ४ ॥
माया के सब जाल उठाये ।
भाग गया अब काल का ग़ोल[२] ॥ ५ ॥
सत्त शब्द धुन चढ़ कर पाई ।
कौन करे अब वाका[३] मोल ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम भाग से पाया ।
परमानंद मिला जहाँ चौल[४] ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२० ॥

सुरतिया भूल गई ।
अब निज घर जग में आय ॥ १ ॥
जनम जनम पड़ी काल के घेरा ।
माया सँग लिपटाय ॥ २ ॥
परम गुरू राधास्वामी दयाला ।
जग में प्रगटे आय ॥ ३ ॥
मेहर दया से भेद सुनाया ।
घर जाने की जुगत बताय ॥ ४ ॥

१—पास । २—दल, फ़ौज । ३—उसका । ४—विशेष आनन्द ।

अचरज भाग जगाया मेरा ।
अपना कर मोहिं चरन लगाय ॥ ५ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाऊँ ।
इक दिन निज घर पहुँचूँ जाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरनन आरत[1] धारूँ ।
मगन रहूँ नित उन गुन गाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२१ ॥

सुरतिया हरख हरख ।
आज गुरु चरनन लागी ॥ १ ॥
बिरह अनुराग धार अब चित में ।
जगत बासना दई त्यागी ॥ २ ॥
भरम हटावत भूल मिटावत ।
भाव भक्ति घट में जागी ॥ ३ ॥
जग ब्योहार लगा सब काँचा ।
सहज हुआ मन बैरागी[2] ॥ ४ ॥
संत मते की महिमा जानी ।
सुरत हुई धुन रस रागी[3] ॥ ५ ॥
सतसँग बचन लगें अब प्यारे ।
चरन परस[4] हुई बड़भागी ॥ ६ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । २—उदासीन । ३—प्रेमी । ४—छू कर ।

राधास्वामी चरन हुआ बिस्वासा ।
प्रेम दान उन से माँगी ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२२ ॥

सुरतिया माँज रही ।
गुरु घाट नाम सँग मन अपना ॥ १ ॥
सतसँग कर सेवा को धावत ।
शुद्ध करत अस तन अपना ॥ २ ॥
गुरु भक्तन से प्यार बढ़ावत ।
ख़रच करत अब धन अपना ॥ ३ ॥
गुरु स्वरूप धर ध्यान हिये में ।
दूर हटावत जग तपना[१] ॥ ४ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त गुरु चरनन ।
जगत भाव दिन २ घटना ॥ ५ ॥
करम भरम और जग ब्योहारा ।
इन में मन अब नहिं फँसना ॥ ६ ॥
धुन सँग नित्त सुरत मन जोड़त ।
निष्फल[२] कृत[३] में नहिं पचना ॥ ७ ॥
निर्मल होय चढ़त ऊँचे को ।
त्रिकुटी दरस गुरू तकना[४] ॥ ८ ॥

१—जलन । २—बे मतलब । ३—काररवाई । ४—देखना ।

राधास्वामी सरन सम्हारत ।
उनके चरन में अब रचना[1] ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२३ ॥

सुरतिया बचन सम्हार ।
गुरू की मौज निहार रही ॥ १ ॥
उमँग उमँग सतसँग को धावत ।
प्रीति हिये में धार रही ॥ २ ॥
कर परतीत गुरू चरनन में ।
सुरत शब्द मत सार[2] लई ॥ ३ ॥
नित अभ्यास करत धर प्यारा ।
मन के बिकार[3] निकार दई ॥ ४ ॥
ध्यान धरत गुरू रूप निहारत ।
नइ नइ उमँग जगाय रही ॥ ५ ॥
शब्द माहिं नित सुरत लगावत ।
सुनत मधुर धुन अधर गई ॥ ६ ॥
जोत उजार लखा नभ माहीं ।
तिस परे धुन ओंकार गही[4] ॥ ७ ॥
सुन में चंद्र रूप जाय लखिया ।
गुफा परे सतलोक रही ॥ ८ ॥

१—लीन होना । २—उत्तम । ३—दोष । ४—पकड़ी ।

वहाँ से राधास्वामी धाम सिधारी ।
दया मेहर उन पाय रही ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२४ ॥

सुरतिया समझ बूझ ।
आज गुरु मत लिया सम्हार ॥ १ ॥
ख़बर पाय सतसँग में आई ।
सुन गुरु बचन अमी[1] की धार ॥ २ ॥
मगन होय मन शांती आई ।
कर सत[2] मत बीचार ॥ ३ ॥
उमँग उमँग करती गुरु दरशन ।
जागत घट में प्यार ॥ ४ ॥
भेद पाय अभ्यास करत नित ।
घट में परख शब्द की धार ॥ ५ ॥
दुरमत छोड़ सुमत अब धारी ।
करम धरम का उतरा भार[3] ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन प्रीति हुई गहिरी ।
जग जीवन सँग छोड़ा झाड़[4] ॥ ७ ॥
जगत रीत अब मन नहिं भावे[5] ।
भक्ती रीत रही चित धार ॥ ८ ॥

१—अमृत । २—सच्चे । ३—बोझ । ४—क़तई । ५—अच्छी लगे ।

काल जाल में सब जग फँसिया ।
बिन गुरु कोइ न जावे पार ॥ ९ ॥
मुझ पर मेहर हुई अब धुर की ।
शब्द भेद मोहिं मिलिया सार ॥ १० ॥
चरन सरन गह हुई निचिंती ।
राधास्वामी लेहैं मोहिं उबार ॥ ११ ॥

॥ शब्द १२५ ॥

सुरतिया न्हाय रही ।
हंसन सँग सरवर[1] तीर[2] ॥ १ ॥
न्यारी होय लगी गुरु चरनन ।
छोड़ी जग की भीड़ ॥ २ ॥
सुरत शब्द की कार कमावत ।
धर परतीत बाँध मन धीर[3] ॥ ३ ॥
इंद्री भोग लगे अब फीके ।
पियत अमीरस त्यागत नीर ॥ ४ ॥
नित अभ्यास नेम से करती ।
मथ २ शब्द निकारत हीर[4] ॥ ५ ॥
चढ़ कर पहुँची त्रिकुटी पारा ।
हंसन संग पियत अब छीर[5] ॥ ६ ॥

१—मानसरोवर । २—किनारे । ३—धीरज । ४—सार । ५—दूध ।

जिन यह सार भेद घट पाया ।
जग में सच्चा वही फ़क़ीर ॥ ७ ॥
जो तू सैर करे निज घट में ।
राधास्वामी सरन आव मेरे बीर[1] ॥ ८ ॥
चरन पकड़ दृढ़ कर तू उनके ।
राधास्वामी से तोहि मिलें न पीर[2] ॥ ९ ॥
दया मेहर से काज बनावें ।
बख़्शें तोहि पद गहिर गँभीर ॥ १० ॥
निज घर पाय बिलास करे नित ।
फिर जग में नहिं धरे शरीर ॥ ११ ॥
राधास्वामी प्यारे मोहिं नीच को ।
प्रेम दात दे किया अमीर ॥ १२ ॥

॥ शब्द १२६ ॥

सुरतिया टेक रही ।
गुरु चरनन सीस नवाय[3] ॥ १ ॥
भक्ति भाव हिरदे धर अपने ।
गुरु सेवा में रही चित लाय ॥ २ ॥
उमँग सहित गुरु दरशन करती ।
सतसँग बचन सुनत नित आय ॥ ३ ॥

१—भाई । २—गुरु । ३—झुका कर ।

काल करम ने दिया झकोला[1] ।
सतसंगत से दूर पराय[2] ॥ ४ ॥
पाय कुसंग बही भोगन में ।
मन इंद्री सँग रही लिपटाय ॥ ५ ॥
प्रेमी जन से मेल न कीना ।
सतगुरु शिक्षा गई भुलाय ॥ ६ ॥
कामादिक[3] में भरमत डोले ।
माया के सँग रही लुभाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया करी निज अपनी ।
जाल काट लिया खैंच बुलाय ॥ ८ ॥
ज्यों त्यों फिर निरमल कर लीना ।
सतसँग में लिया फेर लगाय ॥ ९ ॥
मन ही मन में नित पछतावत ।
करनी कर लई प्रीति जगाय ॥ १० ॥
होय हुशियार पकड़ दृढ़[4] चरना ।
राधास्वामी सरन गही अब आय ॥११॥
कर फ़रियाद चरन में गहिरी ।
राधास्वामी दाता लिये मनाय ॥ १२ ॥

१—झटका। २—पड़ गया। ३—काम, क्रोध, लोभ वग़ैरह। ४—मज़बूती से।

होली

॥ शब्द १२७ ॥

सुरतिया धूम मचाय रही ।
खेलन को होली सतगुरु साथ ॥ १ ॥
पिरथम मन माया सँग खेली ।
बहु बिधि रही जग में भरमात ॥ २ ॥
इंद्रियन के सँग हुई दिवानी[1] ।
भोगन में रस पात ॥ ३ ॥
जग की लाज कान[2] मन मानी[3] ।
करम धरम सँग रही फँसात ॥ ४ ॥
गुरु प्रेमी जन आय मिले जब ।
उन सतगुरु का भेद सुनात ॥ ५ ॥
उमँग उठी सुन सुन हिये अंतर ।
तब सतगुरु का खोज लगात ॥ ६ ॥
गुरु चरनन में धावत आई ।
प्रेम रंग भर हिरदे माट[4] ॥ ७ ॥
गुरु से माँगत दोउ कर जोड़ी ।
प्रेम भक्ति का फगुआ दात[5] ॥ ८ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ावत ।
गगन गुरू से जोड़ा नात[6] ॥ ९ ॥

१—पागल । २—लज्जा, शर्म । ३—क़ायम की । ४—हिरदे माट—हृदय के घड़े में । ५—बख़्शिश । ६—संबंध ।

रंग बिरंग खेल वहाँ होली ।
आरत कर सुर्त अधर चढ़ात ॥ १० ॥
सत्तपुरुष का निरख दीदारा[1] ।
राधास्वामी चरन समात ॥ ११ ॥

॥ शब्द १२८ ॥

सुरतिया रंग भरी ।
आज खेलत गुरु सँग फाग ॥ १ ॥
मोह नींद में बहुतक सोई ।
गुरु मिल आई जाग[2] ॥ २ ॥
दरशन करत सुनत गुरु बैना ।
बढ़ा प्रेम अनुराग ॥ ३ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
दिन दिन जागा भाग ॥ ४ ॥
चढ़त सुरत घट धुन रस लेती ।
करम भरम सब दीने त्याग ॥ ५ ॥
मन हुआ दीन लीन गुरु चरनन ।
छूट गया भोगन में राग[3] ॥ ६ ॥
लाल हुई गुरु सँग खेल होली ।
छूट गये सब काल[4] मल दाग़[5] ॥ ७ ॥

१—दर्शन । २—होश । ३—मोह । ४—काल के । ५—धब्बे ।

गगन जाय अस धूम मचाई ।

काल जाल में दीनी आग ॥ ८ ॥

मन माया से खूँट छुड़ाकर ।

जगत मोह का तोड़ा ताग[1] ॥ ९ ॥

सत्त शब्द में सुरत पिरोई[2] ।

ज्यों सूई में धाग[1] ॥ १० ॥

अलख अगम से फगुआ लेकर ।

राधास्वामी धाम गई मैं भाग ॥ ११ ॥

प्रेम रँगीली आरत धारी ।

राधास्वामी चरन रही मैं लाग ॥ १२ ॥

॥ शब्द १२९ ॥

सुरतिया पियत अमी ।

गुरु नाम सुमिर धर प्यार ॥ १ ॥

संत मते की सुन सुन महिमा ।

आई गुरु दरबार ॥ २ ॥

सतसँग करत हरखती मन में ।

हिये परतीत सम्हार ॥ ३ ॥

राधास्वामी नाम बसाय हिये में ।

धरत ध्यान गुरु रूप अपार ॥ ४ ॥

१—धागा। २—प्रवेश कर दी ।

भेद पाय मन सुरत लाय कर ।
सुनत शब्द धुन घट में सार ॥ ५ ॥
सरन सम्हारत चरन निहारत ।
मन से काढ़त[1] सभी बिकार[2] ॥ ६ ॥
बिरह जगावत उमँग बढ़ावत ।
जुगत कमावत होय हुशियार ॥ ७ ॥
दिन दिन होत शब्द रस माती[3] ।
गुरु गुन गावत बारम्बार ॥ ८ ॥
राधास्वामी अब निज दया बिचारी ।
सुरत चढ़ाई भौजल पार ॥ ९ ॥

॥ शब्द १३० ॥

सुरतिया चढ़त अधर ।
धुन डोरी पकड़ सम्हार ॥ १ ॥
सतगुरु दया भेद घट पाया ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ २ ॥
बिरह अंग ले करत अभ्यासा ।
सुरत लगाई साज सँवार ॥ ३ ॥
मन हुआ मगन चरन गुरु पाये ।
सहज तजत रस भोग बिकार ॥ ४ ॥

१—निकालती, दूर करती । २—दोष । ३—मतवाली ।

सुरत हुई धुन रस मतवाली ।
घंटा संख सुनत नभ द्वार ॥ ५ ॥
ले गुरु दया गगन पर धाई ।
मगन हुई गुरु रूप निहार ॥ ६ ॥
चंद्र रूप लख महासुन्न पर ।
निरखा सेत सूर उजियार ॥ ७ ॥
बीन सुनी अमरापुर[१] जाई ।
राधास्वामी चरन परस[२] हुई सार ॥८॥

॥ शब्द १३१ ॥

सुरतिया लखत[३] अधर घर ।
गुरु के संग चली ॥ १ ॥
भाव सहित आई सन्मुख गुरु के ।
सतसंगत में आन रली[४] ॥ २ ॥
बचन सुनत मन में मगनानी ।
कपट छोड़ गुरु संग मिली ॥ ३ ॥
गुरु ने ऊँचा भेद सुनाया ।
बेद कतेब सब रहे तली[५] ॥ ४ ॥
संत देस निज धाम सुरत का ।
पावे जो कोइ शब्द पिली[६] ॥ ५ ॥

१—सत्तलोक । २—छू कर । ३—देखती । ४—मिल गई । ५—नीचे । ६—प्रवेश करे ।

उमँग उमँग ले जुगत गुरू से ।
निस दिन करत अभ्यास भली ॥ ६ ॥
सुरत रँगी गुरू प्रेम रंग से ।
निरखत घट में जोत बली[1] ॥ ७ ॥
सुन सुन धुन फिर चालत आगे ।
चढ़ कर पहुँची गगन गली[2] ॥ ८ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख ।
धुन बीना सुन सुरत खिली ॥ ९ ॥
राधास्वामी धाम दिखाना ।
मगन हुई घर पाय अली ॥ १० ॥

॥ शब्द १३२ ॥

सुरतिया भक्ति करत ।
सतगुरू की दया निहार ॥ १ ॥
हुई निरास हाल जग देखत ।
सोच भरी आई गुरू दरबार ॥ २ ॥
खोज करत सुख धाम पियारी ।
अमर देस जहाँ बिमल बहार ॥ ३ ॥
कैसे छूटन होय जगत से ।
कस पावे निज धाम अपार ॥ ४ ॥

१—जलती हुई । २—रास्ता ।

देख बिकल मन दरदी साँचा ।
मेहर दृष्टि करी गुरू दयार ॥ ५ ॥
घट का पूरा भेद सुनाया ।
शब्द जुगत समझाई सार ॥ ६ ॥
सुन कर सुरत मगन होय चाली ।
हिये में बिरह अनुराग सम्हार ॥ ७ ॥
सतगुरु दया फोड़ नभ द्वारा ।
जोत निरख गई गगन मँझार[1] ॥ ८ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
भँवरगुफा सतलोक निहार ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समानी ।
अभय[2] हुई निज काज सँवार ॥ १० ॥

॥ शब्द १३३ ॥

सुरतिया उमँग भरी ।
मिली गुरू से खोल कपाट[3] ॥ १ ॥
परमारथ की सार जान कर ।
सतसँग में आई खोजत बाट[4] ॥ २ ॥
सुन सुन बचन पुष्ट हुई मन में ।
जग भय लाज अब चित न समात ॥३॥

१—में । २—निडर । ३—द्वार । ४—रास्ता, मार्ग ।

तन मन धन को तुच्छ जान कर ।
गुरु सेवा में खरच करात ॥ ४ ॥
भेद पाय अभ्यास करत नित ।
सुरत चढ़ाय अधर रस पात ॥ ५ ॥
नभ को छोड़ गगन में पहुँची ।
गुरु दरशन कर अति हुलसात ॥ ६ ॥
सुन्न और भँवरगुफा के पारा ।
सतगुरु चरनन बल बल जात[1] ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम अनूप[2] अपारा ।
निरख मगन हुई महा सुख पात ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३४ ॥

सुरतिया अमन[3] हुई ।
तज चित से जगत कुरंग ॥ १ ॥
जगत संग नित दुख सुख सहती ।
काल करम ने कीना तंग[4] ॥ २ ॥
बचने की कोइ जुगत न सूझे ।
बिकल रहत अँग अंग ॥ ३ ॥
सुन सुन महिमा सतसंगत की ।
गुरु सन्मुख आई धार उमंग ॥ ४ ॥

१—बल बल जात—निछावर जाती । २—अनुपम, सबसे बढ़कर । ३—शांत । ४—परेशान ।

बचन सुनत मन शांती आई ।
भजन करत चढ़ा प्रेम का रंग ॥ ५ ॥
घट में जाय अधर चढ़ सुनती ।
धुन घंटा और गरज मृदंग ॥ ६ ॥
सुन में होय चली सतपुर को ।
देख काल रहा दंग[1] ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया अमर घर पाया ।
निरमल हुई कर सतगुरु संग ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३५ ॥

सुरतिया दूर बसे ।
हर दम गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
जगत जाल जंजाल तोड़ कर ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सर्ब अंग से गुरु चरनन में ।
लागी धर कर प्यार ॥ ३ ॥
मन की तरँग उचँग सब त्यागी ।
एक आस बिस्वास सम्हार ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष राधास्वामी चरनन में ।
मोह रही सब बिघन निकार ॥ ५ ॥

१—हैरान ।

निज स्वरूप के दर्शन कारन।
गुरु चरनन में रही पुकार ॥ ६ ॥
बेकल तड़प उठत हिये माहीं।
नैनन से बहती जल धार ॥ ७ ॥
मौज बिचार सबर नहिं आवत।
बिरह अगिन भड़कत हर बार ॥ ८ ॥
करूँ फ़रियाद[1] दाद[2] नहिं पाऊँ।
भारी दुख नहिं जात सहार[3] ॥ ९ ॥
फिर फिर करूँ बीनती गहिरी।
हे राधास्वामी पिता दयार ॥ १० ॥
दर्शन दे काटो दुख मेरा।
मैं अति निर्बल पड़ा दुआर ॥ ११ ॥
बिन दर्शन मोहिं चैन न आवे।
धीर न धारे मन बीमार ॥ १२ ॥
टेरत टेरत बहु दिन बीते।
अब तो राधास्वामी सुनो पुकार ॥१३॥
घट में मोहिं निज दर्शन दीजे।
शब्द सुनाओ अमृत धार ॥ १४ ॥
देव मेरी माँग देर मत धारो।
राधास्वामी प्यारे गुरु दातार ॥ १५ ॥

१—प्रार्थना। २—सहारा, मदद। ३—जात सहार—बर्दाश्त होता।

॥ शब्द १३६ ॥

सुरतिया निकट[1] बसे ।
गुरु दरस करे हर बार[2] ॥ १ ॥
कर बिचार जग से अलगानी ।
परमारथ की जानी सार ॥ २ ॥
आस बासना तजी जगत की ।
राधास्वामी चरन अब गहे सम्हार ॥३॥
सतसँग बचन सुनत चित हरखत ।
सुरत चढ़ावत धुन की लार[3] ॥ ४ ॥
सुखी होय करती गुरु संगा ।
बिसर गई अब जग ब्योहार ॥ ५ ॥
मगन होय देखत गुरु लीला ।
घट में निरखत बिमल बहार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया बनत बन आई[4] ।
सहज उतर गई भौजल पार ॥ ७ ॥
छिन छिन भाग सरावत अपने ।
राधास्वामी गुन गावत हर बार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३७ ॥

सुरतिया बुंद अंस[5] ।
आज सिंध सँग करत बिलास ॥ १ ॥

१—नज़दीक । २—समय । ३—साथ । ४—बनत बन आई—काम बन गया । ५—बुंद अंस—बूँद या अंश के समान ।

गुरु दरशन कर हुई दिवानी ।
तज दई जग की आस ॥ २ ॥
तन मन धन दोउ हाथ लुटावत ।
सेव करत रहे गुरु के पास ॥ ३ ॥
मस्त हुई सुन सतगुरु बचना ।
घट में निरखत शब्द उजास[1] ॥ ४ ॥
ध्यान धरत हिये प्रेम बढ़ावत ।
पाया सतगुरु चरन निवास ॥ ५ ॥
अधर चढ़त निस दिन सुत प्यारी ।
नभ में लखती जोत प्रकाश ॥ ६ ॥
गरज मृदंग सुनी धुन दोई ।
गुरु पद में जाय कीना बास ॥ ७ ॥
उमँग उमँग सुत आगे चाली ।
सतपुर मिली शब्द की रास[2] ॥ ८ ॥
हरख हरख करे सतगुरु दरशन ।
धर चरनन पूरन बिस्वास ॥ ९ ॥
प्रेम सिंध राधास्वामी प्यारे ।
उन चरनन की हुई निज दास ॥ १० ॥
आरत करूँ प्रेम से गहिरी ।
अब हियरे बढ़त हुलास ॥ ११ ॥

१—प्रकाश । २—भंडार ।

उमँग उमँग चरनन लिपटानी ।
राधास्वामी गुन गाऊँ निस बास[१] ॥१२॥

॥ शब्द १३८ ॥

सुरतिया समझ गई ।
अब राधास्वामी मत निज सार ॥ १ ॥
चित से चेत किया गुरु सतसँग ।
शब्द का जाना भेद अपार ॥ २ ॥
आदि धाम से जो धुन आई ।
वही हुई सब की करतार ॥ ३ ॥
सब रचना की जान वही है ।
वही नूर[२] और प्रेम की धार ॥ ४ ॥
जहाँ जहाँ यह धारा ठहरी ।
मंडल बाँध करी रचन नियार ॥ ५ ॥
शब्द रची तिरलोकी सारी ।
शब्द से फैली माया झार[३] ॥ ६ ॥
पाँचो तत्त[४] और गुन तीनों ।
शब्द रची सब रचन[५] सम्हार ॥ ७ ॥
धुन का नाम आतमा होई ।
शब्द रूप तू सुरत बिचार ॥ ८ ॥

१—बासर, दिन । २—प्रकाश । ३—सभी । ४—तत्त्व; पृथ्वी, जल, बायु, अग्नि, आकाश । ५—रचना, सृष्टि ।

मन माया सँग हुई मलीनी ।
इंद्रियन सँग भरमी संसार ॥ ९ ॥
काम क्रोध बस दुख सुख भोगे ।
त्रिय तापन[1] सँग हुई बीमार ॥ १० ॥
जब लग मिलें न गुरू धुर धामी[2] ।
फँसी रहे यह काल के जार[3] ॥ ११ ॥
शब्द भेद दे पंथ लखावें ।
घट में परखावें धुन धार ॥ १२ ॥
राधास्वामी परम पुरुष निज धामी ।
महिमा उनकी अगम अपार ॥ १३ ॥
सुन सुन सुरत मगन होय मन में ।
प्रीति लाय परतीत सम्हार ॥ १४ ॥
धुन की डोरी पकड़ अधर में ।
मन और सुरत चढ़ें धर प्यार ॥ १५ ॥
सतगुरु संग बाँध जुग[4] चालें ।
काल करम से होवें न्यार ॥ १६ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हावे ।
मन का सँग तज सूरत सार[5] ॥ १७ ॥
महासुन्न और भँवरगुफा चढ़ ।
पहुँच गई सतगुरु दरबार ॥ १८ ॥

१—त्रिय तापन—तीन ताप यानी आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक कष्ट । २—धुर धामी—सब से ऊँचे धाम के । ३—जाल में । ४—जोड़ा । ५—उत्तम ।

अलख अगम की धुन सुन पाई ।
　राधास्वामी रूप लखा निज सार ॥१९॥
सतगुरु दया काज हुआ पूरा ।
　सहज मिला मोहि निज घर बार ॥२०॥
राधास्वामी मत की महिमा भारी ।
　काल देस से जीव निकार ॥ २१ ॥
अमर धाम पहुचावें सतगुरु ।
　तब होवे सच्चा निरवार[1] ॥ २२ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
　तब भेंटें सतगुरु सच यार[2] ॥ २३ ॥
दया मेहर से जीव उबारें ।
　सहज मिलावें सत करतार ॥ २४ ॥
राधास्वामी गुन मैं छिन छिन गाऊँ ।
　शुकर करूँ उन बारम्बार ॥ २५ ॥

॥ शब्द १३९ ॥

सुरतिया भाग चली ।
　तज काल देस संसार ॥ १ ॥
मन इंद्री संग बहु दुख पाये ।
　भोगन संग रही बीमार ॥ २ ॥

१—छुटकारा । २—मित्र ।

त्रिय तापन[1] में तपत रही नित।
कोई न मिला जो करे उबार ॥ ३ ॥
राधास्वामी दया मिली गुरु संगत।
सुनियाँ घर का भेद अपार ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन सुनत मगनानी।
दीन हुई हिये उपजा प्यार ॥ ५ ॥
दया करी दिया शब्द उपदेशा।
धुन डोरी गह[2] उतरूँ पार ॥ ६ ॥
मगन होय सुर्त घट में चाली।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ ७ ॥
शब्द शब्द पौड़ी[3] पै चढ़ कर।
पहुँची राधास्वामी धाम अपार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १४० ॥

सुरतिया जाय बसी।
धुर धाम गुरू के संग ॥ १ ॥
सतगुरु ने मोहि बाट[4] लखाई।
कर्म भर्म सब कीन्हें भंग[5] ॥ २ ॥
प्रीति सहित सुनती अनहद धुन।
दूत[6] हुए सब घट में तंग ॥ ३ ॥

१—त्रिय तापन—तीन ताप यानी आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक कष्ट। २—पकड़ कर। ३—सीढ़ी। ४—रास्ता। ५—नाश। ६—काम, क्रोध इत्यादि।

दया हुई सुर्त अधर सिधारी[1] ।
काल कर्म भी रह गए दंग[2] ॥ ४ ॥
प्रेम धार घट अंतर उमँगी ।
हरख रही अँग अंग ॥ ५ ॥
सुरत गई दौड़ी सतपुर में ।
धारा सतगुरु रंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा ।
हो गई सब से आज असंग[3] ॥ ७ ॥

॥ बचन दसवाँ ॥

प्रेम बिलास–भाग तीसरा

सुरलिया

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

कोइ सुनो बचन सतगुरु के सार ॥ टेक ॥
मन इंद्री जग में भरमावें ।
इन से रहो हुशियार ॥ १ ॥
बिषयन से तुम होय उदासा ।
चलो गुरू की लार[4] ॥ २ ॥
सतसँग करो बचन हिये धारो ।
कर कर मनन बिचार ॥ ३ ॥

१—गई । २—हैरान । ३—अलहदा । ४—साथ ।

सत पद का ले भेद गुरू से ।
सुरत शब्द का मारग धार ॥ ४ ॥
बिरह अंग ले करो कमाई ।
घट में सुन भनकार ॥ ५ ॥
दया मेहर राधास्वामी लेकर ।
उतरो भौजल पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

कोइ सुनो प्रेम से गुरू की बात ॥टेक ॥
सेवा कर सतसँग कर उनका ।
और बचन उन हिये बसात ॥ १ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
मन और सूरत गगन चढ़ात ॥ २ ॥
सुन सुन धुन मन होय रस माता[१] ।
दिन दिन आनँद बढ़ता जात ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति धार गुरू चरनन ।
हिये में दरशन छिन छिन पात ॥ ४ ॥
भाग नवीन जगे तेरा भाई ।
छिन छिन गुन सतगुरू के गात ॥ ५ ॥
आरत[२] कर हिये प्रेम बढ़ाओ ।
दया मेहर की पाओ दात ॥ ६ ॥

१—मतवाला । २—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

राधास्वामी काज करें तेरा पूरा।
सरन धार तब चरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आज चलो बिदेसन अपने देस
(पिया के देस) ॥ टेक ॥

या जग में पूरा सुख नाहीं।
फिर फिर भोगो करम कलेस ॥ १ ॥
चलो चलो नित काल पुकारे।
एक दिन तजना यह परदेस ॥ २ ॥
धन संपत कुछ संग न जावे।
छिन में छूटें यहाँ के ऐश[1] ॥ ३ ॥
याते सोचो समझो प्यारी।
अबही सम्हालो अपनी बैस[2] ॥ ४ ॥
सतगुरु खोज बाँध जुग[3] उनसे।
मन से त्यागो माया लेस[4] ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति धार हिये अंतर।
सुरत शब्द गह पहुँचो शेष[5] ॥ ६ ॥
वहाँ से सतपुर चलो अधर चढ़।
सुरत धरे जहाँ हंसा भेस[6] ॥ ७ ॥

१—आराम। २—उम्र, अवस्था। ३—जोड़ा। ४—संबंध। ५—अनन्त।
६—वेश, रूप।

राधास्वामी धाम गई अब निज घर ।
पाया परमानंद हमेश ॥ ८ ॥
अमर हुई दुख सुख सब छूटे ।
नित्त बिलास करे और ऐश[1] ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आज चलो पियारी अपने घर ॥ टेक ॥
जब से तुम परदेस सम्हारा ।
काल करम से यारी[2] कर ॥ १ ॥
शब्द गुरू नित टेरत[3] तोको ।
तू न सुने उन बानी चित धर ॥ २ ॥
माया ने बहु भोग उपाये[4] ।
तू चेतन फँस रही सँग जड़ ॥ ३ ॥
देह संग नित दुख सुख सहती ।
जनम मरन का डंड[5] और कर[6] ॥ ४ ॥
कहना मान पियारी मेरा ।
खोजो सतगुरु इस औसर ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति धरो उन चरना ।
उन सँग बाट[7] चलो अड़बड़[8] ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लेहिं उबारी ।
सरन धार उन चरन पकड़ ॥ ७ ॥

१—आराम । २—दोस्ती । ३—पुकारते । ४—उत्पन्न किए । ५—सज़ा ।
६—महसूल । ७—रास्ता । ८—कठिन ।

॥ शब्द ५ ॥

कोइ करो गुरू का सतसँग आज ॥टेक॥
जो जग सँग तुम रहो लिपटाई ।
परमारथ का होय अकाज ॥ १ ॥
जम के दूत सतावें तुम को ।
लख चौरासी[1] नचावें नाच ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो उन सतसँग ।
छोड़ जगत और कुल की लाज ॥ ३ ॥
प्रीति करो उन चरनन गहिरी ।
भक्ति भाव का पाओ साज[2] ॥ ४ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ ।
त्रिकुटी जाय करो वहाँ राज ॥ ५ ॥
राधास्वामी परम पुरुष दातारा[3] ।
करें मेहर से पूरन काज ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

कोइ सुनो हिये में गुरु संदेस ॥ टेक ॥
धार अधर से नित चल आवत ।
तू रहा लिपट करम के देस ॥ १ ॥

१—लख चौरासी—चौरासी लाख योनियों मे । २—सामान । ३—दयाल ।

मोह नींद में जुग जुग सोता ।
भोगत रहे नित काल कलेश ॥ २ ॥
माया काल पड़े तेरे पीछे ।
दुखी रखत तोहि और दिलरेश[1] ॥ ३ ॥
सतगुरु खोज उन बचन सम्हालो ।
छोड़ो जगत के भोग और ऐश[2] ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की धारो जुगती ।
त्यागो मन से काम और तैश[3] ॥ ५ ॥
प्रीति करो गाढ़ी[4] उन चरनन ।
कपट छोड़ धर हंसा भेस ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया धार अब मन में ।
मिल चरनन से कर आदेस[5] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

आज तजो सुरत निज मन का मान ॥टेक॥
इसी मान ने जग भरमाया ।
यही मान करे सब की हान ॥ १ ॥
अहँग[6] बुद्धि परदा है भारी ।
निज स्वरूप गुरु कभी न दिखान ॥ २ ॥
मान मनी जिस घट में भरिया ।
हिये नैन वाके कभी न खुलान ॥ ३ ॥

१—परेशान। २—आनन्द। ३—क्रोध। ४—गहरी। ५—प्रणाम।
६—अहंकार।

याते सब को ऐसा चहिये ।
अपनी कसर नित निरखें आन ॥ ४ ॥
दीन होय गिर सतगुरु चरना ।
अपने को जानो अनजान ॥ ५ ॥
तब सतगुरु और साध दया कर ।
भेद सुनावें अधर ठिकान ॥ ६ ॥
प्रीति सहित उन सतसँग करना ।
रहनी उन अनुसार रहान[1] ॥ ७ ॥
सुन उन बचन भाव जग त्यागो ।
सुरत शब्द का गहो निशान ॥ ८ ॥
दास अंग ले सेवा करना ।
ताड़ मार उन सहो निदान ॥ ९ ॥
काम क्रोध को मन से तजना ।
सील छिमा चित माँहि बसान ॥ १० ॥
जो कोइ बचन कहें तोहि कड़ुवा ।
और कोइ तान और दोष लगान ॥ ११ ॥
नीच निकाम समझ आपे को ।
तौ भी उनसे मन न फिरान[2] ॥ १२ ॥
कोई बात से मन नहिं उलटे ।
गुरु को नित तू गुरु ही जान ॥ १३ ॥

१—रहना । २—हटाना ।

भय और भाव सदा उन राखो ।
बचन सुनो उन चित से आन ॥ १४ ॥
बचन अनुसार करो तुम करनी ।
गहनी[1] रहनी[2] संग मिलान ॥ १५ ॥
अस २ भाव लाय जो गुरु से ।
उसको दें अपनी पहिचान ॥ १६ ॥
उमँग उमँग करे सेवा निस दिन ।
हरख हरख करे दरशन आन ॥ १७ ॥
दिन दिन जागे प्रीति नवीना ।
धर परतीत करे उन ध्यान ॥ १८ ॥
दीन होय मन बस में आवे ।
शब्द माहिं तब सुरत समान ॥ १९ ॥
प्रेम धार नित घट में जारी ।
दिन २ अनुभव सहज जगान ॥ २० ॥
रहन गहन[3] गुरुमुख की गाई ।
गुरुमुख होय सो ले पहिचान ॥ २१ ॥
राधास्वामी मेहर रहे नित संगा ।
सहज २ पट[4] अधर[5] खुलान ॥ २२ ॥
जोत निरख पहुँचे गगनापुर ।
सुन्न परे मुरली सुन तान ॥ २३ ॥

१—ग्रहण किया हुआ उपदेश। २—रहने का ढंग। ३—रहन गहन—रहनी गहनी। ४—परदे। ५—अंतर के।

सत्तनूर सतपुर जाय निरखे ।

अलख अगम के महल बसान ॥ २४ ॥

वहाँ से धुर घर पहुँचे छिन में ।

राधास्वामी चरन परस[1] मगनान ॥२५॥

॥ शब्द ८ ॥

आज करो गुरू सँग प्रीति सम्हार ।टेक।

मन इंद्री भोगन में अटके ।

जग जीवन सँग अधिका प्यार ॥ १ ॥

जग की चाह बसे नित मन में ।

छिन छिन उसका करत बिचार ॥ २ ॥

ऐसे जीव करें जो सतसँग ।

बचन गुरू नहिं चित में धार ॥ ३ ॥

संसय भरम धसे उन मन में ।

जग और कुल की रीत न टार[2] ॥ ४ ॥

सतसंगी अपने को कहते ।

गुरु भक्ती दई रीत बिसार ॥ ५ ॥

गुरु सतसंगी जो समझावें ।

रूसें[3] निंद्या करें पुकार ॥ ६ ॥

यह जिव रहते दया से ख़ाली ।

गुरु को धोखा देत लबार[4] ॥ ७ ॥

१—छू । २—छोड़ते । ३—रूठ जाते हैं । ४—झूठे ।

उन को भी स्वामी परम दयाला ।
देर अबेर[1] लगावें पार ॥ ८ ॥
याते सच्ची भक्ती कीजे ।
सोच समझ कर धर गुरु प्यार ॥ ९ ॥
संत मता सब मत से ऊँचा ।
धुर घर का पहुँचावनहार ॥ १० ॥
सच्चा सीधा सहज अभ्यासा ।
सहज करे सच्चा उद्धार ॥ ११ ॥
सतसँग कर समझौती लीजे ।
संसय भरम को दूर निकार ॥ १२ ॥
जगत बासना मन से तजना ।
जग जीवन को मत कर यार ॥ १३ ॥
अनेक तरंग उठें इस मन में ।
उनको जस तस मन में मार ॥ १४ ॥
प्रीति प्रतीति बसाओ हिये में ।
राधास्वामी नाम का कर आधार[2] ॥१५॥
जहाँ जहाँ प्रीति लगी अब तेरी ।
वहीं २ हुआ तेरा बंधन यार ॥ १६ ॥
सहज हठाओ मन को वहाँ से ।
ध्यान धरत गुरु रूप निहार ॥ १७ ॥

१—देर अबेर—कभी न कभी । २—अवलंब ।

जब गुरु चरनन होय दृढ़ प्रीती ।
सरन धार परतीत सम्हार ॥ १८ ॥
सब से गुरु जब प्यारे होईं ।
तब कुल मालिक होय दयार ॥ १९ ॥
मेहर करें तुझ पर वे हरदम ।
सुरत चढ़ावें नौ के पार ॥ २० ॥
इक दिन पहुँचावें धुर घर में ।
राधास्वामी परम पुरुष दातार ॥ २१ ॥

॥ शब्द ९ ॥

आज पकड़ो गुरु के चरन सम्हार ॥टेक॥
बिन गुरु तेरा और न कोई ।
वोही हैं तेरे रखवार ॥ १ ॥
कब लग मन सँग खाव झकोले ।
कब लग भरमो जग की लार[1] ॥ २ ॥
जगत भोग सब रोग पहिचानो ।
इन की चाह मन से तज डार ॥ ३ ॥
दृढ़ परतीत धरो गुरु चरनन ।
और बढ़ाओ दिन दिन प्यार ॥ ४ ॥
तेरा काज करेंगे वोही ।
ग़फ़लत तज अब हो हुशियार ॥ ५ ॥

१—साथ ।

घट में थिर[1] होय करो कमाई ।
सुनो सुरत से धुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
पहुँचावें तोहि धुर दरबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

कोइ चलो आज सतगुरु की लार[2] ।टेक।
जग जीवन का संग तियागो ।
गुरु भक्तन से करो पियार ॥ १ ॥
धुर पद की कर मन परतीती ।
टेक पुरानी सब तज डार ॥ २ ॥
धुर पद है वह राधास्वामी ।
कुल मालिक समरथ दातार ॥ ३ ॥
उन चरनन में प्रीति लगाओ ।
राधास्वामी नाम जपो हर बार[3] ॥ ४ ॥
सतसँग कर सब भरम निकालो ।
ध्यान लगाओ सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
मन इंद्रियन को रोक अँदर में ।
घट में परखो धुन की धार ॥ ६ ॥
जो अस करो अभ्यास प्रेम से ।
राधास्वामी मेहर से लेहिं उबार ॥ ७ ॥

१—स्थिर, एकाग्र । २—साथ । ३—वक्त ।

॥ शब्द ११ ॥

कोइ परखो गुरू की लीला सार ॥टेक॥

सतसँग करो चेत कर निस दिन ।
घट में करो अभ्यास सम्हार ॥ १ ॥

मन माया की चाल निरखना ।
गुरु की मेहर परख हर बार[1] ॥ २ ॥

जो सच्चा होय सरनी आवे ।
तिसको सतगुरू लेहिं उबार ॥ ३ ॥

दिन दिन मौज दिखावें न्यारी ।
काल करम रहें बाज़ी हार ॥ ४ ॥

मन और सूरत अधर चढ़ावें ।
अपना सहारा देकर प्यार ॥ ५ ॥

घट में लीला अजब दिखावें ।
धाम धाम की रचन नियार ॥ ६ ॥

राधास्वामी सतगुरू दीनदयाला ।
गोद बिठाय उतारें पार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

कोइ झाँको[2] झँझरिया बिरह सम्हार ।टेक।

या जग में पूरन सुख नाहीं ।
सुद्ध करो तुम निज घरबार ॥ १ ॥

१—वक्त़ । २—देखो ।

जनम जनम यहाँ दुख सुख सहना ।
छूटे नहीं काल का जार ॥ २ ॥
याते सतगुरु खोजो भाई ।
भेद लेव तुम घर का सार ॥ ३ ॥
मन इंद्री को रोक अँदर में ।
ध्यान करो गुरु प्रीति सम्हार ॥ ४ ॥
शब्द होत तेरे घट में हर दम ।
सुरत लगाय सुनो कर प्यार ॥ ५ ॥
सहज सहज फिर चढ़ो अधर में ।
पहिले ताको[1] तिल[2] का द्वार ॥ ६ ॥
द्वारा फोड़ चलो आगे को ।
निरखो निरमल जोत उजार ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
सहज लगावें तुझको पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

कोइ परसो[3] चरन गुरु चढ़ गगना ॥टेक॥
प्रेम भक्ति की रीत सम्हालो ।
सतसँग में तुम नित जगना ॥ १ ॥
माया घात[4] बचा कर चालो ।
यामें काल करे ठगना ॥ २ ॥

१—देखो । २—तीसरा तिल । ३—मिलो । ४—चोट ।

सतगुरु चरनन प्रीति बढ़ाओ

शब्द जुगत में नित लगना ॥ ३ ॥

सतगुरु चरन ध्यान धर घट में ।

दरस पाय मन हुआ मगना ॥ ४ ॥

द्वारा फोड़ अधर को चाली ।

जोत रूप वहाँ नित तकना[1] ॥ ५ ॥

काल करम दोउ रहे मुरझाई ।

अब मोहि रोक नहीं सकना ॥ ६ ॥

त्रिकुटी जाय मगन होय बैठी ।

राधास्वामी चरन माहि पकना ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

कोइ चलो उमँग कर सुन नगरी ॥टेक॥

सतसँग में अब तन मन देना ।

शब्द पकड़ चलो गुरु डगरी[2] ॥ १ ॥

सतगुरु से नित प्रीति बढ़ाना ।

चरन सरन दृढ़ कर पकड़ी ॥ २ ॥

सोता मनुआँ फिर उठ जागे ।

धुन सँग सुरत रहे जकड़ी[3] ॥ ३ ॥

प्रेम पंख ले उड़ी गगन में ।

राधास्वामी बल से हुई तकड़ी[4] ॥ ४ ॥

१—देखना । २—रास्ता । ३—बँधी । ४—जोरदार ।

काल करम अब रहे मुरझाई ।
धुन रही सिर माया मकड़ी[1] ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से निज घर पाया ।
अमर हुई चरनन लग री ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

चलो चढ़ो री सुरत सुन सुन्न की धुन ।
अब छोड़ सकल[2] मन के औगुन ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर छिन छिन ।
राधास्वामी रूप धियाओ पुन पुन[3] ॥ २ ॥
धुन शब्द सुनो घट में चुन चुन ।
गुरु महिमा गाय रहो खिन खिन[4] ॥ ३ ॥
तज देव बिकारों को गिन गिन ।
तब माया काल से हो भिन भिन[5] ॥ ४ ॥
गुरु मेहर करूँ घट मन मंजन ।
नभ में लख जोत सुनूँ घन[6] घन ॥ ५ ॥
अभ्यास करूँ घट में दिन दिन ।
धुन शब्द सुनूँ हिये में रुनझुन ॥ ६ ॥
धुर धाम गई राधास्वामी धन सुन ।
अब हरख कहूँ राधास्वामी धन धन ॥ ७ ॥

१—मकड़ी की तरह जाल फैलाने वाली । २—सब । ३—पुन पुन—बार बार । ४—खिन खिन—क्षण क्षण, हर समय । ५—अलहदा । ६—घंटे की आवाज़ ।

॥ शब्द १६ ॥

कोइ मिलो पुरुष से चल सतपुर ॥ टेक॥

तीन लोक यह काल अस्थाना।

चौथे लोक बसें सतगुरु ॥ १ ॥

संत बिना कोइ वहाँ न जावे।

वे पहुचावें तोहि घर धुर[1] ॥ २ ॥

सेवा कर उन लेव रिझाई[2]।

प्रीति प्रतीति बसावो उर[3] ॥ ३ ॥

सुरत शब्द की करो कमाई।

सतगुरु बल ले मारग तुर[4] ॥ ४ ॥

माया बिघन न लागे कोई।

नहिं ब्यापे तोहि काल का जुर[5] ॥ ५ ॥

सुन में जाय होय तू निर्मल।

हंसन संग चुने तू दुर[6] ॥ ६ ॥

सतपुर जाय मिले सतगुरु से।

राधास्वामी दया या जग से मुर[7] ॥७॥

॥ शब्द १७ ॥

कोइ चलो गुरू सँग अगम नगर ॥ टेक ॥

जगत बासना मन से त्यागो।

सतगुरु खोज उन चरन पकड़ ॥ १ ॥

१—असली। २—लेव रिझाई—प्रसन्न कर लो। ३—हृदय में। ४—चल। ५—ज्वर, बुखार। ६—मोती। ७—हट जा।

समझ बूझ गुरु बचन सम्हालो ।
भेद पाय लो घर की डगर[1] ॥ २ ॥
जो गुरु जुगत बतावें तुमको ।
नित्त कमाओ हिये प्यार धर ॥ ३ ॥
गुरु बल पाँच दूत[2] को पकड़ो ।
मन इंद्री को बाँध जकड़ ॥ ४ ॥
जब घट में मन अस्थिर[3] होवे ।
सुन सुन धुन सुर्त चढ़े अधर ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरन सरन गह दृढ़ कर ।
इक दिन जाय बसो तुम निज घर ॥ ६ ॥

बिरह का अंग

॥ शब्द १८ ॥

बोल री मेरी प्यारी मुरलिया ।
तरस रही मेरी जान ॥ १ ॥ (मुर०)
सुन सुन धुन मन उमँगत घट में ।
और सिथिल[4] हुए प्रान ॥ २ ॥ (मुर०)
रस भरे बोल सुने जब तेरे ।
गया कलेजा छान ॥ ३ ॥ (मुर०)

१—रास्ता । २—काम, क्रोध इत्यादि । ३—चंचल । ४—शिथिल, मृतप्राय ।

तन मन की सब सुद्ध बिसारी ।
धुन में चित्त समान ॥ ४ ॥(मुर०)
राधास्वामी दया अधर चढ़ आई ।
सत पद दरस दिखान ॥ ५ ॥ (मुर०)

भेद का अंग

॥ शब्द १९ ॥

आज बाजे मुरलिया प्रेम भरी ॥ टेक ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल गावें ।
सतसंगिन सब उमँग भरी ॥ १ ॥
प्रेम रंग रही भींज सुरतिया ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ २ ॥
झलक जोत और सूर प्रकाशा ।
लख[1] तन मन से होत छड़ी[2] ॥ ३ ॥
निरमल होय चली ऊपर को ।
सुन्न महासुन पार खड़ी ॥ ४ ॥
भँवरगुफा में सोहँग बंसी ।
बाज रही मधुरी[3] मधुरी ॥ ५ ॥
सत्त अलख और अगम परस कर ।
राधास्वामी चरनन आन पड़ी ॥ ६ ॥

१—देखकर । २—अलहदा । ३—मीठी धुन से ।

॥ शब्द २० ॥

आज बाजे बीन सतपुर की ओर ॥ टेक ॥

सुन धुन सुरत हुई मस्तानी ।
गई भँवर चढ़ ऊपर दौड़ ॥ १ ॥

पुरुष दरस कर अति मगनानी ।
सनमुख हुई ले आरत[1] जोड़ ॥ २ ॥

हंस सभी अब जुड़ मिल गावें ।
आरत की हुई धूम और शोर ॥ ३ ॥

प्रेम सिंध में आय समानी ।
मिट गया महाकाल का ज़ोर ॥ ४ ॥

यह पद मेहर दया से पाया ।
जब मिले राधास्वामी बंदीछोड़[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

आज बाजे भँवर धुन मुरली सार ॥ टेक ॥

यह मुरली सतलोक से आई ।
सोहँग पुरुष किया बिस्तार ॥ १ ॥

जिन जिन सुनी आन[3] यह बंसी ।
मोह रहे धर प्यार ॥ २ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । २—छुटकारा दिलाने वाले । ३—आकर ।

दूर हुए मान और अहंकारा ।
काल और महाकाल रहे हार ॥ ३ ॥
यह धुन कोइ बड़भागी पावे ।
जा[1] पर सतगुरु होयँ दयार ॥ ४ ॥
मुरली की छाया धुन सुन कर ।
मोहे सब सुर[2] नर और नार ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
ताहि[3] सुनावें यह धुन सार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २२ ॥

आज बाजे सुन्न में सारँग सार ॥टेक॥
उठत मधुर धुन अमीरस भीनी[4] ।
सुनत पिरेमी कोइ धर प्यार ॥ १ ॥
अजब धाम जहाँ सेत उजारा ।
खिल रही जहाँ वहाँ सदा बहार ॥ २ ॥
तिरलोकी का मूल अस्थाना ।
संतन का वही दसवाँ द्वार ॥ ३ ॥
ब्रह्म शब्द तिस नीचे जागा[5] ।
मूल नाद जहाँ धुन ओंकार ॥ ४ ॥
सूरज मंडल लाल प्रकाशा ।
तिरलोकी का वही करतार ॥ ५ ॥

१—जिस । २—देवता । ३—उसको । ४—सनी हुई । ५—प्रकट है ।

माया शब्द उठत तेहि नीचे ।
जग में बिछाया जिसने जार[1] ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले भाग से ।
सहज उतारा भौजल पार ॥ ७ ॥
कर आरत उन हुई मगन[2] मैं ।
बैठी राधास्वामी सरन सम्हार ॥ ८ ॥

॥ शब्द २३ ॥

आज गाजे[3] गगन धुन ओअं सार ॥ टेक ॥
नाद[4] धाम से यह धुन आई ।
कीना जगत पसार ॥ १ ॥
ब्रह्म और पारब्रह्म तिस नामा ।
तीन लोक में तिस उजियार ॥ २ ॥
सूक्षम पाँच तत्त गुन तीनों ।
परगट हुए जस नूर[5] की धार ॥ ३ ॥
घंटा संख शब्द उपजाये ।
माया फैली जग में झाड़[6] ॥ ४ ॥
यासे कोई न बचने पावे ।
बिन सतगुरु आधार ॥ ५ ॥
मैं निज भाग सराहूँ अपना ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥६॥

१—जाल। २—प्रसन्न। ३—गरजती है। ४—शब्द। ५—प्रकाश। ६—सभी।

॥ शब्द २४ ॥

कोइ सुनो गगन धुन धर कर प्यार ॥टेक॥
श्याम कंज की राह अधर चढ़।
निरख जोत उजियार ॥ १ ॥
सहसकँवलदल घंटा बाजे।
और सुनो वहाँ संख पुकार ॥ २ ॥
बंकनाल होय त्रिकुटी फोड़ो।
निरखो सूर उजियार ॥ ३ ॥
गरज मृदंग सँग ओंअं गाजे।
तिरलोकी का मूल अधार ॥ ४ ॥
बिना प्रेम कोइ राह[1] न पावे।
गुरु से पावे प्रेम पियार ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में।
शब्द पकड़ जावो घट पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २५ ॥

चढ़ सहसकँवल पद परस[2] हरी ॥टेक॥
सुन सुन घंटा रीझ रही[3] अब।
झलक जोत लख उमँग बढ़ी ॥ १ ॥

१—रास्ता। २—मिलो। ३—रीझ रही—प्रसन्न हो रही।

गुन तीनों यहाँ से उतपाने ।
सत रज तम त्रिय[1] धार बड़ी ॥ २ ॥
माया ने किया बहु बिस्तारा ।
काल टेक सब जीव धरी ॥ ३ ॥
चार खान[2] चौरासी धारा ।
यहाँ से हुई सब रचन खड़ी ॥ ४ ॥
पाप पुन्य का फल सब भोगें ।
पार न जावें वार रही ॥ ५ ॥
जिन को सतगुरु मिलें दया कर ।
सोई जीव भौसिंध[3] तरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी मिले भाग से हम को ।
उन चरनन सुर्त जोड़ धरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २६ ॥

आज गाजे सुरतिया अधर चढ़ी ॥ टेक ॥
गुरु परताप चली अब घट में ।
सुरत शब्द की टेक धरी ॥ १ ॥
तिल अंतर लख सेत उजारी ।
झिल मिल जोती नज़र पड़ी ॥ २ ॥
बंकनाल होय गई त्रिकुटी में ।
मान मोह मद सकल हरी[4] ॥ ३ ॥

१—तीन। २—चार खान—सृष्टि में जीवों की उत्पत्ति के ४ भेद—अंडज, जेरज, स्वेदज, उद्भिज। ३—भौसागर। ४—दूर किए।

काल दिया मोहि अधिक भुलावा ।
　गुरू टेक से नाहि टरी[1] ॥ ४ ॥
सुन में जाय सुरत हुई निर्मल ।
　बाजत जहाँ सारँग किंगरी ॥ ५ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर धाई ।
　भरी अमी से सुर्त गगरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन निहारे ।
　हुई सुरत अब अजर अमरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

कोइ निरखो अधर चढ़ पिछली रात ।टेक।
अमी धार पल पल हिये झिरती[2] ।
　घट में अति आनंद समात ॥ १ ॥
जोत उजार होत निज घट में ।
　घंटा संख मधुर धुन गात ॥ २ ॥
हरख हरख मन उमँगत घट में ।
　रस पीवत सुर्त अधर चढ़ात ॥ ३ ॥
माया काल तजत निज कौतुक[3] ।
　छिन छिन हियरे प्रेम बढ़ात ॥ ४ ॥
सात्वकी[4] रहन रहत अस औसर ।
　गुरु चरनन में लगन लगात ॥ ५ ॥

१—हटी । २—गिरती । ३—छल कपट । ४—सतोगुनी ।

मेहर पाय सुर्त चढ़त अधर में।
　गगन गुरू के दरशन पात ॥ ६ ॥
गरज गरज धुन ओअँग गाजे।
　काल करम जहाँ रहे लजात ॥ ७ ॥
निर्मल होय चढ़ी ऊँचे को।
　हंसन संग बिलास करात ॥ ८ ॥
धुन झनकार उठत जहाँ भारी।
　नाचत गावत अति सुख पात ॥ ९ ॥
महासुन्न होय धसी गुफा में।
　मधुर मधुर मुरली धुन आत ॥ १० ॥
सत्तपुरुष का रूप निहारा।
　सत्त शब्द जहाँ बीन बजात ॥ ११ ॥
अलख अगम के पार पहुँच कर।
　राधास्वामी चरनन टेका[1] माथ[2] ॥ १२ ॥
तेज पुंज[3] वह देश अनूपा।
　अद्भुत शोभा बरनी न जात ॥ १३ ॥
अगिनित सूर चंद्र परकाशा।
　किगरे किंगरे रहे बसात ॥ १४ ॥
दया मेहर जस राधास्वामी कीनी।
　महिमा उसकी को[4] कह गात ॥ १५ ॥

१—झुकाया। २—सिर। ३—तेज पुँज—प्रकाश का भंडार। ४—कौन।

प्रेम का अंग

॥ शब्द २८ ॥

आज लाई सुरतिया आरत साज।
मन इंद्रियन से छिन छिन भाज॥ १ ॥
उमँग जगाय चरन गुरु सेवत।
जग जीवन की तज दई लाज ॥ २ ॥
सतसँगियन सँग हिल मिल चालत।
मन दर्पन[1] को बहु बिधि माँज ॥ ३ ॥
सुरत शब्द ले भेद अपारा।
चित दे सुनत गगन की गाज[2] ॥ ४ ॥
सतगुरु पूरे दया करी अब।
प्रेम भक्ति का दीना दाज[3] ॥ ५ ॥
मगन होय गुरु के गुन गावत।
अब हुआ मेरा पूरन काज ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया चढ़ी निज घट में।
वहाँ बैठ अब भोगूँ राज ॥ ७ ॥

॥ शब्द २९ ॥

आज आई सुरतिया भाव भरी ॥टेक॥
नैन कँवल का थाल बनाया।
पलकन की वामें[4] जड़ी[5] छड़ी[6] ॥ १ ॥

१—शीशा। २—गरज। ३—बख़्शिश। ४—उसमें। ५—खड़ी कर लीं।
६—आरती के लिए सजाए हुए थाल में जो सींकें खड़ी की जाती हैं।

दृष्टी की जहाँ जोत जगाई ।
तिल दिवला[1] में आन धरी ॥ २ ॥
शब्द गुरू सँग आरत[2] धारी ।
गावत सन्मुख आन खड़ी ॥ ३ ॥
काल और करम रहे थक नीचे ।
माया ममता सकल जरी[3] ॥ ४ ॥
सुन में निरखत हंस बिलासा ।
गुरु सँग उड़ी ज्यों उड़त परी ॥ ५ ॥
सतपुर जाय करी फिर आरत ।
धुन बीना जहाँ बजे मधुरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि अब डारी ।
आरत कर उन चरन पड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३० ॥

आज गावे सुरत गुरु आरत सार ॥टेक॥
प्रेम भरी गुरु सन्मुख आई ।
तन मन दीना वार ॥ १ ॥
उमँग उमँग गुरु दरस निहारत ।
बढ़त हरख और प्यार ॥ २ ॥
परमारथ अब मीठा लागा ।
और किरत[4] सब दई बिसार ॥ ३ ॥

१—दीपक । २—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ३—नाश हो गए । ४—काररवाई ।

गुरु चरनन में आय पड़ी अब।
सतसँग करत हुई हुशियार ॥ ४ ॥
पी पी रस हिये में त्रिप्तानी[1]।
मिला सुरत को शब्द अधार ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर पाय घर चाली।
सहज उतर गई भौजल पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

आज आई सुरतिया रंग भरी ॥ टेक ॥
मन चित का लिया थाल सजाई।
प्रेम की जोत जगाय धरी ॥ १ ॥
उमँग उमँग कर आरत[2] फेरत।
सकल पसार से होय छड़ी[3] ॥ २ ॥
हंस हंसनी होय इकट्ठे।
गुरु सन्मुख सब आन खड़ी ॥ ३ ॥
आनँद छाय रहा आकाशा।
शब्दन की अब लगी झड़ी ॥ ४ ॥
ताल मृदंग किंगरी बाजे।
धूम धाम अब मची बड़ी ॥ ५ ॥
सुन सुन मुरली बीन सुहावन।
सत्तलोक जाय सुरत अड़ी ॥ ६ ॥

१—तृप्त या संतुष्ट हुई। २—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३। ३—अलहदा।

निरख रही जहाँ बिमल प्रकाशा ।
चाँद सूर की छुटी लड़ी[1] ॥ ७ ॥
हरख हरख राधास्वामी गुन गावत ।
पल पल छिन छिन घड़ी घड़ी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

आज खेलूँ कबड्डी घट में आय ॥टेक॥
तीसर तिल का पाला[2] बनाया ।
दो दल घट में लिये जमाय ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम पुकारत धाऊँ ।
बैरियन को लूँ तुरत गिराय ॥ २ ॥
गुरु बल धार हिये में अपने ।
काल बली को मारूँ धाय ॥ ३ ॥
माया जाल तोड़ दूँ छिन में ।
गुरु चरनन घट प्रेम जगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया खेत को जीतूँ ।
काल से लूँ असवारी जाय ॥ ५ ॥
काम क्रोध मान और अहंकारा ।
निर्बल होय सब रहे लजाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम दुहाई फेरूँ ।
फ़तह[3] का झंडा खड़ा कराय ॥ ७ ॥

१—पंक्ति । २—कबड्डी के खेल में दोनों दलों के बीच की रेखा । ३—विजय, जीत ।

॥ शब्द ३३ ॥

आज आई सुरत गुरु आरत धार ॥टेक॥
खोज लगावत सन्मुख आई ।
सुने बचन गुरु सार ॥ १ ॥
मगन हुई संसय सब भागे ।
दूर हुए सब भोग बिकार[1] ॥ २ ॥
भेद पाय घट धुन में लागी ।
ध्यान धरत गुरु रूप निहार ॥ ३ ॥
हरख हरख करती सतसंगा ।
अंतर बाहर धर कर प्यार ॥ ४ ॥
उमँग उमँग सेवा नित करती ।
राधास्वामी चरनन तन मन वार ॥५॥
मन ने त्याग दई अब धावन[2] ।
थिर[3] होय बैठा शब्द सम्हार ॥ ६ ॥
भोग बासना तज दई सारी ।
चित हुआ निरमल चरन अधार ॥ ७ ॥
नित अभ्यास नेम से करती ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया भाग बड़ जागा ।
कस उन महिमा कहूँ पुकार ॥ ९ ॥

१—दोष । २—भाग दौड़ । ३—स्थिर, निश्चल ।

॥ शब्द ३४ ॥

कोइ सुने पिरेमी घट धुन सार ॥ टेक ॥
इंद्री भोग लगे सब फीके ।
मन आसा दई सकल[1] बिसार ॥ १ ॥
गुरु दर्शन में लागा मनुआँ ।
बचन सुनत हिये खिला गुलज़ार ॥ २ ॥
मेहर करी गुरु भेद बताया ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनत धुन ओअँग ।
सुरत हुई तन मन से न्यार ॥ ४ ॥
सुन में जाय मिली हंसन से ।
निरखा सेत चंद्र उजियार ॥ ५ ॥
मुरली धुन सुन अधर सिधारी ।
पहुँची सत्तपुरुष दरबार ॥ ६ ॥
अलख अगम का झाँक[2] अस्थाना ।
राधास्वामी चरनन हुई बलिहार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

मेरी लागी गुरू सँग प्रीति नई ॥ टेक ॥
सतसँग कर गुरु सेवा लागी ।
सरधा[3] सहित उपदेश लई ॥ १ ॥

१—सभी । २—देख । ३—श्रद्धा ।

जगत भाव भय मन में राखत ।
साधारन गुरु टेक गही[1] ॥ २ ॥
मन इंद्री को मोड़ा नाहीं ।
भजन ध्यान अस करत रही ॥ ३ ॥
सतगुरु दया दृष्टि अब कीनी ।
घट में प्रीति जगाय दई ॥ ४ ॥
जग जंजाल भोग इंद्री के ।
चित से सहज बिसार दई ॥ ५ ॥
उमँग उमँग गुरु चरनन लागी ।
शब्द की हुई परतीत सही[2] ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया सुधारी ।
भौसागर के पार गई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

आज खेले सुरत गुरु चरनन पास ॥ टेक ॥
न्यारा कर गुरु लिया अपनाई ।
चरन मिले निज सुख की रास[3] ॥ १ ॥
नित गुरु दर्शन करूँ उमँग से ।
यही मैं मन में धरती आस ॥ २ ॥
गुरु सम[4] और न प्यारा लागे ।
गुरु ही का नित करूँ बिस्वास ॥ ३ ॥

१—पकड़ी। २—ठीक ठीक, पूरी । ३—भंडार । ४—समान ।

छिन नहिं बिछड़ूँ चरन गुरू से ।
गुरु ही के सँग रहूँ निस बास[1] ॥ ४ ॥
गुरु पर तन मन धन सब वारूँ ।
गुरु दासन की हुई मैं दास ॥ ५ ॥
भोग बिलास जगत नहिं भावें ।
जग से रहती सहज उदास ॥ ६ ॥
राधास्वामी से कुछ और न माँगूँ ।
दीजे मोहिं निज चरन निवास ॥ ७ ॥
राधास्वामी महिमा निस दिन गाऊँ ।
राधास्वामी सुमिरूँ स्वाँसो स्वाँस ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

आज गावो गुरू गुन उमँग जगाय ॥ टेक ॥
दया धार धुर घर के बासी ।
नर देही में प्रगटे आय ॥ १ ॥
निज घर का मोहिं पता बताया ।
मारग का दिया भेद लखाय ॥ २ ॥
भिन्न भिन्न निरनय[2] मंज़िल[3] का ।
मेहर से दीना खोल सुनाय ॥ ३ ॥
अपनी दया का दीन सहारा ।
मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ४ ॥

१—बासर, दिन । २—निर्णय, स्पष्ट वर्णन । ३—रास्ते ।

करम भरम की फाँसी काटी ।
काल करम से लिया बचाय ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ा कर हिये में ।
दीना घर की ओर चलाय ॥ ६ ॥
जिन यह भेद सुना नहिं गुरु से ।
सो रहे माया सँग लिपटाय ॥ ७ ॥
जनम जनम वे दुख सुख भोगें ।
भरमें चार खान[1] में जाय ॥ ८ ॥
दया मेहर का कस[2] गुन गाऊँ ।
जस सतगुरु ने करी बनाय ॥ ९ ॥
किरपा कर मोहि आपहि खींचा ।
और चरनन में लिया लगाय ॥ १० ॥
जो अस मेहर न करते मुझ पर ।
काल जाल में रहत फँसाय ॥ ११ ॥
मैं बलहीन करूँ क्या महिमा ।
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाय॥१२॥

॥ शब्द ३८ ॥

आज आई सुरतिया उमँग भरी ॥टेक॥
सुन गुरु बचन मगन मन होती ।
नैन कँवल दृष्टी जोड़ धरी ॥ १ ॥

१—सष्टि में उत्पत्ति के ४ भेद—अंडज, जेरज, स्वेदज उद्भिज । २— कैसे ।

प्रीति प्रतीति बढ़त अब छिन छिन।
आसा जग की आज जरी[1] ॥ २ ॥
गुरु से लीना सार उपदेशा।
सुरत गगन की ओर चढ़ी ॥ ३ ॥
करम धरम सब पटक दिये हैं।
मन माया से ख़ूब लड़ी ॥ ४ ॥
काल जाल डाले बहुतेरे।
गुरु बल हिये धर नहीं डरी ॥ ५ ॥
राधास्वामी लिया मोहि अपनाई।
भौसागर से आज तरी[2] ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

आज नाचे सुरतिया गगन चढ़ी॥ टेक॥
सुन सुन धुन सखियन को सँग ले।
ठुमक ठुमक पग[3] अधर धरी ॥ १ ॥
ताल मृदंग बजे सारंगी।
और मुरलिया रंग भरी ॥ २ ॥
जुड़ मिल सब नाचें और गावें।
राग रागिनी प्रेम भरी ॥ ३ ॥
शब्दन की झनकार सुनावत।
अमृत बरखा लगी झड़ी ॥ ४ ॥

१—नाश हो गई। २—पार हो गई। ३—पैर, क़दम।

हंस हंसिनी देख बिलासा ।
 झुंड झुंड सब आन खड़ी ॥ ५ ॥
अस लीला राधास्वामी दिखाई ।
 दया मेहर मोपै करी बड़ी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

आज सुनत सुरतिया घट में बोल[1] ॥ टेक ॥
उमँग उमँग लागी अब घट में ।
 करत धुनन सँग चोल[2] ॥ १ ॥
गुरु पै वार रही अब तन मन ।
 चित से सुनती बचन अनमोल ॥ २ ॥
संत मता अति ऊँचा सीधा ।
 दृढ़ कर पकड़ा शब्द अतोल ॥ ३ ॥
परमारथ में हित कर[3] लागी ।
 सुफल हुई नरदेह अमोल ॥ ४ ॥
प्रीति जगत की निपट स्वारथी ।
 देखी निज कर जाँच और तोल ॥ ५ ॥
राधास्वामी मुझ पर हुए दयाला ।
 दूर किये सब माया खोल[4] ॥ ६ ॥

१—शब्द । २—बिलास । ३—हित कर—प्रेम पूर्वक । ४ – परदे ।

॥ शब्द ४१ ॥

राधास्वामी चरन में मन अटका[1] ॥ टेक ॥
गुरु के बचन रसीले लागे ।
जग से अब छिन छिन झटका[2] ॥ १ ॥
करम धरम और जग ब्योहारा ।
सबको अब घर घर पटका ॥ २ ॥
इंद्री भोग और जगत पदारथ ।
सब का मेट दिया खटका[3] ॥ ३ ॥
भेद पाय सुर्त लागी घट में ।
शब्द संग अब मन लटका[4] ॥ ४ ॥
चरन सरन राधास्वामी धारी ।
काल करम को दिया भटका[5] ॥ ५ ॥
सुरत चढ़ाय गगन में पहुँची ।
कर्मन का फूटा मटका[6] ॥ ६ ॥
सतपुर दरस पुरुष का पाया ।
प्रेम रंग अब नया चटका[7] ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर अस कीनी ।
खेल खिलाया मोहि नट का ॥ ८ ॥

१—फँस गया, बँध गया। २—हट गया। ३—डर। ४—जुड़ गया। ५—दिया भटका—भुलावा दे दिया। ६—घड़ा। ७—ज़ाहिर हुआ।

॥ शब्द ४२ ॥

राधास्वामी चरन में सुर्त लागी ॥टेक॥

मोह जाल जंजाल तोड़ कर ।
जग से अब छिन छिन भागी ॥ १ ॥

सुन गुरु बचन मगन हुआ मनुआँ ।
शब्द संग सूरत जागी ॥ २ ॥

संसय भरम अब गये नसाई ।
करम धरम बिच दई आगी ॥ ३ ॥

काम क्रोध और लोभ बिकारा ।
मान ईरखा दई त्यागी ॥ ४ ॥

सतगुरु चरनन प्यार बढ़ावत ।
मन हुआ धुन रस अनुरागी ॥ ५ ॥

राधास्वामी सरन धार हिये अंतर ।
मेहर दया उनसे माँगी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

राधास्वामी प्रीति हिये छाय रही ॥ टेक ॥

जब से स्वामी दरशन कीने ।
छबि[1] उनकी मन भाय रही[2] ॥ १ ॥

उमँग उमँग सेवा में लागी ।
राधास्वामी दया नित पाय रही ॥ २ ॥

१—शोभा । २—भाय रही—अच्छी लग रही ।

हित चित से करती सतसंगा ।
नित नया प्रेम जगाय रही ॥ ३ ॥
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा ।
गुरु स्वरूप हिये ध्याय रही ॥ ४ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत ।
घट में आरत गाय रही ॥ ५ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला ।
चरनन सुरत लगाय रही ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

आज आई सुरतिया उमँग सम्हार । टेक ।
जगत भोग से कर बैरागा ।
तन मन धन गुरु चरनन वार ॥ १ ॥
जग जीवन का संग तियागा[1] ।
सतसँग में लगी धर कर प्यार ॥ २ ॥
गुरु स्वरूप निरखत मोहा मन ।
घर बाहर की सुद्ध[2] बिसार ॥ ३ ॥
बचन गुरू के प्यारे लागे ।
सेवा करत भाव हिये धार ॥ ४ ॥
सहज सुरत लागी अंतर में ।
घट में सुन अनहद झनकार ॥ ५ ॥

१—छोड़ दिया । २—याद ।

राधास्वामी प्यारे मेहर कराई ।
सहज किया मेरा बेड़ा पार ॥ ६ ॥

बिनती का अंग

॥ शब्द ४५ ॥

आज माँगे सुरतिया भक्ती दान ॥ टेक ॥
त्रिय तापन[1] सँग बहु दुख पाये ।
फीका लगा जहान[2] ॥ १ ॥
खोजत खोजत सतसँग पाया ।
मगन हुई गुरु सन्मुख आन ॥ २ ॥
प्रेम सहित गुरु सेवा धारी ।
गुरु स्वरूप का धारा ध्यान ॥ ३ ॥
दर्शन रस घट में नित लेती ।
तन मन धन करती कुरबान[3] ॥ ४ ॥
शब्द जुगत नित पिरत[4] कमाती ।
धुन सँग मन और सुरत लगान ॥ ५ ॥
नई प्रतीति प्रीति घट जागी[5] ।
सतगुरु की करती पहिचान ॥ ६ ॥
मेहर हुई सुर्त अधर सिधारी[6] ।
राधास्वामी चरनन जाय समान ॥ ७ ॥

१—त्रिय तापन—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक कष्ट । २—संसार । ३—निछावर । ४—नित पिरत—नित्य प्रति, हर रोज़ । ५—उत्पन्न हो गई । ६—गई ।

॥ शब्द ४६ ॥

आज माँगे सुरतिया गुरु का संग ॥टेक॥
मोह जाल में रही फँसानी ।
नहिं जाने कुछ भक्ती ढंग ॥ १ ॥
ख़बर पाय राधास्वामी संगत की ।
हरख रही अँग अंग ॥ २ ॥
औसर पाय मिली सतगुरु से ।
बचन सुनत हिये बढ़ी उमंग ॥ ३ ॥
शब्द भेद ले जूझत मन से ।
त्यागत सबही उचंग ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा ।
मारत काल निहंग ॥ ५ ॥
सुनत शब्द धुन चढ़त गगन पर ।
बाज रही जहाँ नित मिरदंग ॥ ६ ॥
सतपुर जाय मिली सतगुरु से ।
राधास्वामी चरनन धारा रंग ॥ ७ ॥

सरन का अंग

॥ शब्द ४७ ॥

राधास्वामी सरन निज कर धारी ॥टेक॥
भाग जगे राधास्वामी मोहिं भेंटे ।
चरनन प्रीति लगी सारी ॥ १ ॥

निरख रही स्वामी रूप अनूपा ।
सोभा उसकी अति भारी ॥ २ ॥
मन और सुरत सिमट कर आये ।
छबि पर दृष्टि तनी न्यारी ॥ ३ ॥
हरख अधिक अब हिये समाया ।
चित हुआ चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥
इत से मोड़ अधर को चाली ।
घंटा संख धूम डारी ॥ ५ ॥
जोत निरख त्रिकुटी को धाई ।
खिल गई घट कँवलन क्यारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर से अपनी ।
पहुँचाया सतगुरु बाड़ी[1] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

राधास्वामी चरन दृढ़ कर पकड़े ॥टेक॥
सतसँग में चित जाय समाना ।
छोड़ दिये जग के झगड़े ॥ १ ॥
मन इंद्रियन बहु नाच नचाया ।
मेट दिये उनके रगड़े[2] ॥ २ ॥
माया कीने बिघन अनेका ।
और दिखलाये बहु भगड़े[3] ॥ ३ ॥

१—घर । २—बखेड़े । ३—बहाने ।

राधास्वामी बल मैं हिरदे धारा।
गुरू ने किया मोहिं अब तकड़े[1]॥ ४ ॥
मोहिं दीन को आप सम्हारा।
दूर कराये बिघन सगरे[2]॥ ५ ॥
राधास्वामी चरन सरन में लीना।
काल करम थक रहे मगरे[3]॥ ६ ॥

होली

॥ शब्द ४९ ॥

होली खेले सुरतिया सतगुरु संग ॥टेक॥
अबीर गुलाल थाल भर लाई।
भर भर डालत रंग ॥ १ ॥
सतसंगी मिल आरत[4] लाये।
गावें उमँग उमंग ॥ २ ॥
देख समा सब होत मगन मन।
फड़क रहे[5] अँग अंग ॥ ३ ॥
आनँद बरस रहा चहुँ दिस में।
दूर हुई अब सबही उचंग[6]॥ ४ ॥
राधास्वामी होय प्रसन्न मेहर से।
सबको लगाया अपने अंग ॥ ५ ॥

१—मजबूत। २—सारे। ३—रास्ते में। ४—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३।
५—फड़क रहे—हर्षित हो रहे। ६—मन की तरंगें।

॥ शब्द ५० ॥

होली खेले सुरत आज हंसन संग ॥टेक॥
घंटा संख मृदंग बजावत ।
चढ़ा प्रेम का रंग ॥ १ ॥
नैन नगर होय चढ़ी अधर में ।
तन से होय असंग[1] ॥ २ ॥
झलक जोत और उमँड़ घटा की ।
निरखी छोड़ तरंग ॥ ३ ॥
गगन जाय रँग माट[2] भराया ।
गुरू से खेली होय निसंक[3] ॥ ४ ॥
धरन गगन बिच धूम मची अब ।
भींज रही अँग अंग ॥ ५ ॥
सुरत अबीर भरत अब सुन में ।
फाग रचाया उमँग उमंग ॥ ६ ॥
सरन सम्हार चरन में पहुँची ।
धारा राधास्वामी रंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

मेरे उठी कलेजे पीर घनी[4] ॥टेक॥
बिन दरशन जियरा नित तरसे ।
चरन ओर रहे दृष्टि तनी[5] ॥ १ ॥

१—अलहदा । २—घड़ा । ३—निडर । ४—जोर की । ५—लगी ।

निस पुकार करूँ चरनन में ।
दरस देव मेरे पूरन धनी ॥ २ ॥
घट का पाट[1] खोलिये प्यारे ।
जल्दी करो हुई देर घनी[2] ॥ ३ ॥
जब लग दरस न पाऊँ घट में ।
तब लग नहिं मेरी बात बनी ॥ ४ ॥
हरख हुलास न आवे मन में ।
चिंता में रहे बुद्धि सनी[3] ॥ ५ ॥
अब तो मेहर करो राधास्वामी ।
चरनन की रहूँ सदा रिनी[4] ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

कोइ जागे सुरत सुन गुरु बचना ॥टेक॥
मोह नींद में सब जिव सोते ।
काम क्रोध सँग नित पचना ॥ १ ॥
इंद्री भोग लगे अति प्यारे ।
उनहीं में निस दिन खपना[5] ॥ २ ॥
कोइ कोइ जीव फड़क या जग से ।
संत चरन में करें लगना ॥ ३ ॥
देख ब्योहार असार जगत का ।
सहज सहज मन से तजना ॥ ४ ॥

१—परदा । २—बहुत । ३—फँसी । ४—ऋणी, कर्जदार । ५—परेशान होना ।

सतगुरु चरनन प्रीति बढ़ावत ।
  सतसँग में निस दिन जगना ॥ ५ ॥
मन और सुरत प्रेम रँग भीने[1] ।
  शब्द संग घट में रचना ॥ ६ ॥
सतगुरु ने जब दया बिचारी ।
  पहुँची जाय सुरत गगना ॥ ७ ॥
वहाँ से चली अधर में प्यारी ।
  राधास्वामी चरन जाय पकना[2] ॥ ८ ॥

चितावनी

॥ शब्द ५३ ॥

कोइ भागे सुरत तज यह संसार ॥टेक॥
या जग में पूरन सुख नाहीं ।
  खोज करो तुम निज घर बार ॥ १ ॥
निज घर है ब्रह्मांड के पारा ।
  तीन लोक में काल पसार ॥ २ ॥
माया संग दुखी रहें सब जिव ।
  कोई न जावे भौ के पार ॥ ३ ॥
सच्चा सुख है संत के देसा ।
  याते चलो संत की लार[3] ॥ ४ ॥

१—डूबे । २—रच जाना । ३—साथ ।

सतगुरु कर उन सेवा करना।

प्रीति प्रतीति चरन में धार ॥ ५ ॥

वे दयाल तोहि भेद बतावें।

सुरत शब्द का मारग सार ॥ ६ ॥

प्रीति सहित जब करो कमाई।

तब जावो भौसागर पार ॥ ७ ॥

राधास्वामी चरन सरन दृढ़ कर ले।

पावो उनकी मेहर अपार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

कोइ चेते सुरत जग देख असार[1] ॥ टेक ॥

बाहरमुख पूजा नहिं भावे[2]।

यामें जीव भरम रहे झार[3] ॥ १ ॥

करम धरम सब काल पसारा।

यामें नित बढ़ता अहंकार ॥ २ ॥

सच्चा सतसँग खोजत पाया।

वहाँ पाया सच्चा आधार ॥ ३ ॥

सुरत शब्द का भेद अपारा।

सो सतगुरु दीना कर प्यार ॥ ४ ॥

दया मेहर ले करत कमाई।

देखत घट में मोक्ष दुआर[4] ॥ ५ ॥

१—व्यर्थ, झूठा। २—अच्छा लगे। ३—सभी। ४—द्वार, दरवाजा।

रस पावत मन अति हरखाना ।
  मगन हुई स्रुत सुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीनदयाला ।
  बेग[1] उतारा भौजल पार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

कोइ जाने सुरत गुरु महिमा सार ॥ टेक ॥
सतसँग करे भाव से गुरु का ।
  तन मन से धर प्रेम पियार ॥ १ ॥
सेवा करके लाग[2] बढ़ावे ।
  भजन करे नित सुरत सम्हार ॥ २ ॥
निंद्या अस्तुति चित नहिं धारे ।
  संतन की यह जुगत[3] बिचार ॥ ३ ॥
इंद्री भोग तजत अब मन से ।
  करम भरम को दिया निकार ॥ ४ ॥
चित राखे गुरु चरनन माहीं ।
  निस दिन पियत अमी रस सार ॥ ५ ॥
तब सतगुरु परसन्न होय कर ।
  अंतर में दें पाट[4] उघाड़[5] ॥ ६ ॥
अद्भुत खेल लखे घट माहीं ।
  गुरु का अचरज रूप निहार ॥ ७ ॥

१—जल्दी । २—प्रेम । ३—व्यवहार की रीति । ४—परदे । ५—खोल ।

तब राधास्वामी की जाने महिमा।
चरनन पर जावे बलिहार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

आज मानो सुरत सतगुरू उपदेश ॥ टेक ॥
दीन अधीन रहो चरनन में।
त्यागो मन से माया लेश[1] ॥ १ ॥
उमँग सहित करो सतसँग आई।
सुनो चित्त दे देस[2] सँदेस ॥ २ ॥
सुरत लगाओ शब्द अधर से।
सहज तजत[3] चलो यह परदेस ॥ ३ ॥
यह तो देस काल का जानो।
निज घर तुम्हरा सतगुरू देस ॥ ४ ॥
सदा आनंद बिलास जहाँ वहाँ।
नहिं वहाँ दुख सुख काल कलेश ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया कुमत[4] को त्यागो।
सुमत धार धर हंसा भेस[5] ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

कोइ धारे गुरू के बचन सम्हार ॥ टेक ॥
मोह जाल में सब जग फँसिया।
परमारथ की सुद्ध बिसार[6] ॥ १ ॥

१—संबंध। २—अपने निज घर का। ३—छोड़ते। ४—ग़लत समझ। ५—वेश, रूप। ६—भुलाकर।

करम करें धर जग की आसा ।
  रोग सोग सँग रहें बीमार ॥ २ ॥
भरम रहे पिछली टेकन में ।
  संत बचन नहिं सुनें गँवार[1] ॥ ३ ॥
कोइ कोइ जीव होयँ बड़भागी ।
  संतन से करें प्रीति सम्हार ॥ ४ ॥
सुन सुन बचन चित्त में धारें ।
  दीन होय लें जुगती सार ॥ ५ ॥
हित चित से जब करें कमाई ।
  अंतर में देखें उजियार ॥ ६ ॥
कर परतीत अब प्रीति बढ़ावें ।
  चरन सरन पर तन मन वार ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर से जबही ।
  बेग[2] लगावें बेड़ा पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

कोइ सुनो अधर चढ़ गुरु के बैन[3] ॥ टेक ॥
संत चरन में रहे लौलीना ।
  घट में परखे[4] उनकी कहन ॥ १ ॥
शब्द कमाई करे प्रेम से ।
  चित दे समझे घट की सैन[5] ॥ २ ॥

१—मूर्ख । २—जल्दी । ३—बचन, शब्द । ४—पहचाने । ५—इशारा ।

मन और सुरत सिमट कर चालें ।
खोलें चढ़ कर तीसर नैन ॥ ३ ॥
सेत[1] उजास[2] लखे घट माहीं ।
धुन घंटा सुन पावे चैन ॥ ४ ॥
जोत फाड़ फिर सुन्न समावे ।
बंकनाल धस जावे पैन[3] ॥ ५ ॥
त्रिकुटी गढ़ अब चढ़ कर पहुँची ।
काल करम का छूटा दैन[4] ॥ ६ ॥
हरख सुनत अब धुन ओंकारा ।
भोर[5] हुआ और मिट गई रैन ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया पार पद पाया ।
सुरत लगी निज घर सुख लेन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

कोइ गावे गुरू की महिमा सार ॥ टेक ॥
दया धार गुरू जग में आये ।
किया जीव उपकार ॥ १ ॥
निज घर का उन भेद सुनाया ।
राधास्वामी धाम अगम के पार ॥ २ ॥
घर चालन की जुगत बताई ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ ३ ॥

१—सफ़ेद । २—प्रकाश । ३—तेज़ी से । ४—क़र्ज़ा । ५—प्रातःकाल ।

काल देश से जीव निकारा ।
काट दिया माया का जार[1] ॥ ४ ॥
करम भरम से लिया बचाई ।
चरन सरन दई किरपा धार ॥ ५ ॥
कोट जनम से भटका खाया ।
हुआ नहीं कभी जीव उबार ॥ ६ ॥
जब सतगुरु मोहि मिले भाग[2] से ।
तब ही गई भौसागर पार ॥ ७ ॥
छिन छिन शुकराना करूँ उनका ।
राधास्वामी प्यारे पतित उधार[3] ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६० ॥

आज आई सुरतिया दर्द भरी ॥ टेक ॥
जगत भोग से होय उदासा ।
त्रिय तापन[4] से अधिक डरी ॥ १ ॥
या जग में कहीं शांति न पाई ।
दुख सुख संसय अगिन जरी ॥ २ ॥
सत पद का कहीं भेद न मिलिया ।
सर्ब मतों में ढूँढ़ फिरी ॥ ३ ॥
खोजत मिले भाग से सतगुरु ।
सुन सुन बचन उन सरन पड़ी ॥ ४ ॥

१—जाल। २—खुशक़िस्मती। ३—पतित उधार—नीचों का उद्धार करने वाले। ४—त्रिय तापन—आध्यात्मिक, आधिदैविक व आधिभौतिक कष्ट।

सहज जुगत गुरु दीन बताई ।
मन की हुई अब डाल हरी ॥ ५ ॥
सुरत लगी अब चढ़कर धुन में ।
काल करम घर पड़ी मरी[1] ॥ ६ ॥
धावत गई सुन्न दस द्वारे ।
सुरत गगरिया प्रेम भरी ॥ ७ ॥
सतगुरु चरन परस सतपुर में ।
राधास्वामी से मिल आज तरी[2] ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

कोइ गहो गुरु की सरन सम्हार ॥ टेक ॥
बहु दिन बीते समझ सोच में ।
अब तो दूतन सँग तज डार ॥ १ ॥
इंद्रियन सँग रहा बहुत दिवाना[3] ।
मत भरमे अब उनकी लार[4] ॥ २ ॥
सतगुरु महिमा कहत सुनत नित ।
मन नहिं माने बड़ा गँवार ॥ ३ ॥
सर्ब समरथ राधास्वामी को कहता ।
हाज़िर नाज़िर[5] कुल करतार ॥ ४ ॥
बरतन[6] में यह समझ न धारे ।
भूले भरमे बारम्बार ॥ ५ ॥

१—पड़ी मरी—नाश हो गया । २—पार हो गई । ३—पागल । ४—साथ । ५—देखने वाला । ६—व्यवहार ।

औरों को गुन औगुन धरता[1] ।
　निज प्रेरक[2] की सुद्ध न धार ॥ ६ ॥
रूखा फीका होवत छिन में ।
　राधास्वामी मौज क्यों दई बिसार ॥ ७ ॥
समझ यही अब मन में धारो ।
　राधास्वामी हैं तेरे कुल दातार ॥ ८ ॥
सब घट में हैं वेही प्रेरक ।
　उन बिन और न कोइ दरबार ॥ ९ ॥
संत सतगुरू उनको जानो ।
　राधास्वामी गुरु हैं अगम अपार ॥ १० ॥
उन बिन और न कोई करता[3] ।
　उनकी रज़ा[4] में चलना यार ॥ ११ ॥
जो कुछ करें वही भल मानो ।
　मसलहत उनकी वही बिचार ॥ १२ ॥
काज करें तेरा वे हित[5] से ।
　काटें काल करम का जार ॥ १३ ॥
तन मन सुरत के वेही सहाई ।
　छिन छिन हैं तेरे वे रखवार ॥ १४ ॥
प्रीति करो उन चरनन गहिरी ।
　दीन ग़रीबी मन में धार ॥ १५ ॥

१—लगाता । २—प्रेरणा करने वाले मालिक । ३—कर्त्ता । ४—मर्ज़ी । ५—प्यार ।

राधास्वामी बल हिरदे में धारो ।
मन से और भरोस तज डार ॥ १६ ॥
निरबल नीच जान अपने को ।
राधास्वामी ओटा[1] गहो सम्हार ॥ १७ ॥
दया भाव बरतो जीवन से ।
मान ईरखा देव बिसार ॥ १८ ॥
इस बिध दास रहे जो रहनी ।
पावे राधास्वामी दया अपार ॥ १९ ॥
सुरत चढ़े छिन छिन ऊँचे को ।
शब्द शब्द पौड़ी[2] चढ़ पार ॥ २० ॥
राधास्वामी धाम पाय बिसरामा ।
मगन होय निज रूप निहार ॥ २१ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

आज आई सुरत हिये उमँग बढ़ाय ॥टेक॥
मन इंद्री को रोकत घट में ।
गुरु स्वरूप का ध्यान लगाय ॥ १ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत ।
घट में अद्भुत दर्शन पाय ॥ २ ॥
धुन झनकार सुनत मन सरसा[3] ।
हिये में प्रीति नवीन जगाय ॥ ३ ॥

१—शरण । २—सीढ़ी । ३—प्रसन्न हुआ ।

सतगुरु संग करत नित केला[१] ।
लीला देख अधिक हरखाय ॥ ४ ॥
गुरु दर्शन की महिमा भारी ।
अचरज सोभा बरनी न जाय ॥ ५ ॥
तन मन धन वारत चरनन पर ।
मस्त हुई निज आनँद पाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन पाय हुई निरभय ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

आज आई सुरत हिये भाव धार ॥टेक॥
सतसँगियन से हेल मेल कर ।
सतसँग करती चित्त सम्हार ॥ १ ॥
गुरु चरनन में प्रीति बढ़ावत ।
गुरु स्वरूप का ध्यान सम्हार ॥ २ ॥
शब्द सुनत घट में नभ द्वारे ।
मगन होत चढ़ गगन मँझार ॥ ३ ॥
ताल मृदंग बजे सारंगी ।
मुरली बीन सुनी झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला ।
मेहर करी पद दीना सार[२] ॥ ५ ॥

१—बिलास। २ - असली।

॥ शब्द ६४ ॥

कोइ धारो गुरू के चरन हिये[1] ॥ टेक ॥

जग में छाय रहा तम[2] चहुँ दिस ।
सब जिव सहते ताप त्रिये[3] ॥ १ ॥

निकसन की कोइ राह न पावें ।
सब जिव जाता है जम[4] लिये ॥ २ ॥

जिन पर दया हुई धुर घर की ।
वही धारें गुरु शब्द जिये ॥ ३ ॥

गुरु का सँग कर मन हुआ निरमल ।
रस पावत अभ्यास किये ॥ ४ ॥

प्रीति प्रतीति बढ़त चरनन पर ।
तन मन धन सब वार दिये ॥ ५ ॥

चरन पकड़ सुर्त चढ़त अधर में ।
मगन होत रस शब्द पिये ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया पार घर पहुँची ।
काल करम सब टार[5] दिये ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

आज आई सुरत हिये प्रेम जगाय ॥ टेक ॥

दरशन करत भूल गई सुध बुध ।
सुरत रही चरनन अटकाय ॥ १ ॥

१—हृदय मे । २—अंधकार । ३—त्रिय तापन—तीन ताप यानी आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक कष्ट । ४—काल । ५—हटा ।

मगन हुई सुन धुन झनकारी ।
दृष्टि गई रस रूप भुलाय ॥ २ ॥
ऐसी लीला निरखत निस दिन ।
सुरत और मन ऊँचे को धाय ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनी धुन दोई ।
गगन माँहि मिरदंग बजाय ॥ ४ ॥
सारँग मुरली अद्भुत बाजी ।
सतपुर में धुन बीन सुनाय ॥ ५ ॥
मेहर हुई कारज हुआ पूरा ।
राधास्वामी चरनन गई समाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ९९ ॥

आज भींजे सुरत गुरु प्रेम रंग ॥ टेक ॥
उमँग भरी आई सतगुरु चरना ।
बचन सुनत हुई आज निसंक[1] ॥ १ ॥
जग का मोह त्याग दिया मन से ।
दूत थके कर घट में जंग[2] ॥ २ ॥
भोगन से चित हुआ उदासा ।
मन इंद्री सूखे हुए तंग ॥ ३ ॥
गुरु दरशन का भाव बढ़त नित ।
और रही नहिं कोई उचंग[3] ॥ ४ ॥

१—निडर । २—लड़ाई । ३—मन की लहर ।

मन हुआ लीन शब्द रस पावत ।
सुरत उड़न लगी जैसे पतंग ॥ ५ ॥
सहसकँवल होय त्रिकुटी धाई ।
जहाँ गरजे गगन और बजे मृदंग ॥ ६ ॥
सुरत रँगीली चली ऊँचे को ।
छूट गया अब सबही कुसंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी प्रीतम मिले अधर में ।
लिपट रही सुत उमँग उमंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

कोइ करो प्रेम से गुरू का संग ॥ टेक ॥
मन से कपट और मान तियागो ।
प्रेमी जन का धारो ढंग ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति करो तुम ऐसी ।
जस माता सँग पुत्र निसंक[1] ॥ २ ॥
गुरू आज्ञा हित चित से मानो ।
सेवा करो तुम सहित उमंग ॥ ३ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ करना ।
राधास्वामी नाम बसे अँग अंग ॥ ४ ॥
मन रहे नित दर्शन रस माता[2] ।
सुरत भींज रहे शब्द के रंग ॥ ५ ॥

१—निडर । २—मतवाला ।

जग ब्योहार लगा अब काँचा[१] ।
छोड़ दिया अब नाम और नंग[२] ॥६॥
राधास्वामी दया दृष्टि से हेरा[३] ।
बिरोधी हो गये आपहि तंग[४] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

कोइ जोड़ो गुरू से नाता आय ॥टेक॥
मात पिता भाई सुत तिरिया[५] ।
इनके सँग मन रहा बँधाय ॥ १ ॥
नातेदार मित्र और बिरादरी ।
इनसे भी करी प्रीति बनाय ॥ २ ॥
पंडित बैद हकीम महाजन ।
इनसे भी हित[६] करता आय ॥ ३ ॥
संत साध और गुरु भक्तन से ।
भाव न लावे निंद्या गाय[७] ॥ ४ ॥
उनकी दया दृष्टि जो पावे ।
भौजल तर जिव घर को जाय ॥ ५ ॥
सब जीवन को चहिए ऐसा ।
जैसे बने तैसे मन समझाय ॥ ६ ॥
संत चरन में सरधा लावें ।
भाव से दरशन करें बनाय ॥ ७ ॥

१—कच्चा, झूठा। २—नाम और नंग—नेकनामी बदनामी। ३—देखा।
४—परेशान। ५—स्त्री। ६—प्रेम। ७—करता है।

वे हैं गुरु सतगुरू अचारज[1] ।
　जीव दया उन हृदय समाय ॥ ८ ॥
स्वारथ परमारथ कारज में ।
　दया मेहर से करें सहाय ॥ ९ ॥
जम से जीव को लेहि बचाई ।
　मेहर से दें सुख घर पहुँचाय ॥ १० ॥
याते चेतो समझो भाई ।
　सतगुरु चरनन सरधा लाय ॥ ११ ॥
राधास्वामी नाम सम्हारो ।
　दीन चित्त नित उन गुन गाय ॥ १२ ॥
दुनिया के कारज सब करते ।
　परमारथ की सुद्ध न लाय ॥ १३ ॥
यह ग़फ़लत बहु दुख दिखलावे ।
　फिर पछतावा काम न आय ॥ १४ ॥
याते अबही चेतो भाई ।
　जीव काज अपना करो आय ॥ १५ ॥
थोड़ी बहुत कुछ करो कमाई ।
　सरन पड़ो राधास्वामी आय ॥ १६ ॥
तब वे दया करें निज अपनी ।
　जीव को तेरे लेहिं बचाय ॥ १७ ॥

१—आचार्य ।

॥ शब्द ९९ ॥

कोइ करो गुरू संग हेत[1] सम्हार ॥टेक॥
साँचा मीत[2] गुरू को जानो।
कपट छोड़ कर उन से प्यार ॥ १ ॥
और सभी स्वारथ के मीता।
परमारथ का कोई न यार ॥ २ ॥
समझ समझ चलना इस जग में।
ठगियन से रहना हुशियार ॥ ३ ॥
उमँग सहित करो सतसँग गुरु का।
बचन सुनो और हिरदे धार ॥ ४ ॥
प्रीति प्रतीति धरो उन चरनन।
सुरत शब्द मारग लो सार ॥ ५ ॥
करो कमाई घट में निस दिन।
शब्द सुनो निरखो उजियार ॥ ६ ॥
या बिधि दिन दिन होत सफ़ाई।
सुरत चढ़े फिर घट के पार ॥ ७ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला।
अपनी दया से करें जीव उधार[3] ॥८॥

१–प्रेम। २–मित्र। ३–उद्धार।

॥ शब्द ७० ॥

आज हुई सुरत गुरु चरन अधीन ॥टेक॥
सतगुरु चरन ध्यान धर घट में।
मन और सुरत हुए दोउ लीन ॥ १ ॥
सहज सहज सुत चढ़त अधर में।
धुन रस गुरू मेहर कर दीन ॥ २ ॥
जगत भाव अब मन से त्यागा।
सुरत हुई गुरु चरनन दीन ॥ ३ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर धारी।
हारे काल करम गुन तीन ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन भक्ति हुई गाढ़ी[1]।
सुरत लगी अब जस जल मीन[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

आज आई सुरतिया उमँग जगाय ॥टेक॥
आरत[3] करन चहत सतगुरु की।
हिये में भाव और प्रेम बढ़ाय ॥ १ ॥
दर्शन करत हरख रही मन में।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ २ ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आये।
आनँद अधिक रहा बरसाय ॥ ३ ॥

१—गहरी। २—मछली। ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३।

हरख हरख राधास्वामी गुन गावें ।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाय ॥ ४ ॥
चहुँ दिस राधास्वामी होत पुकारा ।
पिता प्यारे पिया प्यारे सब मिल गाय ।५।
उमँग उमँग गुरु आरत गावें ।
धूम धाम कुछ बरनी न जाय ॥ ६ ॥
ऐसा समा बँधा इस औसर ।
हंस हंसनी रहे लुभाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दीनदयाल मेहर से ।
सब को दिया निज प्रेम अधिकाय ॥ ८ ॥
दिन दिन बढ़त प्रतीति चरन में ।
काल करम अब रहे मुरझाय ॥ ९ ॥
शब्द धार का भेद जना कर ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ १० ॥
दीन होय सुत लागी चरनन ।
राधास्वामी लिया निज गोद बिठाय ।११।

॥ शब्द ७२ ॥

जाग री मेरी प्यारी सुरतिया ।
गुरु चरनन में लाग री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥

भूल भरम में बहु दिन बीते।
अब उठ जग से भाग री॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥

दुर्लभ दर्शन मिले भाग से।
नैन कँवल गुरु ताक[1] री॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥

तिल अंतर सुर्त जोड़ अधर चढ़।
सुन ले अनहद राग[2] री॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥

सहसकँवल होय धाय गगन पर।
मारो काला नाग री॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥

सुन्न में जाय हुई अब निर्मल।
छूटी संगत काग[3] री॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥

राधास्वामी दीन दयाल मेहर से।
दीना तोहि सुहाग री॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

१—देख। २—संगीत, शब्द। ३—कौआ, मन।

॥ शब्द ७३ ॥

निज घर अपने चाल री।
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥

माया फैली जग में भारी।
जित[१] जावे तित[२] काल री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥

काल कर्म बहु फंद लगाये।
चहुँ दिस फैला जाल री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥

निकसन चाहे तो अबही निकसे।
चलो गुरू के नाल[३] री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥

कोई मीत[४] नहीं है तेरा।
तजो मोह धन माल री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥

प्रीति प्रतीति धरो गुरु चरनन।
वे काटें दुख साल[५] री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥

१—जिधर। २—उधर। ३—साथ। ४—मित्र। ५—कष्ट।

सुरत शब्द मारग ले चालो ।
राधास्वामी नाम हिये पाल[1] री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

खेल गुरू सँग आज री ।
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥
उमँग सहित आओ चरनन में ।
भक्ति भाव ले साज[2] री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥
दिन दिन हिये में प्रेम बढ़ावो ।
छोड़ो जग का पाज[3] री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पर धावो ।
तख़्त बैठ कर राज री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥
सुन्न में हरख मिलो हंसन से ।
मंगल गा और नाच री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥

१—बसाओ । २—सामान । ३—ढोंग ।

सतगुरू चरन जाय लिपटानी ।
पाया भक्ती दाज[1] री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥
राधास्वामी अंग लगाया मेहर से ।
सिर पर राखा ताज री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

करो गुरू सँग प्यार री ।
मेरी भोली सुरतिया ॥ टेक ॥
माया सँग जग माहि फँसानी ।
तीन[2] पाँच[3] हुए यार री ॥
मेरी भोली सुरतिया ॥ १ ॥
भोग दिखाय लुभाया तुझ को ।
काल हुआ बरियार[4] री ॥
मेरी भोली सुरतिया ॥ २ ॥
होय हुशियार करो सतसंगत ।
बचन गुरू हिये धार री ॥
मेरी भोली सुरतिया ॥ ३ ॥

१—दान । २—तीन गुन । ३—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार । ४—जबरदस्त ।

गुरु से पावो दात[1] प्रेम की ।

चरनन पर बलिहार री ॥

मेरी भोली सुरतिया ॥ ४ ॥

शब्द कमाई करो उमँग से ।

घट में देख बहार री ॥

मेरी भोली सुरतिया ॥ ५ ॥

धुन की डोरी पकड़ अधर चढ़ ।

लखो जाय पद सार[2] री ॥

मेरी भोली सुरतिया ॥ ६ ॥

दया मेहर ले आगे चालो ।

राधास्वामी चरन निहार री ॥

मेरी भोली सुरतिया ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७६ ॥

आवो गुरु दरबार री ।

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥

जगत अगिन में क्यों तू जलती ।

न्हावो सीतल धार री ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥

१—बख़्शिश । २—असली ।

सतसँग कर गुरु का हित चित से ।
जग भय भाव बिसार री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥
बिरह अनुराग धार हिये अंतर ।
तन मन चरनन वार री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥
नाम दान सतगुरु से लेकर ।
करनी करो सम्हार री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥
बिमल प्रकाश लखो घट अंतर ।
सुन अनहद झनकार री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार हिये अपने ।
कर ले जीव उपकार री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ बचन ११ ॥

प्रेम बहार–भाग पहला

बहार

॥ शब्द १ ॥

चरन गुरु दिन दिन बढ़ती प्रीत ॥टेक॥
समझ गुरु गत मत अगम अपार ।
धार रही मन में दृढ़ परतीत ॥ १ ॥

गुरु छबि निरख हुआ मन मायल[1] ।
बचन सुनत नित हरखत चीत[2] ॥ २ ॥
उमँग उमँग सेवत गुरु चरना ।
भाव सहित पावत गुरु सीत[3] ॥ ३ ॥
दया मेहर गुरु छिन छिन निरखत ।
दृढ़ कर चरन सरन अब लीत[4] ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति धारा अब जागी ।
त्याग दई मनमुखता[5] रीत ॥ ५ ॥
गुरु को जाना अब सच यारा ।
जग में नहिं कोइ सच्चा मीत ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन अधारी ।
निज घर चाली भौजल जीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

दरस गुरु हियरे उठत उमंग ॥टेक॥
बिकल मन नहिं पावत सुख चैन ।
उठावत छिन छिन नई उचंग ॥ १ ॥
तोड़ जग जाल छोड़ ब्योहार ।
करन चाहे कोइ दिन गुरु का संग ॥ २ ॥
तड़प रही निस दिन पिया के बियोग[6] ।
काल नित करत भजन में भंग[7] ॥ ३ ॥

१—मोहित । २—चित्त । ३—प्रसाद । ४—ली । ५—मन के कहने में चलने की । ६—बिरह । ७—विघ्न ।

लहर जिय में उठती हर दम ।
गुरू से मिल धारूँ उन रंग ॥ ४ ॥
करो प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय ।
बसाओ प्रेम मेरे अँग अंग ॥ ५ ॥
मोह जग मोंहि न ब्यापे आय ।
सिखाओ ऐसा भक्ती ढंग ॥ ६ ॥
भींज रहूँ प्रेम रँग सारी ।
सुरत मेरी उड़े गगन जस चंग[1] ॥ ७ ॥
उमँग कर राधास्वामी बल हिये धार ।
छोड़ देउँ जग का नाम और नंग[2] ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मान मद त्याग करो गुरु संग ॥ टेक ॥
जब लग सजनी मान न छोड़ो ।
तब लग रहो तुम तंग ॥ १ ॥
कर्म भर्म जब लग नहिं छूटे ।
नहिं धारो गुरु रंग ॥ २ ॥
बैर ईरषा नित्त सतावे ।
करत रहो तुम सब से जंग[3] ॥ ३ ॥
याते कहना मान पियारी ।
सीखो भक्ती ढंग ॥ ४ ॥

१—पतंग । २—नाम और नंग—नेकनामी बदनामी । ३—लड़ाई ।

दीन होय गुरु सरनी आओ।
चित से चेत करो सतसंग ॥ ५ ॥
गुरु भक्ती की रीत सम्हालो।
धुन में सुरत लगाओ उमंग ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करो अस कोइ दिन।
प्रेम बसे तुम्हरे अँग अंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें।
होयँ करम सब भंग[1] ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सरन गुरु गहो हिये धर प्यार ॥ टेक ॥
सतसँग करो नित्त तुम आई।
बचन गुरू सुनो होय हुशियार ॥ १ ॥
मारग का ले भेद गुरू से।
शब्द सुनो तुम सुरत सम्हार ॥ २ ॥
गुरु का ध्यान धरो तुम घट में।
परखत चलो मेहर की धार ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ाओ दिन दिन।
भोग बासना देव बिसार ॥ ४ ॥
मन इंद्री का संग न करना।
यह भरमावें जग की लार[2] ॥ ५ ॥

१—नाश। २—साथ।

मोह जाल में फँसो न भाई ।
गुरुमुख अंग सदा रहो धार ॥ ६ ॥
सर्व समरथ राधास्वामी प्यारे ।
काज करें तेरा दया बिचार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

त्याग चल सजनी माया देस ॥ टेक ॥
तीन लोक में काल बियापा[1] ।
सब जिव भोगें करम कलेश ॥ १ ॥
निकसन की कोइ राह न पावें ।
छोड़ न सकते माया लेस[2] ॥ २ ॥
याते खोज करो सतगुरु का ।
बिरथा काहे बितावो बैस[3] ॥ ३ ॥
सतसँग कर उन जुगत कमावो ।
सुरत शब्द का ले उपदेश ॥ ४ ॥
मेहर दया सतगुरु की सँग ले ।
सुरत शब्द में करो प्रवेश ॥ ५ ॥
धर परतीत उन सरन सम्हालो ।
काल करम की जाय न पेश ॥ ६ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हावो ।
सुरत धरे तब हंसा भेस ॥ ७ ॥

१—व्यापक है और प्रभाव जमाए हुए है । २—संबंध । ३—उम्र ।

सतपुर जाय काज हुआ पूरन ।
राधास्वामी को अब करूँ आदेश[1] ॥८॥

॥ शब्द ६ ॥

पकड़ गुरु चरन चलो भौ पार ॥ टेक ॥
यह भौसागर काल अस्थाना ।
माया की बहे परबल धार ॥ १ ॥
करम तरंग उठावत छिन छिन ।
भोग रोग सँग जीव बीमार ॥ २ ॥
याते कहूँ सुनाय सबन को ।
मत भरमो तुम जग की लार[2] ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करो हित चित से ।
जो चाहो सच्चा उद्धार ॥ ४ ॥
दीन होय ले गुरु उपदेशा ।
शब्द सुनो तुम सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
सतगुरु रूप ध्यान धर हिये में ।
राधास्वामी नाम सुमिर हर बार ॥ ६ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर मन में ।
काटो काल करम का जार[3] ॥ ७ ॥
प्रीति सहित अस करो कमाई ।
राधास्वामी दें तोहि पार उतार ॥८॥

१—प्रणाम । २—साथ । ३—जाल ।

॥ शब्द ७ ॥

डगर[1] मेरी रोक रहा मन जार[2] ॥टेक॥

इंद्रियन सँग यह हुआ दिवाना[3] ।
भरम रहा भोगन की लार[4] ॥ १ ॥

नित नई तरँग उठावत छिन छिन ।
जग में बहावत सूरत धार ॥ २ ॥

समझ बूझ कुछ चित नहिं धारे ।
ढीठ[5] हुआ मन निपट[6] गँवार ॥ ३ ॥

मेरी कहन नेक नहिं माने ।
सरन गहूँ सतगुरु दरबार ॥ ४ ॥

जो निज मेहर करें गुरु अपनी ।
तब यह मन हो जावे यार ॥ ५ ॥

परमारथ की रीत समझ कर ।
नित्त कमावे उसकी कार[7] ॥ ६ ॥

उलट जगत से पलटे घट में ।
मगन होय सुन धुन झनकार ॥ ७ ॥

तजत पिंड रस पियत अधर में ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ ८ ॥

१—रास्ता । २—धोखेबाज़ । ३—पागल । ४—साथ । ५—धृष्ट, लापरवाह । ६—बिलकुल ७—काररवाई ।

॥ शब्द ८ ॥

लिपट गुरु चरन प्रेम सँग आज ॥टेक॥
उमँग उमँग सतसँग कर उनका ।
भक्ति भाव का लेकर साज[1] ॥ १ ॥
बिरह अनुराग छाय रहा घट में ।
छोड़ दई कुल जग की लाज ॥ २ ॥
दर्शन कर गुरु नैन कँवल तक ।
धुन सुन जाय सुरत नभ भाज[2] ॥ ३ ॥
सेवा करत बढ़त हिये प्रीती ।
त्रिकुटी चढ़ भोगे सुर्त राज ॥ ४ ॥
करत बिलास बिमल हंसन सँग ।
मन माया का छोड़ा पाज[3] ॥ ५ ॥
भँवरगुफा पहुँची गुरु लारा ।
सोहँग शब्द रहा जहाँ गाज ॥ ६ ॥
सत्तनाम सतपुरुष रूप लख ।
प्रेम भक्ति का पाया दाज[4] ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम गई सुर्त सज के ।
आज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ८ ॥

१—सामान । २—दौड़कर । ३—बनावटी व झूठा सामान । ४—दान ।

॥ शब्द ९ ॥

जगत तोहि क्यों लागा प्यारा ॥ टेक ॥

निज घर भूल भरम रही जग में ।
करम करत धारत भारा ॥ १ ॥

मन इंद्रियन सँग यारी ठानी ।
दुख भोगत भोगन लारा[1] ॥ २ ॥

निकसन की कोइ जुगत न जानी ।
सतसँग नहिं लागा प्यारा ॥ ३ ॥

अब तो चेत समझ तू हे मन ।
सतगुरु बचन हिये धारा ॥ ४ ॥

दीन होय गुरु चरन गहो अब ।
सुरत शब्द मारग धारा ॥ ५ ॥

नित अभ्यास करो हित चित से ।
जग से होय छिन छिन न्यारा ॥ ६ ॥

राधास्वामी सरन धार दृढ़ हिये से ।
तुरत करें भौजल पारा ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

चरन गह[2] जग से हुई न्यारी ॥ टेक ॥

उमँग सहित गुरु सन्मुख आई ।
बचन सुनत हिये गुलज़ारी ॥ १ ॥

१—साथ । २—पकड़ कर ।

दर्शन करत फूल रही मन में।
ध्यान धरत खिली फुलवारी ॥ २ ॥
मगन हुई ले शब्द उपदेशा।
सुनत रही घट झनकारी ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त अब छिन छिन।
तन मन धन गुरू पै वारी ॥ ४ ॥
शब्द कमाई करत उमँग से।
चरन सरन गुरू हिये धारी ॥ ५ ॥
नित्त नवीन[1] बिलास निरख घट।
जग भय भाव तजत सारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया बढ़त नित घट में।
सुरत गई भौजल पारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

चरन गुरू क्यों नहिं धारे प्रीत ॥ टेक ॥
होय अनजान फँसा जग माहीं।
मन माया की धारी रीत[2] ॥ १ ॥
दुख सुख में भरमत रहे निस दिन।
काल करम की ऐसी नीत[3] ॥ २ ॥
ताते पयारे मैं समझाऊँ।
सतसँग बचन सुनो धर चीत[4] ॥ ३ ॥

१—नया। २—ढंग। ३—हिकमत। ४—चित्त। धर चीत—ध्यान लगा कर।

गुरु चरनन में लाग[1] बढ़ावो ।
जुगत कमावो धर परतीत ॥ ४ ॥
करम काट निज घर पहुँचावें ।
शब्द सुनावें अगम अजीत[2] ॥ ५ ॥
मन माया से पीछा छूटे ।
सतगुरु चरनन रहो मिलीत[3] ॥ ६ ॥
सोता भाग बड़ा अब जागा ।
मिल गया राधास्वामी धाम पुनीत[4] ॥७॥

॥ शब्द १२ ॥

चेत कर क्यों न चलो गुरु साथ ॥ टेक ॥
मन माया सँग रहे बँधानी ।
भोगन में अति कर दुख पात ॥ १ ॥
जगत बासना तपन[5] उठावत ।
कर्मन में रहे नित भरमात ॥ २ ॥
जनम मरन का फेर[6] न छूटे ।
चौरासी में ग़ोते खात ॥ ३ ॥
सतगुरु बचन सुनो चित देकर ।
प्रीति सहित उन जुगत[7] कमात ॥ ४ ॥
रस पावे घट में कोइ दिन में ।
धीरे धीरे लगन[8] बढ़ात ॥ ५ ॥

१—प्रेम । २—सब पर फ़ायक़ । ३—मिले । ४—पवित्र । ५—जलन । ६—चक्कर । ७—अभ्यास । ८—प्रेम ।

मन और सुरत चेत कर चालें ।
धुन डोरी गह[1] अधर चढ़ात ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
सरन धार उन चरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सजन प्यारे मन की कहन न मान ॥ टेक ॥
यह जग में तोहि बहु भरमावे ।
गुरू भक्ती में करता हान[2] ॥ १ ॥
डाँवाँडोल[3] रखे तेरे चित को ।
दुख सुख चिन्ता संग भुलान ॥ २ ॥
कारज मात्र रखो जग आसा ।
मान ईरषा तजो निदान ॥ ३ ॥
गहिरी प्रीति करो गुरू चरनन ।
सुरत शब्द में नित्त लगान ॥ ४ ॥
गुरू का भय और भाव[4] बसावो ।
गुरू स्वरूप का धारो ध्यान ॥ ५ ॥
सहज सहज तब मन बस आवे ।
दीन ग़रीबी चित्त बसान ॥ ६ ॥
सुरत रँगीली प्रेम सिंगारी ।
चढ़े अधर करे अमृत पान ॥ ७ ॥

१—पकड़ कर । २—हानि, नुक़सान । ३—अस्थिर । ४—विश्वास ।

राधास्वामी मेहर करें फिर अपनी ।
चरनन में दें ठौर ठिकान[१] ॥ ८ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत प्यारी जग में क्यों अटकी ॥टेक॥
यह तो देस तुम्हारा नाहीं ।
भोगन संग यहाँ भटकी ॥ १ ॥
मन इंद्री का संग तियागो ।
सुरत करो अब सुन तट[२] की ॥ २ ॥
गुरू दयाल से ले उपदेशा ।
धुन सँग सुरत रहे लटकी[३] ॥ ३ ॥
झाँको चढ़ कर गगन अटारी ।
करमन की फूटे मटकी[४] ॥ ४ ॥
गुरू पद परस[५] मगन होय चित में ।
वहाँ से सुरत अधर सटकी[६] ॥ ५ ॥
गुरू दयाल बिन कौन करावे ।
यह करनी अब निज घट की ॥ ६ ॥
काल करम से खूँट[७] छुड़ाया ।
माया ममता दई पटकी ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाई ।
ख़बर जनाई मोहि धुर पट[८] की । ८ ।

१—ठौर ठिकान—जगह । २—सुन तट—सुन्न स्थान की हद । ३—लगी हुई । ४—घड़ा । ५—पहुँच कर । ६—गई । ७—संबंध । ८—मालिक का सिंहासन ।

॥ शब्द १५ ॥

सजन प्यारे जड़ सँग गाँठी खोल ॥टेक॥
दीन होय सतसँग कर गुरु का ।
लौ[1] लगाय सुन घट में बोल[2] ॥ १ ॥
मन और सुरत खिलें धुन सुन कर ।
सुफल होय नर देह अमोल ॥ २ ॥
दिन दिन घट में आनँद पावे ।
माया की छूटे सब चौल[3] ॥ ३ ॥
तब सतसँग की महिमा जाने ।
सतगुरु बचन सही कर तोल[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन धार सुत प्यारी ।
चढ़ कर झूले गगन हिंडोल ॥ ५ ॥
अधर चढ़त सतगुरु गुन गावत ।
पाय गई सत शब्द अतोल ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मिला पद सारा ।
अकह अपार अनाम अडोल[5] ॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सुरत प्यारी मन सँग क्यों भरमाय ॥टेक॥
कर्म धर्म और तीरथ मन्दिर ।
काल दिया अस जाल बिछाय ॥ १ ॥

१—लगन। २—शब्द। ३—काररवाई। ४—समझ। ५—एक सा रहने वाला।

इस में जीव घेर लिये सारे ।
निज घर की कोइ राह न पाय ॥ २ ॥
मन मूरख इंद्रियन सँग बंधा ।
भोगन में रहे नित्त भुलाय ॥ ३ ॥
छोड़ भोग और तोड़ जाल को ।
सतसँग सतगुरु करो बनाय ॥ ४ ॥
बचन सुनो उन देकर काना ।
सुरत शब्द की कार कमाय ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति करो उन चरनन ।
सेवा करो नित भाव[1] जगाय ॥ ६ ॥
मेहर करें सतगुरु जब अपनी ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥
काल कर्म का फंदा काटें ।
रस पावे सूरत घर जाय ॥ ८ ॥
जो यह काम करो नहिं अबही ।
दुख भोगो फिर फिर पछताय ॥ ९ ॥
ताते अब ही कहना मानो ।
सतगुरु संग चलो घर धाय[2] ॥ १० ॥
राधास्वामी सरन गहो हित चित से ।
मेहर से दें सब काज बनाय ॥ ११ ॥

१—श्रद्धा । २—दौड़ कर ।

॥ शब्द १७ ॥

सुरत प्यारी मन से यारी तोड़ ॥टेक॥
इसकी प्रीति बहुत दुख देवे ।
जैसे बने इसका सँग छोड़ ॥ १ ॥
भोगन में यह नित भरमावे ।
काल करम का बाढ़े ज़ोर ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो उन सतसँग ।
दीन होय चित चरनन जोड़ ॥ ३ ॥
भाव सहित ले शब्द उपदेशा ।
घट में सुन नित अनहद घोर[1] ॥ ४ ॥
प्रीति सहित गुरु रूप धियावो ।
भागें घट के सबही चोर ॥ ५ ॥
दर्शन पाय मगन होय मन में ।
उमँग चढ़े सुर्त घट में दौड़ ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर दृष्टि करें जबही ।
छूटे छिन में मोर और तोर ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरत प्यारी झाँको घट में आय ॥टेक॥
नैनन माहिं डगर[2] निज घर को ।
धुन सँग चालो सुरत लगाय ॥ १ ॥

१—शब्द । २—रास्ता ।

भर्म रही जुग जुग बाहरमुख ।
तन मन सँग नित दुख सुख पाय ॥ २ ॥
अब के चेत लखो[1] घट भेदा ।
नरदेही को सुफल कराय ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करो धर प्यारा ।
शब्द जुगत ले नित्त कमाय ॥ ४ ॥
जैसे बने तैसे सरनी आवो ।
राधास्वामी दें तेरा भाग जगाय ॥ ५ ॥
मन और सुरत चढ़ें धुन सुन कर ।
घट में अद्भुत खेल दिखाय ॥ ६ ॥
काल हद्द से परे चढ़ा कर ।
राधास्वामी दें निज घर पहुँचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

अधर चढ़ सुनो शब्द की गाज[2] ॥ टेक ॥
शब्द धार घट में नित जारी ।
उमँग सहित सुनो चित दे आज ॥ १ ॥
बिन गुरु घट में राह न पावे ।
मिल उन से कर अपना काज ॥ २ ॥
सतसँग कर सेवा कर उनकी ।
भक्ति भाव का लेकर साज ॥ ३ ॥

१—देखो । २—गरज ।

दीन होय रल मिल[1] सतसँग में ।
साधन[2] का जहाँ जुड़ा समाज ॥ ४ ॥
कर्म भर्म तज कर गुरु आरत[3] ।
जग का छोड़ो भय और लाज ॥ ५ ॥
दया करें गुरु सुरत चढ़ावें ।
प्रेम भक्ति का दे कर दाज[4] ॥ ६ ॥
काल देश तज सतपुर जावे ।
अगम लोक चढ़ भोगे राज ॥ ७ ॥
राधास्वामी दरस पाय हरखानी ।
दया मेहर का पहिरा ताज ॥ ८ ॥

॥ शब्द २० ॥

सत्त पद खोज मिलो घट आय ॥ टेक ॥
माया ने जो रचना कीन्ही ।
उपजे बिनसे[5] थिर[6] न रहाय ॥ १ ॥
सतपद है महासुन्न के पारा ।
संतन किया जहाँ बासा जाय ॥ २ ॥
सतपुर और राधास्वामी धामा ।
महिमा उनकी कही न जाय ॥ ३ ॥
यह घट भेद मिले सतगुरु से ।
सतसँग कर उन सरन समाय ॥ ४ ॥

१—रल मिल—घुल मिल जा । २—साधन करने वालों । ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ । ४—दान । ५—नाश होती है । ६—स्थित, क़ायम ।

दीन चित्त होय ले उपदेशा ।

शब्द जुगत रहो नित्त कमाय ॥ ५ ॥

दया मेहर से सुरत चढ़ावें ।

भौसागर के पार पराय ॥ ६ ॥

राधास्वामी धाम बसे जाय प्यारी ।

अमर होय परम आनँद पाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अधर[1] चढ़ परख शब्द की धार ॥ टेक ॥

गुरु दयाल तोहि मरम[2] लखावें ।

बचन सुनो उन हिये धर प्यार ॥ १ ॥

बिरह अंग ले कर अभ्यासा ।

खोज करो तुम घट धुन सार[3] ॥ २ ॥

गुरु सरूप को अगुआ[4] करके ।

धुन सुन चलो कंज के पार ॥ ३ ॥

सहसकँवल में घंटा बाजे ।

गगन माहिं सुन धुन ओंकार ॥ ४ ॥

सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न पर ।

भँवरगुफा मुरली झनकार ॥ ५ ॥

सत्त शब्द का धर कर ध्याना ।

सत्तलोक धुन बीन सम्हार ॥ ६ ॥

१—अंतर में । २—भेद । ३—असली । ४—रास्ता दिखलाने वाला ।

अलख अगम के पार निशाना ।
राधास्वामी प्यारे का कर दीदार[1] ॥७॥

॥ शब्द २२ ॥

दीन दिल आई सुरत गुरु पास ॥टेक॥
दरसन करत फूल रही मन में ।
बचन सुनत हिये होत हुलास ॥ १ ॥
सतसँग करत प्रीति नई जागी ।
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वास ॥ २ ॥
सुरत शब्द का भेद अमोला ।
पाय दया गुरु हुई निज दास ॥ ३ ॥
मन और सुरत लगे अब घट में ।
धुन सँग करते नित्त बिलास ॥ ४ ॥
सतगुरु महिमा कस कहुँ गाई ।
दूर किये सब जम[2] के त्रास[3] ॥ ५ ॥
करम भरम और संसय सोगा[4] ।
काट दिये दिया चरनन बास ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल परम गुरु दाता ।
पूरन करी मेरे मन की आस ॥ ७ ॥

१—दर्शन । २—काल । ३—भय । ४—शोक, दुख ।

॥ शब्द २३ ॥

सरन गुरु आई सुरत धर प्यार ॥टेक॥

दुखित होय जग से अलसानी ।
छोड़ दई मन जम की कार[1] ॥ १ ॥

जग जीवन सँग प्रीति घटावत ।
गुरु को जाना अब सच यार ॥ २ ॥

प्रेमी जन सँग हेल मेल कर ।
सतसँग गुरु का करत सम्हार ॥ ३ ॥

बचन सुनत हिये प्यार बढ़ावत ।
सेव करत मन तज अहंकार ॥ ४ ॥

प्रीति सहित ध्यावत गुरु रूपा ।
उमँग सहित सुनती धुन सार ॥ ५ ॥

घट में निरख नवीन बिलासा ।
परख रही गुरु मेहर अपार ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन परस[2] घर आई ।
गावत उन गुन बारम्बार ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

भाव धर[3] करत सुरत गुरु सेव ॥ टेक ॥

या जग में कोई मीत[4] न साँचा ।
याते सरन गही गुरु देव ॥ १ ॥

१—काररवाई । २—छू कर । ३—भाव धर—श्रद्धा के साथ । ४—मित्र ।

दूर करें गुरु अपनी मेहर से ।
संशे भरम और अहंमेव[1] ॥ २ ॥
मैं अति दीन नीच करमन की ।
हे गुरु चरन सरन मोहि देव ॥ ३ ॥
भौजल धार बहे अति गहिरी ।
तुम बिन को मेरी नइया खेव[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल बचाय काल से ।
मोहि निरबल अपना कर लेव ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

उमँग कर धरत सुरत गुरु ध्यान ॥टेक॥
गुरु छबि देख मगन हुई मन में ।
निरख रही उन अचरज शान ॥ १ ॥
प्रीति बढ़त छिन छिन चरनन में ।
त्याग दिये सब मन के मान ॥ २ ॥
नित नई सेव करत अब गुरु की ।
चरनन पर जाती कुरबान[3] ॥ ३ ॥
गुरु दर्शन पर बल बल जावत ।
छिन छिन वारत[4] तन मन प्रान ॥ ४ ॥
राधास्वामी २ गावत हरदम ।
प्रेम भक्ति का पाया दान ॥ ५ ॥

१—अहंकार । २—खेवे, पार लगावे । ३—निछावर । ४—निछावर करती ।

॥ शब्द २६ ॥

अधर चढ़ सुनी सरस[1] धुन कान ॥ टेक ॥

मन और सुरत साध[2] कर तन में ।
सम[3] चित होय धरा गुरु ध्यान ॥ १ ॥

मोह राग जग भोग निकारा ।
तोड़ दिये सब मन के मान ॥ २ ॥

घंटा संख रहे बज नभ में ।
काल पुरुष का जहाँ दीवान[4] ॥ ३ ॥

जगमग होत जोत उजियारा ।
तिस पर सूरज लाल दिखान ॥ ४ ॥

सुन्न में जाय धोये सब कल[5] मल ।
मुरली धुन सुनी गुफा ठिकान ॥ ५ ॥

वहाँ से भी फिर आगे चाली ।
सतपुर सुनी बीन धुन आन ॥ ६ ॥

सत्तपुरुष की आज्ञा लेकर ।
राधास्वामी धाम बसान ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

आज घिर आये बादल कारे[6] ।
गरज गरज घन[7] गगन पुकारे ॥ १ ॥

१—रसीली । २—रोक । ३—शांत । ४—दरबार । ५—काल के । ६—काले । ७—बादल ।

रिमझिम बरसत बूँद अमी[1] की ।
बिजली चमक घट नैन निहारे ॥ २ ॥
चहुँ दिस बरखा होवत भारी ।
भींज रही सुत सुन झनकारे ॥ ३ ॥
उमँग उमँग सुत चढ़त अधर में ।
निरख रही घट जोत उजारे ॥ ४ ॥
घंटा संख धूम अब डाली ।
बंकनाल धस हो गई पारे ॥ ५ ॥
गुरु दरशन कर अति हरखानी ।
पहुँची जाय सुन्न दस द्वारे ॥ ६ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस कर ।
राधास्वामी अचरज दरस निहारे ॥७॥

॥ शब्द २८ ॥

आज बरसत रिमझिम मेघा[2] कारे[3] ॥टेक॥
कोयल मोर बोल रहे बन में ।
पपिहा टेरत पिउ पिउ प्यारे ॥ १ ॥
सुन सुन बोल बिकल सुत बिरहिन ।
तड़पत बिन पिया दरस अधारे ॥ २ ॥
पिया पधारे बसें मेरे देस अधर में ।
मैं तो पड़ी मृत्यु देस उजाड़े ॥ ३ ॥

१—अमृत । २—बादल । ३—काले ।

कासे कहूँ बिपत मैं जिय की ।
बिन गुरु कौन करे निरवारे[1] ॥ ४ ॥
संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ।
आन मिले मोहिं लीन मिला रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

सुरत प्यारी झूलत आज हिंडोल ॥टेक॥
सतगुरु प्रीतम आप झुलावें ।
गरज गगन अनहद धुन बोल ॥ १ ॥
सखी सहेली जुड़ मिल गावें ।
राधास्वामी महिमा अगम अतोल ॥२॥
अद्भुत सोभा राधास्वामी धारी ।
सकल सभा रहीं देख अडोल[2] ॥ ३ ॥
मैं बड़भाग कहूँ क्या अपना ।
राधास्वामी कीनी मेरी सुरत अनमोल ॥४॥
राधास्वामी आरत[3] सब मिल धारी ।
सुफल हुई नर[4] देह अमोल ॥ ५ ॥
राधास्वामी गत मत अति कर भारी ।
कौन कहे उन महिमा खोल ॥ ६ ॥

१—छुटकारा । २—आश्चर्य चकित । ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।
४—मनुष्य ।

॥ बचन ११ ॥

प्रेम बहार–भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

सुरत मेरी प्यारे के चरनन पड़ी ॥ टेक ॥
जगे भाग गुरु सन्मुख आई ।
त्रिय तापन[1] से अधिक डरी ॥ १ ॥
राधास्वामी छबि निरखत मन मोहा ।
सेवा में रहूँ नित्त खड़ी ॥ २ ॥
प्रीति बढ़त छिन छिन अब घट में ।
माया ममता सकल जरी[2] ॥ ३ ॥
धुन रस पाय हुई मतवाली ।
शब्दन की अब लगी झड़ी[3] ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमा कस कह गाऊँ ।
चरन सरन गह आज तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रीति गुरु चरनन काहे न लाय ॥ टेक ॥
मन माया के सँग लिपटाना ।
भोगन में रहा चित्त लुभाय ॥ १ ॥
नर देही की सार न जानी ।
फिर औसर ऐसा नहिं पाय ॥ २ ॥

१—त्रिय ताप—आध्यात्मिक, अधिदैविक और आधिभौतिक कष्ट ।
२—नाश हो गई । ३—वर्षा ।

याते अबही समझो चेतो ।
साध संग करो मन हुलसाय[1] ॥ ३ ॥
शब्द भेद ले करो कमाई ।
धुन सँग मन और सुरत चढ़ाय ॥ ४ ॥
दिन दिन आनँद घट में पावो ।
लो अस अपना भाग जगाय ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीनदयाल कृपाला ।
इक दिन दें तोहि पार लगाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दरस गुरु मनुआँ क्यों न खिले ॥ टेक ॥
धुन हर दम तेरे घट में होती ।
भेद पाय घर क्यों न चले ॥ १ ॥
प्रीति बिना कुछ काज न होई ।
गुरु सतसँग में क्यों न रले[2] ॥ २ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
गुरु सेवा में क्यों न पिले[3] ॥ ३ ॥
निरमल निश्चल चित होय तेरा ।
शब्द संग घट घाट खुले ॥ ४ ॥
चरन सरन गह राधास्वामी ध्यावो ।
मेहर होय निज धाम मिले ॥ ५ ॥

१—उमँग कर। २—अच्छी तरह से मिले। ३—लगे।

॥ शब्द ४ ॥

आज मेरे मनुआँ गुरु सँग चल ॥ टेक ॥
उमँग सहित दरशन कर गुरु का ।
दीन होय सतसँग में रल[1] ॥ १ ॥
गुरु स्वरूप का ध्यान सम्हारो ।
राधास्वामी नाम जपो पल पल ॥ २ ॥
मन बैरी से जीतो बाज़ी ।
धार हिये में गुरु का बल ॥ ३ ॥
काल करम की पेश न जावे ।
मार निकारो माया दल[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावें ।
दूर करावें सब कलमल[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

चरन गुरु तन मन क्यों नहिं देत ।टेक।
प्रीति लाय नित करो साध सँग ।
गुरु के बचन सुनो कर हेत[4] ॥ १ ॥
मन इंद्रियन सँग रहा भुलाई ।
भोगन में सुख छिन छिन लेत ॥ २ ॥
इंद्री भोग रोग सम जानो ।
इन का सँग तज चित से चेत ॥ ३ ॥

१—मिल । २—फ़ौज । ३—काल के मैल । ४—प्रेम ।

घट में निस दिन करो कमाई ।
सुरत शब्द सँग मन को रेत[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
श्याम तजत पद पावे सेत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

चरन गुरू मनुआँ काहे न दीन ॥टेक॥
जग सँग रह क्या करी कमाई ।
जीव काज कोइ जतन[2] न कीन ॥ १ ॥
धन सम्पत सँग रहा अभिमानी ।
पुन्न और पाप भार[3] सिर लीन ॥ २ ॥
सोच करो और समझ सम्हारो ।
सरन गहो गुरू होय अधीन ॥ ३ ॥
धुन की धार पकड़ निज घट में ।
सुरत चढ़ावो जस जल मीन[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सतपुर जाय सुनो धुन बीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

जगत सँग मनुआँ सदा मलीन ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद[5] नित भरमावें ।
कुमत साथ करे किरत[6] कमीन[7] ॥ १ ॥

१—रगड़ । २—उपाय । ३—बोझ । ४—मछली । ५—अहंकार । ६—कारवाई । ७—नीच ।

तिरिया[1] सुत धन मोह फँसाना ।
जगत बड़ाई में चित दीन ॥ २ ॥
भोगन में रहे सदा अधीना ।
निज करता की सुद्ध न लीन ॥ ३ ॥
अपनी मौत की याद न लावे ।
पाप पुन्न में भेद[2] न कीन ॥ ४ ॥
फल पावे नित दुख सुख भोगे ।
घर जाने की बाट[3] न चीन[4] ॥ ५ ॥
सतगुरु खोज भेद ले घर का ।
जुगत कमावो धार यक़ीन ॥ ६ ॥
प्रेम अंग ले लागो घट में ।
सुरत चढ़ा पियो सार अमी ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
भौसागर से सहज तरीन[5] ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सरन गुरु प्रानी क्यों नहिं ले ॥टेक॥
माया सँग रहा बहुत भुलाना ।
सतसँग में अब चित दे रे ॥ १ ॥
भाव सहित गुरु सेवा धारो ।
चरनन में तन मन धन दे ॥ २ ॥

१—स्त्री । २—फ़र्क़ । ३—रास्ता । ४—पहचानता । ५—पार हो जाओ ।

सतगुरु रूप ध्यान हिये धारो ।
छिन छिन दूर हटो जग से ॥ ३ ॥
शब्द संग सुत गगन चढ़ावो ।
दाग़ छुटें तब कल[१] मल के ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से लें अपनाई ।
पार उतारें भौजल से ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

चरन गुरु हिये में रही बसाय ॥ टेक ॥
जग की आस बासना त्यागी ।
सतसंगत में रही चित लाय ॥ १ ॥
गुरु के बचन अमी की धारा ।
उमँग सहित नित पियत अघाय ॥ २ ॥
शब्द संग नित करत अभ्यासा ।
रस पावत सुत अधर चढ़ाय ॥ ३ ॥
दया मेहर कुछ बरनी न जाई ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमा किस बिधि[२] गाऊँ ।
मुझ अनाथ को लिया अपनाय ॥ ५ ॥

१—काल के । २—तरह ।

॥ शब्द १० ॥

दरस गुरु निस दिन करना सही ॥टेक॥
जो तन से गुरु संग न पावे।
ध्यान धार चित चरन पई[1] ॥ १ ॥
निरमल होय चित गुरु रँग भींजे।
घट में नित आनंद लई ॥ २ ॥
मन और सुरत उमँग कर घट में।
चढ़त अधर धुन डोर गही ॥ ३ ॥
अस गुरु दया परख कर घट में।
जागी प्रीति प्रतीति नई ॥ ४ ॥
राधास्वामी परम गुरू सुखदाता।
निज चरनन की सरन दई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

चरन गुरु मनुआँ हो जावो दीन ॥टेक॥
भोगन में क्यों उमर गँवाता।
बल पौरुष नित होते छीन[2] ॥ १ ॥
बिन गुरु चरन ठिकाना नाहीं।
माया सँग नित रहत मलीन[3] ॥ २ ॥
छोड़ उपाध[4] रलो[5] सतसँग में।
चरन पकड़ सतगुरू परबीन[6] ॥ ३ ॥

१—डालो, लगाओ। २—क्षीण, नाश। ३—मैला। ४—शरारत। ५—मिलो।
६—प्रवीण, चतुर।

गुरू दयाल जो दया बिचारें।
निरमल करें मन सुरत अलीन[1] ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे अधर चढ़ावें।
राधास्वामी चरनन जाय बसीन[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

ध्यान गुरू हिये में धरना ज़रूर ॥ टेक ॥
मन और सुरत सिमट रस पावें।
देख रही सत नूर[3] ॥ १ ॥
नभ की ओर चढ़त सुत बिरहन।
बाजे जहाँ नित अनहद तूर[4] ॥ २ ॥
करम धरम सब भरम पसारा।
देखा जग परमारथ कूड़[5] ॥ ३ ॥
दया हुई काटा जम जाला।
निरभय हुआ घट में मन सूर[6] ॥ ४ ॥
चरन सरन गह बैठी सूरत।
राधास्वामी कीना कारज पूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

धार नर देह किया क्या आय ॥ टेक ॥
सत करतार का मरम न चीन्हा।
मन माया सँग रहा लिपटाय ॥ १ ॥

१—जो खराब हालत में हैं। २—बसे। ३—प्रकाश। ४—शब्द। ५—कूड़ा। ६—बहादुर।

धन और मान भोग आधीना ।
　कुटुम्ब संग नित प्यार बढ़ाय ॥ २ ॥
दुरलभ औसर बाद[1] गँवावत ।
　जीव काज की सुध नहिं लाय ॥ ३ ॥
भूल भरम तज चेत पियारे ।
　सतसँग करो नित्त तुम आय ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन गह अबकी ।
　जस तस अपना काज बनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

आज गुरू सतसँग क्यों न करे ॥ टेक ॥
नर देह पाय रहे क्यों भूला ।
　बचन चित्त में क्यों न धरे ॥ १ ॥
सरन धार कर शब्द अभ्यासा ।
　भौसागर से आज तरे ॥ २ ॥
मन इंद्रियन सँग सहजहि छूटे ।
　माया ममता सकल जरे ॥ ३ ॥
घट में निरखे बिमल बिलासा ।
　शब्द डोर गह सुरत चढ़े ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया भरोस हिये धर ।
　पिंड ब्रह्मंड के पार पड़े ॥ ५ ॥

१—फ़ज़ूल ।

॥ शब्द १५ ॥

आज मन मित्रा भक्ति कमाय ॥ टेक ॥
जगत संग कुछ लाभ न पावे ।
दुख सुख में क्यों बैस[1] बिताय[2] ॥ १ ॥
अटक भटक तज कर गुरु संगा ।
बचन सुनो उन चित दे आय ॥ २ ॥
स्वारथ के संगी सब जानो ।
गुरु सम हितकारी नहिं पाय ॥ ३ ॥
घर की राह जुगत चलने की ।
मेहर से दें तोहि भेद जनाय ॥ ४ ॥
सुन उन बचन मान उन कहना ।
घट में धुन सँग सुरत लगाय ॥ ५ ॥
चरन सरन गह पार सिधारो ।
राधास्वामी २ निस दिन गाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

बचन गुरु मनुआँ लो आज मान ॥टेक॥
संसारी जीवन का सँग कर ।
क्यों तू गुरु से धरता मान ॥ १ ॥
जो तू प्यारे मान न छोड़े ।
परमारथ की होवे हान ॥ २ ॥

१—उम्र । २—बरबाद करता है ।

याते चेतो समझो भाई ।
　दीन होय गुरु सन्मुख आन ॥ ३ ॥
दया करें निज बचन सुनावें ।
　हिये में प्रीति प्रतीति बसान ॥ ४ ॥
जुगत बता अभ्यास करावें ।
　घट में धुन सँग सुरत लगान ॥ ५ ॥
चरन सरन दे अधर चढ़ावें ।
　राधास्वामी चरनन जाय समान ॥ ६ ॥

॥ शब्द १७ ॥

सुरत मेरी गुरु सँग हुई निहाल[1] ॥ टेक ॥
प्रीति प्रतीति दई चरनन में ।
　गुरु ने लिया मोहि आप सम्हाल ॥ १ ॥
कर सतसंग बुद्धि हुई निरमल ।
　कर्म भर्म दिये आज निकाल ॥ २ ॥
उमँग सहित लागूँ घट धुन में ।
　ध्याऊँ सतगुरु रूप बिशाल[2] ॥ ३ ॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ ।
　हार रहा अब काल कराल[3] ॥ ४ ॥
घट में निरखूँ बिमल बिलासा ।
　बचन सनूँ नित अजब रसाल[4] ॥ ५ ॥

१—कृतार्थ । २—भव्य, सुंदर । ३—भयंकर । ४—रसीले

चरन सरन गह हो गई निचिंती[1]।
राधास्वामी प्यारे हुए दयाल ॥ ६ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सजन सँग मनुआँ कर आज प्रीत ॥टेक॥
छोड़ कुसंग करो सतसंगा।
भक्ति भाव की धारो रीत ॥ १ ॥
गुरु सँग निस दिन नेह[2] बढ़ावो।
बचन सुनो हिये धर परतीत ॥ २ ॥
उमँग सहित कर घट अभ्यासा।
शब्द पकड़ घर जावो मीत[3] ॥ ३ ॥
गुरु बल धार हिये में अपने।
काल करम की तोड़ो नीत[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावें।
जावो निज घर भौजल जीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

आज चलो मनुआँ घर की ओर ॥टेक॥
निज घर का ले भेद गुरू से।
जल्दी चालो घट में दौड़ ॥ १ ॥
तन मन इंद्री सुरत समेटो।
भोगन से अब नाता[5] तोड़ ॥ २ ॥

१—बेफ़िक्र। २—प्रेम। ३—मित्र। ४—हिकमत, प्रधानता। ५—संबंध।

धर परतीत धरो गुरु ध्याना ।
काल करम का टूटे ज़ोर ॥ ३ ॥
मन और सूरत अधर चढ़ावो ।
शब्दन का जहाँ हो रहा शोर ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समावो ।
घट के सबही परदे फोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

जगत भय लज्या तज देव मीत[1] ॥टेक॥
कपट छोड़ कर सतसँग गुरु का ।
धारो मन में गुरु की नीत[2] ॥ १ ॥
जग जीवन सँग हेत न करना ।
गुरु चरनन में लावो प्रीत ॥ २ ॥
चरन सरन गह जुगत कमावो ।
राधास्वामी की धर हिये परतीत ॥३॥
प्रेमी जन से हेल मेल कर ।
सीखो भक्ती ढँग और रीत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु आरत[3] धारो ।
राधास्वामी चरन बसाओ चीत ॥ ५ ॥

१—मित्र । २—मुख्यता। ३—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं० ३ ।

॥ शब्द २१ ॥

हाल जग देखो दृष्टी खोल ॥ टेक ॥

सब जग जात चला छिन छिन में ।
कोई बस्तु यहाँ नहीं अडोल ॥ १ ॥

याते निज घर बाट[1] सम्हालो ।
सुन सुन घट में अनहद बोल ॥ २ ॥

गुरु से भेद राह का पावो ।
चलने की लो जुगत अमोल ॥ ३ ॥

प्रेम अंग ले सुरत चढ़ावो ।
माया को अब डालो रोल[2] ॥ ४ ॥

राधास्वामी सरन धार अब मन में ।
सहज चलो धुर धाम अबोल[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

जाँच कर त्यागो भोग असार ॥ टेक ॥

माया ने सब भोग रचाये ।
अमृत संग मिलाया खार[4] ॥ १ ॥

जीव अजान फँसे आय उन में ।
फिर फिर भरमें जग की लार[5] ॥ २ ॥

बिमल प्रेम रस चाखा चाहो ।
सतगुरु संग करो धर प्यार ॥ ३ ॥

१—रास्ता । २—डालो रोल—मसल डालो । ३—अवर्णनीय । ४—क्षार, राख । ५—साथ ।

शब्द जुगत ले सुरत चढ़ावो ।
मन इंद्रियन को रोको झाड़[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीनदयाल मेहर से ।
सहज उतारें भौजल पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

सुरत गुरु चरनन आन धरी ॥ टेक ॥
दुखी होय हट कर या जग से ।
गुरु सतसँग में आन अड़ी ॥ १ ॥
मगन होय धारी गुरु जुगती ।
तीसर तिल में सुरत भरी[2] ॥ २ ॥
शब्द संग नित करे बिलासा ।
करम भरम से आज टरी[3] ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त गुरु चरनन ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि अब कीन्ही ।
चरन सरन गह आज तरी[4] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

परख कर छोड़ो माया धार ॥ टेक ॥
भोगन का इन जाल बिछाया ।
जीव बहे सब उन की लार[5] ॥ १ ॥

१—अच्छी तरह । २—प्रवेश की । ३—हटी । ४—पार गई । ५—साथ ।

बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे ।
उनकी ओटा[1] गहो सम्हार ॥ २ ॥
सतसँग कर धारो उन ध्याना ।
हिरदे में उन रूप निहार ॥ ३ ॥
पुष्ट होय चालें मन सूरत ।
घट में सुन अनहद झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन अब हिये बसावो ।
मेहर से लेवें जीव उबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

गुरु सँग चलना घर की बाट[2] ॥ टेक ॥
बिन सतगुरु कोइ पार न जावे ।
भौसागर का चौड़ा फाट ॥ १ ॥
बचन सुनो उन समझ सम्हारो ।
करम भरम सब जड़ से काट ॥ २ ॥
शब्द जुगत ले करो कमाई ।
तब छूटे यह औघट[3] घाट ॥ ३ ॥
ऐसा औसर फिर नहीं पावे ।
अब सौदा कर सतगुरु हाट[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया से सुरत चढ़ावें ।
खोलें घट का बज्र कपाट[5] ॥ ५ ॥

१—शरण । २—रास्ता । ३—विकट, कठिन । ४—बाज़ार । ५—दरवाज़े ।

॥ शब्द २६ ॥

छोड़ चल सजनी[1] माया धाम[2] ॥टेक॥
निज घर तेरा संत के देसा ।
भाग चलो तज क्रोध और काम ॥ १ ॥
संत चरन में धार पिरीती ।
भेद लेव उनसे निज नाम ॥ २ ॥
सुरत सम्हार सुनो धुन घट में ।
पियो अमी रस जाम[3] ॥ ३ ॥
गुरु की दया ले अधर चढ़ावो ।
पहुँचो त्रिकुटी धाम ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से पार उतारें ।
निज घर में देवें बिस्राम ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

गुरू सँग प्रीति करो मेरे बीर[4] ॥ टेक ॥
निज घर भेद गुरू बतलावें ।
बाट चलो उन सँग धर धीर ॥ १ ॥
सुरत शब्द बिन जाय न पारा ।
और सकल झूठी तदबीर ॥ २ ॥
धर परतीत कमावो जुगती ।
दूर हटे तब तन मन पीर[5] ॥ ३ ॥

१—सखी । २—देश । ३—प्याला । ४—भाई । ५—पीड़ा, कष्ट ।

सुन सुन धुन स्रुत अधर सिधारे[1]।
पहुँचे जाय सरोवर तीर ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया गई सतपुर में।
पाया पद अति गहिर गँभीर ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

भाव सँग गुरु दर्शन कीजे ॥ टेक ॥
जो मन में रहे कपट समाना।
प्रेम रंग नहिं सुर्त भींजे ॥ १ ॥
काम त्याग सत भक्ति कमावो।
प्रेम दान गुरु से लीजे ॥ २ ॥
मन और सुरत चढ़ें असमाना।
माया बल छिन छिन छीजे[2] ॥ ३ ॥
गुरु की मेहर परख हिये अंतर।
चरनन में तन मन दीजे ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम की सोभा भारी।
निरख निरख सूरत रीझे[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

प्रीति सँग गुरु सेवा धारो ॥ टेक ॥
अचरज भाग जगा गुरु भेंटे।
चरनन पर तन मन वारो ॥ १ ॥

१—जावे। २—नाश होवे। ३—प्रसन्न होवे।

बचन सुनो और दरस निहारो ।
करम भरम सबही टारो[1] ॥ २ ॥
प्रीति सहित गुरु ध्यान सम्हारो ।
घट में लो आनँद भारो ॥ ३ ॥
शब्द संग सुर्त गगन चढ़ावो ।
काल जाल छिन में जारो ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर छिन २ में ।
उतर जाव भौजल पारो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

भाव सँग पकड़ गुरू चरना ॥ टेक ॥
काल करम तोहि नित भरमावें ।
छुटे न चौरासी[2] फिरना ॥ १ ॥
अब के दाव[3] पड़ा तेरा सजनी ।
भटक छोड़ गह गुरू सरना ॥ २ ॥
गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें ।
सुन सुन धुन घट में चढ़ना ॥ ३ ॥
घंटा संख सुने जाय नभ में ।
वहाँ से सुरत गगन भरना ॥ ४ ॥
सतगुरू दया गई दस द्वारे ।
हंसन संग केल[4] करना ॥ ५ ॥

१—हटाओ । २—जन्म मरण में । ३—मौका । ४—बिलास ।

सत्तपुरुष का दर्शन करके।
राधास्वामी चरन सुरत धरना ॥ ६॥

॥ शब्द ३१ ॥

प्रीति सँग गहो गुरू सरना ॥ टेक ॥
या जग में कोइ मीत न तेरा।
सकल संग चित से तजना ॥ १ ॥
बुधि बिचार सब धोखा जानो।
मन इंद्री सँग दुख सहना ॥ २ ॥
सतगुरू हैं सच्चे हितकारी।
उन सँग भौसागर तरना ॥ ३ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा।
मन और सुरत अधर[1] भरना[2] ॥४॥
गुरू सतगुरू पद परस उमँग कर।
राधास्वामी चरन सीस धरना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

प्रेम बिन चले न घर की चाल ॥ टेक ॥
सतसँग करे समझ तब आवे।
गुरू चरनन में प्रीति सम्हाल ॥१॥
गुरू भक्ती की रीत सम्हारे।
छोड़े जग की चाल और ढाल ॥२॥

१—अंतर में। २—प्रवेश करना।

गुरु स्वरूप का धारे ध्याना ।
　शब्द सुने तज माया ख़्याल ॥ ३ ॥
घट में देखे बिमल प्रकाशा ।
　मगन होय सुन शब्द रसाल[1] ॥ ४ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़े तब दिन दिन ।
　पावे राधास्वामी दरस बिशाल[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

आज घट बरखा रिमझिम होत ॥ टेक ॥
प्रेम के मेघा छाय रहे ।
　धुनन का खुल गया भारी सोत ॥ १ ॥
सुरत मन भींजत हुए निहाल ।
　लखा उजियारा जगमग जोत ॥ २ ॥
गगन धुन सुन सुर्त चली आगे ।
　गगन में जाय मैल मन धोत[3] ॥ ३ ॥
काल अब थक रहा करत पुकार ।
　रही अब माया सिर धुन रोत ॥ ४ ॥
करी मोपै राधास्वामी दया अपार ।
　सुरत अब सत्त शब्द सँग पोत[4] ॥ ५ ॥

१—रसीला । २—सुंदर । ३—धोती है । ४—पिरोती है ।

॥ शब्द ३४ ॥

मान[1] तज प्यारी गुरु से मिल ॥ टेक ॥
दीन होय गिर गुरु चरनन में ।
शब्द भेद ले झाँको तिल[2] ॥ १ ॥
सेवा कर हिये प्रेम बढ़ावो ।
जग से मोड़ लगावो दिल ॥ २ ॥
दरस पाय सुर्त अधर चढ़ावो ।
गुरु बल तोड़ चलो सिल सिल ॥ ३ ॥
काल करम का बल सब टूटे ।
माया की छूटे किल किल[3] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
पहुँचावें तोहि धुर मंज़िल[4] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

द्वार घट झाँको बिरह जगाय ॥ टेक ॥
यह तो देस बिगाना[5] जानो ।
निज घर की गई सुद्ध भुलाय ॥ १ ॥
मन इंद्री सँग तन में बँधिया ।
भोगन संग रही भरमाय ॥ २ ॥
काल पुरुष यह जाल बिछाया ।
जीव अनाड़ी[6] फाँस फँसाय ॥ ३ ॥

१—अहंकार। २—लगावो दिल—प्रेम करो। ३—किल किल—झंझट।
४—अंतिम स्थान। ५—पराया। ६—मूर्ख।

जो जिव संत सरन में आवें।
　उनको जम से लेहैं बचाय ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की सहज जुगत से।
　मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ५ ॥
द्वारा फोड़ पिंड के पारा।
　अंड ब्रह्मंड तोहि देहैं लखाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीनदयाल कृपाला।
　मेहर से निज घर दें पहुँचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

शब्द की झड़ियाँ लाग रहीं ॥ टेक ॥
सुनत घट बाजे अनेक प्रकार।
　सुरत मन इंद्री जाग रहीं ॥ १ ॥
दया गुरु मच रहा घट में शोर।
　अमी की बुँदियाँ बरस रहीं ॥ २ ॥
मगन होय सुरत अधर चढ़ती।
　बिघनियाँ[1] मग[2] से भाग गईं ॥ ३ ॥
मेहर से राधास्वामी दई यह दात।
　सखीं उन महिमा गाय रहीं ॥ ४ ॥

१—विघ्न। २—रास्ते।

॥ शब्द ३७ ॥

आज होली खेलो गुरु सँग आय ॥ टेक ॥

तन मन कुमकुम भर भर मारो ।
दृष्टी की पिचकार छुड़ाय ॥ १ ॥

प्रेम रंग निज घट में भर कर ।
गुरु चरनन पर देव छिड़काय ॥ २ ॥

अबीर गुलाल के बादल छाये ।
चहुँ दिस अचरज फाग रचाय ॥ ३ ॥

सब सखियाँ मिल आरत गावें ।
गुरु दरशन कर अति हरखाय ॥ ४ ॥

नई प्रीति और नई परतीती ।
राधास्वामी हिये में दई जगाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

खिला मेरे घट में आज बसंत ॥ टेक ॥

भाग मेरा अचरज जाग रहा ।
हुए अब परसन सतगुरु संत ॥ १ ॥

सुरत मन घट में दीन चढ़ाय ।
कँवल जहाँ खिल रहे आज अगिंत[1] ॥२॥

शब्द का निरखा घट परकाश ।
मधुर मधुर धुन बजत अनंत ॥ ३ ॥

१—अनगिनत ।

खेल रही हंसन सँग कर प्रीत।
सुरत हुई सुन में अभय अचित॥ ४॥
सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी चरनन जाय मिलंत॥ ५॥

॥ शब्द ३९ ॥

आज घट मेघा गरज रहे॥ टेक॥
सुन सुन धुन सुर्त उमँगत चाली।
बिघन वाहि[1] बिरथा[2] बरज[3] रहे॥ १॥
गुरू प्यारे मेरे पूरे सूरे[4]।
मग[5] में रक्षा करत रहे॥ २॥
काल करम और बैरी सारे।
भय से उनके लरज[6] रहे॥ ३॥
निरख दया सुर्त और सतसंगी।
चरन राधास्वामी परस[7] रहे॥ ४॥
राधास्वामी महिमा जिन नहिं जानी।
करम संग वे उलझ रहे॥ ५॥

॥ शब्द ४० ॥

आज घट दामिन[8] दमक रही॥ टेक॥
घंटा संख धूम अति डारी।
झिलमिल जोती चमक रही॥ १॥

१—उसको। २—फ़ज़ूल में। ३—रोक। ४—बहादुर। ५—रास्ते। ६—डर। ७—छू। ८—बिजली।

जिन घट भेद सार नहिं जाना ।
भोगन में वह अटक रही ॥ २ ॥
किरतम[1] देवा इष्ट सम्हारा ।
करम धरम में भटक रही ॥ ३ ॥
जो सुत चरन सरन में आई ।
धुन सँग घट में लटक रही ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन प्रीति हुई गहिरी ।
हिये में निस दिन खटक रही ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

हिलमिल गुरु सँग करो री पिरीती ॥टेक॥
उमँग उमँग सेवा कर निस दिन ।
धारो हिये में भक्ती रीती ॥ १ ॥
जाके मन दृढ़ गुरु बिस्वासा ।
काल करम को छिन में जीती ॥ २ ॥
याते चेत पड़ो गुरु चरनन ।
उमर जाय तेरी यों ही बीती ॥ ३ ॥
नर देही अब दुर्लभ पाई ।
बिन गुरु भक्ति जाय कर[2] रीती[3] ॥ ४ ॥
राधास्वामी परम पुरुष सुखदाता ।
सरन गहो उन धर परतीती ॥ ५ ॥

१—कृत्रिम, बनावटी । २—हाथ । ३—खाली ।

॥ शब्द ४२ ॥

शब्द सँग सूरत अधर चढ़ाय ॥टेक॥
गुरु की दया संग ले अपने ।
निज घर ओर चलो तुम आय ॥ १ ॥
नभ में जाय सुनो धुन घंटा ।
जोत रूप लख गगन समाय ॥ २ ॥
गुरु मूरत का दरशन करके ।
सुन में अक्षर रूप लखाय ॥ ३ ॥
मुरली सुन धुन बीन सम्हारो ।
सत्तपुरुष का दरशन पाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारो ।
धाम अनामी जाय समाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

ध्यान धर गुरु चरनन चित लाय ॥टेक॥
मन इंद्री सब भरम भुलाने ।
इन सँग क्यों तू धोखा खाय ॥ १ ॥
सतगुरु खोज करो उन संगत ।
बचन सार उन चित्त बसाय ॥ २ ॥
रूप अनूप[1] निरख उन हित से ।
बार बार दर्शन को धाय ॥ ३ ॥

१—अनुपम, अत्यंत सुंदर ।

शब्द भेद ले जुगत कमावो ।
धुन में मन और सुरत लगाय ॥ ४ ॥
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ावो ।
राधास्वामी मेहर से लें अपनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

सुनो धुन घट में सूरत जोड़ ॥टेक॥
गुरु चरनन में धार पिरीती ।
मन और इंद्री जग से मोड़ ॥ १ ॥
प्रेम भक्ति की रीत सम्हारो ।
करम धरम से नाता तोड़ ॥ २ ॥
बिरह उमँग ले घट में चालो ।
जोत रूप लख तिल को फोड़ ॥ ३ ॥
त्रिकुटी जाय सुनी अनहद धुन ।
सुन्न गई सँग मन का छोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मिली सोहं से ।
बीन सुनी सतपुर की ओर ॥ ५ ॥
मगन हुई सतगुरु दर्शन पाय ।
राधास्वामी रूप लखा चितचोर[1] ॥ ६ ॥

१—चित्त को आकर्षित करने वाला ।

॥ शब्द ४५ ॥

उमँग कर सुनो शब्द घट सार ॥ टेक ॥
यह धुन है धुर लोक की धारा ।
इसने रचन रचाई झार[1] ॥ १ ॥
अगम रूप और अलख सरूपा ।
सत्त रूप सत शब्द बिचार ॥ २ ॥
शब्द हुआ तिरलोकी कारन ।
शब्दहि घट घट करे पुकार ॥ ३ ॥
शब्द डोर धुर पद से लागी ।
शब्द पकड़ सुर्त जावे पार ॥ ४ ॥
शब्द भेद और जुगत चलन की ।
सतगुरु तोहि बतावें यार ॥ ५ ॥
याते खोज करो सतगुरु का ।
उन मिल कर अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सरन हिये धारो ।
पहुँचावें तोहि निज घर बार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

बिसारो मनुआँ जग की कार[2] ॥ टेक ॥
सारी बैस[3] बिताई जग में ।
बृद्ध[4] हुआ अब चेत गँवार ॥ १ ॥

१—सारी । २—काररवाई । ३—उम्र । ४—बुड्ढा ।

निज घर का ले भेद गुरू से ।
सुरत शब्द मत धारो सार ॥ २ ॥
मन इंद्रियन को फेर[1] जगत से ।
गुरू सरूप ध्याओ धर प्यार ॥ ३ ॥
घट में बाजे हर दम बाजें ।
उमँग सहित सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन गहो हित चित से ।
काज करें तेरा आज सँवार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

अचल घर सजनी सुध लीजे ॥ टेक ॥
या जग में नित दुख सुख सहना ।
गुरू मिल आज जतन कीजे ॥ १ ॥
सतसँग बचन सुनो चित देकर ।
उमँग उमँग तन मन दीजे ॥ २ ॥
सतगुरू मेहर परख फिर घट में ।
मन सूरत धुन रस भींजे ॥ ३ ॥
अधर चढ़ो खोलो बज्र किवाड़ा ।
शब्द अमी रस घट पीजे ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज सँवारें ।
काल करम बल सब छीजे[2] ॥ ५ ॥

१—हटा । २—नाश होवे ।

॥ शब्द ४८ ॥

चलो घर गुरु सँग बाँध कमर ॥ टेक ॥

सतसँग बचन हिये में धारो ।
घट में लग धुन डोर पकड़ ॥ १ ॥

सतगुरु दया संग ले अपने ।
सुरत चढ़ा दे गगन शिखर ॥ २ ॥

गुरु बल मन इंद्री को बस कर ।
काल करम को डाल रगड़ ॥ ३ ॥

मोह माया के बिघन अनेका ।
छोड़ जायँ सब तेरी डगर[1] ॥ ४ ॥

सत्त शब्द सुन चली सुर्त आगे ।
राधास्वामी चरन अब पकड़ जकड़ ॥५॥

॥ शब्द ४९ ॥

सुनो मन घट में गुरु बानी ॥ टेक ॥

समझ सतसँग के बचन अमोल ।
प्रीति गुरु चरनन में आनी ॥ १ ॥

शब्द का भेद जुगत लेकर ।
सुरत घट में धुन सँग तानी[2] ॥ २ ॥

चरन गुरु हिये में धर बिस्वास ।
सरन उन दृढ़ कर मन मानी ॥ ३ ॥

१—रास्ता । २—खींचो, चढ़ाओ ।

दया गुरु चढ़ी अधर सूरत ।
क्षीर[1] पिए घट में तज पानी ॥ ४ ॥
मेहर से दिया सतपुर बिस्राम ।
मिले गुरु राधास्वामी महा[2] दानी[3] ॥५॥

॥ शब्द ५० ॥

शब्द धुन सुनो त्याग मन काम[4] ॥टेक॥
जब लग चित भोगन में बहता ।
बसे न हिरदे नाम ॥ १ ॥
याते प्रीति धरो गुरु चरनन ।
मन इंद्रियन को राखो थाम[5] ॥ २ ॥
दया करें गुरु दें उपदेशा ।
धुन में सुरत लगावो ताम[6] ॥ ३ ॥
धर परतीत गहो गुरु सरना ।
घट में पिओ अमी रस जाम[7] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर बसे जाय सतपुर ।
जहाँ काल नहिं कृष्ण और राम ॥५॥

॥ शब्द ५१ ॥

खेल रही सूरत फाग नई ॥ टेक ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आये ।
राधास्वामी सरन पई ॥ १ ॥

१—दूध । २—बड़े । ३—बख़्शिश करने वाले । ४—कामना । ५—रोक कर । ६—तमाम, पूरी तरह से । ७—प्याला ।

चहुँ दिस धुन झनकार सुनावत ।
अमृत धारा बरस रही ॥ २ ॥
अबीर गुलाल रंग लिये हाथा ।
गुरु चरनन पर मलत रही ॥ ३ ॥
प्रेम भरी प्यारी सुरत रँगीली ।
राधास्वामी चरनन लिपट रही ॥ ४ ॥
आरत धार पड़ी चरनन में ।
राधास्वामी गोद बिठाय लई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

हिंडोला[1] झूले सुर्त प्यारी ॥ टेक ॥
सतसंगी सब हिलमिल झूलें ।
सुरत शब्द धारी ॥ १ ॥
राधास्वामी महिमा सब मिल गावें ।
चरन सरन वारी ॥ २ ॥
राधास्वामी दीनदयाल सबन पर ।
मेहर दृष्टि डारी ॥ ३ ॥
पूरा काज बना इक इक का ।
राधास्वामी चरनन बलिहारी ॥४॥

१—झूला ।

॥ शब्द ५३ ॥

सखी आज देखो बहार बसंत ॥टेक॥
चलो घर श्याम[1] धाम[2] पारा।
खिली जहाँ नित फुलवार बसंत ॥१॥
सखीं सब आरत गाय रहीं।
चरन में राधास्वामी पुरुष अचिंत ॥२॥
करत रहीं दरशन दृष्टी जोड़।
हरख रहीं लख २ शोभ[3] अनंत ॥३॥
अमी की धारा हुई जारी।
धुनन का घट में शोर मचंत ॥४॥
जो जिव जग से उबरा चाहें।
राधास्वामी नाम जपें निज मंत[4] ॥६॥

॥ शब्द ५४ ॥

सुरत आई उमँगत गुरु के पास ॥ टेक ॥
प्रीति सहित करती सतसंगा।
धर हिये में चरनन बिस्वास ॥ १ ॥
भोग बासना जग की त्यागी।
गुरु चरनन बिन और न आस ॥ २ ॥
बचन सुनत हिये बढ़त उमंगा।
सेव करत घट होत हुलास[5] ॥ ३ ॥

१—अंधकारमय। २—देश। ३—शोभा। ४—मंत्र। ५—हर्ष।

दरस रस मनुआँ छिन छिन लेत ।
शब्द सँग सुरत चढ़त आकाश ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी बरनी न जाय ।
दिया मोहि निज चरनन में बास ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सुरत हुई मगन दरस गुरु पाय ॥टेक॥
बचन सुन सीतल हुई मन में ।
भेद पाय सुर्त शब्द लगाय ॥ १ ॥
प्रीति बढ़ी सुन सुन धुन घट में ।
हिये में दृढ़ परतीत बसाय ॥ २ ॥
दया मेहर गुरु परखत छिन छिन ।
उमँग उमँग सेवा को धाय ॥ ३ ॥
हरख हरख सुर्त चढ़त अधर में ।
घंटा संख और गरज सुनाय ॥ ४ ॥
सारँग मुरली बीन बजावत ।
राधास्वामी सन्मुख आरत[1] गाय ॥५॥

॥ शब्द ५६ ॥

नाम रँग घट में लागा री ॥ टेक ॥
सुनत गुरु प्यारे के बचना ।
सोवता मनुआँ जागा री ॥ १ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३ नोट नं ३ ।

बढ़त गुरु चरनन में प्रीती।
तजत जग भोग और रागा[1] री॥ २॥
प्रेम अँग ले उपदेश सम्हार।
सुनत घट अनहद रागा[2] री॥ ३॥
मेहर गुरु चढ़त सुरत गगना।
देश माया का त्यागा री॥ ४॥
चरन में राधास्वामी पहुँची धाय।
जगा मेरा अचरज भागा री॥ ५॥

॥ शब्द ५७ ॥

तन मन धन से भक्ति करो री ॥टेक॥
कोरी भक्ति काम नहिं आवे।
याते हिये में प्रेम भरो री॥ १॥
परम पुरुष राधास्वामी चरनन में।
और सतसँग में प्रीति धरो री॥ २॥
दया करें गुरु भेद बतावें।
तब धुन सँग सुर्त अधर चढ़ो री॥ ३॥
दीन ग़रीबी धार हिये में।
उमँग उमँग गुरु चरन पड़ो री॥ ४॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी।
भौसागर से सहज तरो[3] री॥ ५॥

१—मोह। २—शब्द। ३—पार जाओ।

॥ प्रेम बहार-भाग तीसरा ॥

॥ शब्द १ ॥

छबीले[1] छबि लगे तोरी प्यारी ॥ टेक ॥
दर्शन कर मोहित हुई छिन में ।
मुखड़े पर मैं वारी ॥ १ ॥
अचरज दरस दिखाया मुझको ।
चरनन पर बलिहारी ॥ २ ॥
राधास्वामी अंग लगावो मेहर से ।
तन मन से कर न्यारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

रँगीले रँग देव चुनर हमारी ॥ टेक ॥
ऐसा रंग रँगो किरपा कर ।
जग से हो जाय न्यारी ॥ १ ॥
यह मन नित्त उपाध[2] उठावत ।
याको गढ़[3] लो सारी ॥ २ ॥
निरमल होय प्रेम रँग भींजे ।
जावे गगन अटारी ॥ ३ ॥
तुम्हरी दया होय जब भारी ।
सुरत अगम पग[4] धारी ॥ ४ ॥

१—शोभावाले । २—विघ्न । ३—ठीक कर लो । ४—पैर ।

राधास्वामी प्यारे मेहर करो अब ।
जल्दी लेव सुधारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

रसीले छोड़ो अमृत धारा ॥टेक॥
यह धारा दस द्वार से उठती ।
भींजे तन मन सारा ॥ १ ॥
यह धारा झनकार सुनावत ।
भिन्न भिन्न धुन न्यारा ॥ २ ॥
यह धारा बिन भाग न मिलती ।
पावे कोइ गुरू का प्यारा ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे हुए दयाला ।
मोहि लीना सरन सम्हारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

दयाला मोहि लीजे तारी ॥ टेक ॥
तुम्हरी दया की महिमा भारी ।
मैं हूँ पतित[1] अनाड़ी[2] ॥ १ ॥
जग में सारी बैस[3] बिताई ।
भरमत रहा उजाड़ी[4] ॥ २ ॥
मेहर करो मोहिं चरन लगावो ।
शब्द भेद देव सारी ॥ ३ ॥

१—नीच । २—मूर्ख । ३—उम्र । ४—वीराने में ।

तुम्हरी गत है अगम अपारा ।
छिन में कर दो पारी ॥ ४ ॥
मैं बल जाउँ चरन पर तुम्हरे ।
तन मन धन सब वारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु पूरे ।
लीना मोहि उबारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पियारे मेरे सतगुरु दाता ॥ टेक ॥
देखत रहूँ रूप मनभावन[1] ।
और न कोई सुहाता ॥ १ ॥
पावत रहूँ अमी परशादी ।
और नहीं कुछ भाता[2] ॥ २ ॥
चरन कँवल सेवत रहूँ निस दिन ।
और न कहीं मन जाता ॥ ३ ॥
गुन गाऊँ नित चरन धियाऊँ ।
और ख़्याल नहि लाता ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे बसें हिये में ।
और न चित्त समाता ॥ ५ ॥

१—सुंदर । २—अच्छा लगता ।

॥ शब्द ६ ॥

अनामी प्यारे राधास्वामी ॥ टेक ॥
गत मत तुम्हरी कोइ नहिं जाने ।
घट घट अंतरजामी ॥ १ ॥
देश तुम्हारा सबसे न्यारा ।
नहीं वहाँ कृष्ण न रामी ॥ २ ॥
महिमा तुम्हरी अतिसे[1] भारी ।
को कर सके बखानी ॥ ३ ॥
प्रेमी जन तुम चरन धियावें ।
जग से होय निहकामी[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी गुन गाऊँ मैं नित नित ।
मोहि लीना चरन मिलानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अनंता तेरी गत नहिं जानी ॥ टेक ॥
अपना भेद आप तुम गाया ।
संत रूप जग आनी ॥ १ ॥
वड़भागी जिन दर्शन पाये ।
चरनन में लिपटानी ॥ २ ॥
शब्द भेद दे लिया अपनाई ।
सूरत अधर चढ़ानी ॥ ३ ॥

१—अतिशय, बहुत । २—निष्काम ।

जिन तुम चरनन प्रीति न आनी[1] ।
जग में रहे अटकानी ॥ ४ ॥
मोपै दया करी राधास्वामी ।
दीना चरन ठिकानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

अडोला तेरी महिमा भारी ॥ टेक ॥
प्रेम सिंध[2] है रूप तुम्हारा ।
निज कर सोत और पोत कहा री ॥१॥
दया मेहर का वार न पारा ।
सबको खैंच मिला री ॥ २ ॥
धुन धधकार मौज से जारी ।
प्रेम दया की धार बहा री ॥ ३ ॥
अलख अगम का रूप सँवारा ।
सत्त रूप होय निज करतारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मौज अस धारी ।
सबके हैं निज मात पिता री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

अबोला तेरी लीला भारी ॥ टेक ॥
अंस दोय सतपुर से निकसीं ।
तिरलोकी उन लीन रचा री ॥ १ ॥

१—की । २—भंडार ।

माया काल धूम अति डारी ।
सब जिव लीन फँसा री ॥ २ ॥
राधास्वामी संत रूप धर आये ।
काल करम का ज़ोर घटा री ॥ ३ ॥
जिन जिन उनका बचन सम्हारा ।
उन जीवन को लीन छुड़ा री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का कर अभ्यासा ।
राधास्वामी सरन हिये बिच धारी ॥५॥

॥ शब्द १० ॥

आज गुरु आये जग तारन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥
रूप उन धारा मनभावन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १ ॥
लगे जो जीव चरनन से ।
छुटे वह करम भरमन से ॥
गही[१] सब शब्द की धारन[२] ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ २ ॥
किया सतसंग उन चित से ।
गही सतगुरु सरन हित से ।

१—ली । २—धारणा ।

मेहर से हो गये पावन[1] ।

अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ३ ॥

किया राधास्वामी उन अपना ।

दूर किया जगत में खपना[2] ॥

दई निज चरन में ठाऊँ[3] ।

अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ४ ॥

गाऊँ क्या महिमा राधास्वामी ।

कोई उन गत नहीं जानी ॥

दया का वार नहिं पारन[4] ।

अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

दरस गुरु भाग से मिलिया ।

ओहो हो हो अहा हा हा ॥

दया से संग में रलिया[5] ।

ओहो हो हो अहा हा हा ॥ १ ॥

दीन होय मेहर गुरु पाई ।

ओहो हो हो अहा हा हा ॥

शब्द का भेद दरसाई ।

ओहो हो हो अहा हा हा ॥ २ ॥

१—पवित्र । २—परेशान होना । ३—जगह । ४—पार । ५—हिल मिल गया ।

नाम का रंग घट लागा।
ओहो हो हो अहा हा हा ॥
प्रेम हिये में नया जागा।
ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ३ ॥
रूप गुरु लागा अति प्यारा।
ओहो हो हो अहा हा हा ॥
सुना घट शब्द झनकारा।
ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी क्या गाऊँ।
ओहो हो हो अहा हा हा ॥
चरन पर नित्त बल[1] जाऊँ।
ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

बचन सतगुरु सुने भारी।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १ ॥
भेद घट का मिला सारी।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ २ ॥
लगी धुन में सुरत प्यारी।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ३ ॥

१—निछावर

खिली पचरंग[1] फुलवारी ।
　　अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
जोत लख गगन गरजा री ।
　　अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ५ ॥
चंद्र और सूर परखा[2] री ।
　　अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
अमरपुर बीन झनकारी ।
　　अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
चरन राधास्वामी पर वारी ।
　　अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

अजब राधास्वामी मत न्यारा ।
　　ओहो हो हो अहा हा हा ॥ १ ॥
बहत जहाँ प्रेम की धारा ।
　　ओहो हो हो अहा हा हा ॥ २ ॥
चरन गुरु भाव धर प्यारा ।
　　ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ३ ॥
सुनत धुन शब्द झनकारा ।
　　ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ४ ॥

१—पाँच तत्त्वों के पाँच रंगों की । २—पहचाना ।

होत अस सहज निरबारा[१]।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ५ ॥
चढ़त सुर्त फोड़ दस द्वारा।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ६ ॥
गई सतपुर्ष दरबारा।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ७ ॥
मेहर हुई आगे पग[२] धारा।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ८ ॥
मिला राधास्वामी पद सारा।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मिले मोहि आज गुरु पूरे।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ १ ॥
बजन लागे घट अनहद तूरे[३]।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ २ ॥
मान मद मोह हुए चूरे।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ३ ॥
हुआ मन गुरु चरनन धूरे।
  ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ४ ॥

१—छुटकारा। २—पैर। ३—शब्द।

लखा अब घट में सत नूरे[1] ।
    ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ५ ॥
काल और कर्म रहे झूरे[2] ।
    ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ६ ॥
मेहर मोपै कीनी गुरु सूरे ।
    ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ७ ॥
मिला अब राधास्वामी पद मूरे[3] ।
    ओहो हो हो अहा हा हा ॥ ८ ॥

॥ शब्द १५ ॥

बढ़त सतसंग अब दिन दिन ।
    अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १ ॥
जीव बहु लागे अब तरनन ।
    अहा हा हा ओहो हो हो ॥ २ ॥
दया राधास्वामी क्या बरनन ।
    अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
पड़े जो जीव उन चरनन ।
    अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
छूट गया जन्म और मरनन ।
    अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ५ ॥

१—प्रकाश । २—झुरते । ३—मूल, आदि ।

परस गुरू पद हुए तारन ।

अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ५ ॥

सत्तपुर हंस गत धारन ।

अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ७ ॥

सरन में राधास्वामी निज धावन ।

अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ८ ॥

Printed by Dayalbagh Press, Dayalbagh